एक औरत की ज़िन्दगी

शुभा वर्मा

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मूल्य दस रुपये (10 00)

प्रथम संस्करण 1978 © शुभा वर्मा
EK AURAT KI ZINDAGI (Novel) by Shubha Verma

बाल्टी डोर कुए की जगत पर रखकर रत्ती नीचे की सीढिया पर बठ गई। सफेद कोरी धोती के काले किनार से झाकते उसके पैर आखिरी सीढी के किनारे उग आई दूब म उलझ गए एक जमाना था कि रत्ती को अपने पैरो पर नाज था। सौन्दय बघारत समय लोग मुह, नाक नक्श की बात करत हैं, रत्ती की सौन्दय रामायण परो से शुरू होती थी। रामायण की बात पैरो के साथ जोडने पर इग्रा हजार-हजार गालिया देती, रत्ती मुस्कराकर चुप रह जाती पहले ऐसा होता तो वह बात बढाती, इग्रा को छेडती, इग्रा उसे मारने दौडती तो अगूठा दिखाकर भाग जाती।

बचपन के साथ सारी बातें बीत गइ। सामने फैले लम्ब चौडे खेत, दाहिनी ओर चौने जी का तालाब, उसके एक ओर झखारता पीपल का सदिया पुराना पेड गाव के लोग कहते है इसपर बरह्म बाबा रहते है, रात गए खडाऊ की चटर-पटर कितना न सुनी है। नेपाल चाचा के पेंउदी बेर के पेड पर दो चुडैल रहती हैं, डर के मारे बच्चे नीचे गिरी बेर चुनने भी नही जाते, बेरें सडती-मुवती रहती हैं। रत्ती के बगीचे की परछत्ती इसी पेड के पास से गुजरती है। अपने अमरूद के इकलौत पेड पर चढकर रत्ती ने कितनी बार चुडैलो की सफेदी देखन की कोशिश की है इग्रा कहती हैं चुडैलो का कोई एक रग थोडे ही होता है वे तो घडी घडी रग बदलती हैं। द्वार के चबूतरे पर पिछल दो पुश्ता से खडा यह आमले का पेड भी तो वैसा ही है, न बूढा न जवान। इसके नीचे की झडी पतिया को चुन चुनकर रत्ती न कितने कितने खेल खेले हैं—इन्ही पतिया से गुडिया का झोपडीनुमा घर बना है, गुडिया के ब्याह मे इन पत्तियो ने पूरिया का काम किया है बारातिया के गले की मालाए भी ये पत्तिया बनी हैं आज भी गाव के बच्चे पत्तिया चुन ले जात हैं,

घेरे आज भी सहती सूखती हैं, कुछ बच्चे आज भी छिपकर सहन में घुस आते हैं, अमरूद पर चढ़कर शायद चुड़ैल को देखने की कोशिश करते हैं। इआ कहती हैं अमरूद चुनने आते हैं, रत्ती जानती है बच्चे-कसल अमरूदों से उन्हें कोई लेना देना नहीं। सहती-सूखती घेरों पर उनकी निगाह उलझती हैं और पेड़ के ऊपर की सफेद चुड़ैल को उनकी आंखें ढूंढ़ती रहती हैं।

कहीं कुछ भी तो नहीं बीता। रत्ती को सब कुछ बीता बीता क्या लगता है ? भविष्य की उम्मीद में वर्तमान अतीत बनता जा रहा है। मां ने आठ बेटियां सिर्फ एक बेटे की उम्मीद में पैदा कीं। यही उम्मीद दुनिया को मारती है। रघु कहता था, उम्मीद के सहारे दुनिया चलती है दुनिया तो चल रही है, कहां है रघु की उम्मीद ?

रत्ती किसी उम्मीद की तलाश में इधर-उधर देखती है। उसका ध्यान चारों ओर से भटककर अपने पीठ पीछे खड़े कुएं पर आ जाता है। यह कुआं गांव वाले इसे कोइरिया का इनार कहते हैं। पच्चीस घर ब्राह्मण, पांच घर कायस्थ, तीन घर कुर्मी काछी, बारह घर बढ़ई, लोहार नाई, दस घर चमार पासी कुल मिलाकर डेढ़ हजार की आबादी वाले उस रामपुर गांव में कोइरिया का यह इनार ही ऐसा है जिसका पानी बरफ जैसा ठंडा और अमृत जैसा मीठा है। जेठ-बैसाख में जब गांव भर के कुएं सूख जाते हैं तो बाल्टी, कलसा, घड़ा लेकर सारा गांव उलट पड़ता है इस कुएं पर।

इआ कहती हैं—यह कुआं भिखारी महतो के बाप दीना महतो ने अपने तरकारी के खेत सींचने के लिए गांव से हटकर खेतों के बीच में खुदवाया था। कई बरस तक तो लोगों ने इसका पानी चखा तक नहीं, खेत सींचे जाते रहे। यहां से वहां तक फले हुए खेतों में हरी हरी सब्जियां नजर आतीं—बैंगन, आलू, सोया, मथी, पालक मौसम बदलता तो भिंडी, तुरई लौकी, कुम्हड़ा । सब्जियां उगाना कोइरिया का खानदानी व्यवसाय है। भिखारी महतो के बाप दादे यही काम करते थे। भिखारी महतो को ही पता नहीं क्या शौक चर्राया, एक दिन कलकत्ता चल दिए। महतिन की आंखों में गंगा जमुना एक साथ उफन पड़ीं।

दीना महतो ने समझाया, मेरे रहत तू क्यो रोती है ससाला भाग गया तो भागने दे आज से तू ही मरा बेटा है। सारी जमीन जायदाद, घर बगीचा तेरे नाम करूगा।

महतिन ने आसू पोछ लिए। दा साल तक भिखारी महता ने कोई खोज खबर नही ली। तभी अचानक दीना महतो बीमार पड गए। हर आने-जाने वालो के हाथ खबर भेजी जाने लगी। कोई न कोई खबर भिखारी महतो तक पहुची होगी क्योकि डेढ महीने बीतते बीतते वह गाव आए, साथ मे एक बगालिन महतिन भी लाए। बडी महतिन के दिल पर जो भी बीती हो, छोटी को वह बडे आदर से अन्दर ले गई। घर म एक पत्ता भी नही खडका। गाववाले दग रह गए।

आज भी लोग बडी महतिन का लोहा मानते हैं—क्या पाए की औरत थी! सौत को तो उसने ऐसे अपना लिया जैसे मा जाई सगी बहन हो। घर की सुख शाति रही हो या बेटे बहू की सेवा। दीना महता जल्दी ही ठीक हो गए। भिखारी महतो सोचकर तो आए थे कि बाप की तबीयत सभलते ही महीना पन्द्रह दिन रहकर चले जाएगे, लेकिन बडी महतिन के स्नेह-सदभाव ने उन्हे बाध लिया।

चार पटटीदारा की उनकी हवेली मे पत्ता भी शायद ही खडकता। आदमियों म जितना मेल मिलाप, जितनी समझदारी थी औरतें भी उतनी ही हिली मिली थी। उस हवेली की जिन्दगी अपने आप मे भरी पूरी थी। गाव की बडी-बूढी कभी आगन मे आती तो बहुए हाथ भर का घूघट निकालकर बाहर आती पाव पर आचल थमा हाथ लगाकर माथे स छुआती, मचिया लाकर सामने रखती, इशारे से बठने का आग्रह करती और तब धीरे धीरे पाव दबाने लगती। दूधो नहाओ, पूतो फलो के आशीर्वाद फुहारा की तरह उनपर झरते। दीना महतो की हवेली का उदाहरण गाव भर की बडी बूढिया अपनी बेटी-बहुओ के सामन रखती और इन सबका श्रेय था बडी महतिन को।

एक सुबह सारे गाव मे तहलका मच गया। जिसको देखा वही कोइरिया के इनार की ओर भागा हुआ जा रहा था। हरे-भरे खेत पैरा तले रौंद दिए गए। चारा ओर सिर ही सिर दिखाई दे रहा था।

दरोगा जी का घोड़ा पाकड़ के पेड़ से बंधा था सिपाही इधर उधर बिखरे थे। कुछ लोगों से बात कर रहे थे, कुछ उमड़ती हुई भीड़ को अपने अपने घर जाने का आदेश दे रहे थे। सिर पर गमछा डाले दीना महतो कुएं की जगत पर उकड़ू बैठे थे। भिखारी महतो बाप के पीछे जगत से टिके नीचे खड़े थे। छोटी महतिन हाथ भर घूंघट काढ़े मद्धिम गति से विलाप कर रही थी। कुएं से निकाली गई, पानी में फूली बड़ी महतिन की मिट्टी लाश सामने पड़ी थी। हाथ की लाल-पीली चूड़ियां बुरी तरह धंस गई थीं। लाश पर एक चादर डाल दी गई थी जो कभी-कभी दरोगा आनेवाले हटाकर देखते और फिर वैसे ही डाल देते।

बड़ी महतिन की इकलौती बेटी केसर दीना महतो के गले में बांहें डाले ऐसे लिपटी थी जैसे उसमें अपनी जान ही न हो। कोई कुछ कहता, उसके भाग्य पर तरस खाता तो उसकी नन्ही बांहें और कस जातीं जैसे इन बांहों की गिरफ्त ढीली होते ही कोई उसे खींचकर चीर देगा। चेहरे के अनुपात से कई गुना बड़ी उसकी आंखें पलकों की आड़ में बंद थीं। उसका सिर दीना महतो के सीने पर छिपा हुआ था।

मामला कैसे रफा-दफा हुआ किसीको नहीं मालूम! दीना महतो के पास बड़ी जायदाद थी, भिखारी महतो बहुत-सा रुपया कमा कर लाए थे। बड़ी छोटी सभी बातें आई गई हो जाती हैं। यह बात भी आई गई हो गई। कुछ सवाल गांव की हवा में मंडराने लगे, अब भी मंड-राते हैं—बड़ी महतिन को क्या दुःख था, बड़ी महतिन ने ऐसा क्या किया वह खुद ही कुएं में कूदी या उसे ढकेल दिया गया कुछ लोग कहते हैं छुटकी बड़ी चालबाज है कामरूप—कामाख्या का जादू है इसके पास। इसीने कुछ कर दिया होगा गुण्डे लगाकर ढकेलवा दिया होगा। कुछ लोगों का विचार था सारा कारनामा भिखारी महतो का है। उसे डर था कि सारी जमीन जायदाद दीना महतो बड़ी के नाम पर दे न कर देंगे? उन्होंने तो कर ही दिया था। पटवारी को घूस देकर सारा कागज दुबारा बदला है चला कांटा निकल गया अब यह छैल छबीली बंगाले का जादू किसपर चलाएगी? एक बेटी है ब्याह दी जाएगी। बड़ी महतिन का नामोनिशान खत्म हो जाएगा। आज

भी गाव की औरतें फुरसत से बैठती है तो बडी महतिन की गाथा कही-सुनी जाती है।

बडी महतिन की बेटी केसर अब दो बच्चो की मा है। कभी कभी आती है, बडी हसमुख, बडी दिलेर। केसर जितनी सलोनी है उसका पति उतना ही सिकिट्टा है पर दोनो मे प्यार बहुत है। पति के नाम पर केसर की आखो मे एक खास चमक आ जाती है। कोई कहता है पति भी क्या मिला, इतनी सुघड बेटी को शिवजी का बाराती केसर की आखो की चमक गहरा जाती है। कहती है, 'चाची सुख चेहरे से नही दिल से मिलता है। आदमी का दिल अच्छा होना चाहिए।'

मा के मरने के साल भर बाद केसर का ब्याह हो गया था। तब वह ग्यारह साल की थी। मा की मौत के बारे मे उसने कभी किसीसे कुछ नही कहा। किसीने कुछ पूछा भी तो अपनी बडी बडी आखो से पूछने वाले का मुह ताकती रही। केसर किसीको क्या बताती, उसे नही मालूम उसकी मा कैसे मरी। तब भी नही मालूम था जब एक रात उसे अकेली छोडकर मा कही चली गई। दोनो ने रात का खाना साथ ही खाया था। साई साथ ही थी। मा ने उस रात भी उसे बदा बरागी की कहानी सुनाई थी। दूसरी सुबह जब बडी देर तक मा नही दिखाई पडी तो उसने नई मा से पूछा। बाप कही से निकलकर उसके पास आ गया। लाल लाल आखो से घूरता हुआ बोला, 'कही गई है आ जाएगी।' कामकाजी मा का घर से कही जाना नई बात नही थी लेकिन घटे दो घटे मे वह आ जाती थी। उस दिन जब दोपहर ढलने लगी तो केशर का मन मा के लिए फिर मचला, लेकिन दोबारा गोहार लगाने की उसकी हिम्मत नही पडी। बाप की लाल लाल आखें उसके सामने आकर फनने लगी। उसका दिल जोर-जोर से धडकने लगा। काले भुजग बाप को देखकर केसर बचपन मे पहले भी कइ बार चीख पडी थी। कुछ बडी हुई तो चीखना कम हुआ लेकिन मन का डर नही गया।

दोपहर बीती, शाम हुई। कई बार केसर का मन हुआ नई मा से कुछ पूछे लेकिन बाप साए की तरह मा के साथ डोलता रहा और केसर बाप के डर से पत्ते की तरह कापती रही। दो दिन घर मे सन्नाटा

छाया रहा। रोजाना के काम विधिवत चलते रहे, पटटीदारी मे कही पूछताछ भी नही हुई तब तीसरे दिन बडी महतिन की लाश कुए म तैरती पाई गई जब बात ताजी थी तब असलियत का पता नही चला। अब तो कितने ही साल बीत चुके हैं।

बडी महतिन के डूबने के बाद स कोइरिया का इनार मुतहा माना जाने लगा। गाव से बाहर, खेतो के बीच होने के कारण बहुत दिनो तक तो इसके पानी की मिठास लोग वैस ही नही जान पाए। रहट चलात समय एक आध बार मजदूरो ने हाथ मुह धोकर कुल्ला किया। शायद एक आध घूट पी भी लिया हो तब पानी की तासीर मालूम हुई। आनवाले कुछ महीनो म दीना महतो ने कुए म इटें चुनवा दी, बाहर पक्की जगत बनवा दी, चारा ओर से ऊची जगत तक पहुचन के लिए पाच पाच सीढिया बनवा दी। लेकिन इतनी दूर से पानी भरकर ले जाना भी बडी मेहनत का काम था। बहुत दिन तक लोग वस ही कत-राते रहे। और जब लोगा ने धीरे धीरे आना शुरू किया तब हसती खेलती एक जान चली गई।

कौन पिएगा इस कुए का पानी लोग कहने लगे। सामने चौबजी के तालाब के किनारे पीपल वाले बरह्म बाबा की परछाई पड गई होगी, वरना इतने ठडे, इतने मीठे पानी के इस इनार म ऐसी बात कसे होती! तरह तरह की बातें गाव म कही-सुनी जान लगी। भरी दोपहरी या अधेरा गए कोई उधर स गुजरता भी नही, पानी भरना तो दूर की बात है।

दीना महतो को यह बात बडी खटकी। हवेली के बाहर चारपाई डालकर बैठते तो आने जानवाले को रोककर बात करते हमारी बहू ने किसीका दिल कभी दुखाया नही था सबके सुख दु ख म समान रूप से खडी रही इतनी भली इतनी नेक औरत बडे नसीब म मिलती है हमारे घर की तो लक्ष्मी थी अब क्या मरकर अपजस लेगी बहू का गुणगान करते करते वह लोगो का कुए से पानी ले जाने की सलाह देत।

कितना तो पूजा पाठ करवाया उ होने। बडी महतिन का किरिया करम हुआ ता तीन सौ ब्राह्मण खिलाए गए। ग्यारह महीने बाद बरसी

हुई तो डेढ सौ ब्राह्मणो ने फिर खाया कितनी दान दक्षिणा दी गई लेकिन इस इनार का पाप नही कटा।

इग्रा कहती है कि एक साल गगा मइया उफन पडी। इतना पानी इतना पानी कि सारा गाव डूबने लगा। कुआ, पोखर, तालाब, सब जल मग्न हो गए। एक कोइरिया का इनार ही था जो नही डूबा। लट्ठो को बाध-बाधकर कितने बडे बनाए गए, कितनी पुरानी नावो को ठोक-पीटकर ठीक किया गया। ऊची ऊची परती पर बसे हुए रामपुर गाव के निचले गली कूचो मे नावें चलने लगी। जल के प्रकोप से आदमी भयभीत हो गया। बडा भय छोट भय को पी गया। गाव की बडी बूढिया नावो म बैठकर गगा मइया के गीत गाती इसी कुए पर आने लगी। कुए की इसी जगत से सभौतिया जलाकर बाढ के पानी मे बहा दी जाती। पत्तो के दोनो म जलाई गई घी कपूर की बाती लहरो पर थिरकते हुए लोप होती रहती। बडी बूढियो का सम्मिलित स्वर गूजता रहता, सब माथा रगडती 'हे गगा मइया, किरपा करो, गाववाले सब नादान हैं—माता उनका धरम बचाओ उनकी रक्षा करो।' सात दिन बाद पानी उतरना शुरू हुआ। गाववाले धन्य हो गए। खेता म खडी फसल नष्ट हो गई, लेकिन गाव डूबते डूबते बच गया। जान है तो जहान है, फसल फिर उगगी, गगा मइया अपने साथ लाई मिटटी नही सोना छोड गई थी। रामपुर गाव इतना दरिद्र नही कि एक फसल मारी गई तो भूखो मरन की नौबत आ जाए।

उन सात दिना न कोइरिया के इनार को फिर से पवित्र कर दिया बाढ के मटमैले पानी से कपडे धोए जा सकत थे, बतन धुल सकत थे, बहुत हुआ तो नहाया धोया जा सकता था, मैला तरता हुआ वह पानी पिया कसे जाता? आग म तपकर ही सोना खरा उतरता है, बाढ की आग मे तप कर कोइरिया का इनार खरा उतरा। बाढ का पानी उतरने के बाद यहा एक भोज हुआ। बडे-छोटे सब शामिल हुए। इसी इनार के पानी मे खाना बना। इसी इनार का पानी पिया गया। तब से इसका हुक्का पानी खुल गया।

कहानिया आज भी गाव मे बडी दिलचस्पी से कही-सुनी जाती हैं।

गाववाला न बडी महतिन का भूत इन्ही सीढियो से उतरते देखा है—चौडे लाल पाढ की उजली साडी, माथे तक खिंचा हुआ पल्लू, काजल-भरी बडी बडी आखो के बीच माथे पर कुकुम की लाली बडी बिंदी, हाथा म भरी भरी लाल पीली चूडिया । लोग कहते हैं महतिन सीढियो स उतरकर खेता मे देर तक घूमती रहती है । कभी अपन घर की ओर जाती दिखाई पडती है कभी अपने घर का ताला खोलती रहती है, कभी झुककर नीचे से कुछ उठाती है और फिर वापस आकर इसी कुए म समा जाती है । भूतनाथ तेल की खुशबू तब वातावरण म चारा ओर फैली रहती है ।

ऐसी ही खुशबू केसर के बदन से भी आती है । एक बार किसीने पूछा कि कौन सा इत्र है तो केसर हस पडी इत्र नही भौजी, भूतनाथ तेल है । मा को यह तेल बहुत पसन्द था । नानी हर साल भेजती थीं मा के लिए । अब मामा भेजता है मेरे लिए ।'

रत्ती को नही मालूम भूत प्रेत कुछ हाता है या नही । भूत को नाथने वाला कोई तल भी रत्ती ने आज तक नही सूघा किसी तेल वाले के यहा देखा भी नही । लेकिन जब भी वह यहा आकर बैठती है एक खास तरह की खुशबू हवा मे तैरने लगती है । उसे लगता है यह खुशबू भूतनाथ तेल की ही होगी । बडी महतिन की आत्मा यही कही घूम रही होगी, हो सकता है कभी दिखाई भी पड जाए कुअर टोली की मझली चाची की तरह

बचपन म एक बार रत्ती नाइन को बुलाने जा रही थी । शाम का झुटपुटा था । कुअर चाचा की चहारदीवारी के साथ साथ नाइन के घर की गली गुजरती थी । मुश्किल से दो गज की दूरी उसने पार की हागी कि एक लम्बी चौडी सफेद आकृति आकर एकदम स उसके सामन खडी हो गइ । रत्ती के मुह से एक चीख निकल गई, फिर उसे कुछ भी याद नही । आख खुली तो वह इमा की गाद म औंधे मुह पडी थी । दस दिन तक रत्ती बुखार म तपती रही, दवा दारू बकार साबित हुआ, कितने ओझा सोखा आए तब मझली चाची के भूत पर काबू पाया गया । मझली चाची का भूत रत्ती न उसके बाद फिर कभी नही देखा । पता नहीं वह

मूत था, या चोर था, या कमली बुआ का प्रेमी वेश बदलकर उनसे मिलने के फिराक में था। गाववालो ने नमक-मिर्च मिलाकर कुअर चाची के मूत को बदनाम किया। कितनी तो कहानिया गढी गइं। जितने दिन रत्ती बीमार रही, देवता पितर मनाए जाते रहे। ओझा सोखा मूत को बाधने में लगे रहे। एक छौना दो बोतल ठर्रा कुअर चाची के मूत को दिया गया तब वह बंध पाया। रत्ती पर से उसकी छाया हट गई।

इस तरह की कहानिया गढकर फैलाने में ढकना आजी का कोई जवाब नही। इआ कहती है, 'इसके सामने मत पडा कर, पहुची हुई डायन है, इसका देखा आदमी पानी भी नही मागता।

रत्ती हस पडती है। उसके पास दिखाने को ऐसा क्या है जिसपर ढकना आजी की नजर पडेगी। पहले भी क्या था। सच तो यह है कि ढकना आजी से उसे डर कभी नही लगा। लोग कहते हैं ढकना आजी हर ग्रहण की रात कोइरिया के इस इनार पर आती है। परली ओर बकाइन की झाड के नीचे उन्होने कई बच्चे मन्त्र से मारकर गाडे हैं। उस रात एक एक कर वह सबको जिलाती है सूप में रखकर पुचकारती हैं, खिलाती है, फिर एक एक को वही गाड देती हैं। तब तक नाचती रहती हैं जब तक उग्रग्रहण नही हो जाता। ढकना आजी के तन पर उस समय कोई कपडा नही होता। उनकी पीली पीली आखो से दिन दहाडे वैसे ही डर लगता है। रात के अधेरे में उनके नंग धडंग शरीर को देखने की हिम्मत किसमे हो सकती है। ग्रहण वाले दिन कोइरिया के इनार की ओर कोई नही जाता।

न जाने क्या रत्ती को ढकना आजी से डर कभी नही लगा। एक समय था जब वह अधेरे से डरती थी। लेकिन आज वह डर भय की सीमाए पार कर चुकी है।

सामने खेत की भुरभुरी मिट्टी में दो कौवे लडते हुए गिर पडे। रत्ती की निगाह मांस के उस लोथडे पर गई जो मिट्टी में सन चुका था। कौवे काव काव करते हुए एक दूसरे पर झपट रहे थे, एक-दूसरे को चोच मार रहे थे। खेत की इसी भुरभुरी मिट्टी में सनकर रत्ती का बचपन जवान हुआ है। बीज बोकर जब खेत की मिट्टी बराबर

कर नी जाती तब रत्ती उस कुरेदना शुरू करती । सबकी नजर बचाकर उसी मिटटी पर चलती उगली स कुरेद कुरेदकर दखती बीज कितनी गहराई म बोए गए हैं । इम्रा अचानक देख लेती तो दब पाव आकर उसकी बाह पकड लेती । वह हाथ पैर पटकती पीछे भागने की कोशिश करती फिर चीखते चिल्लाते इसी मिटटी म लोट जाती । जिस सीढी पर आज वह बठी है, उसीपर इम्रा उसे मलमलकर नहलाती । गर्मी के दिन होत तो पानी की छपछप म रत्ती का मजा आता । जिद करके भरी बाल्टी ऊपर डलवाती । जाडे हात ता बडी खुशामदा के बाद नहान को तैयार होती । इम्रा ऊपर स पानी डालती ता पानी सीढिया पर यूही बिखर जाता इम्रा तडप उठती । थोडी दूर खडी रत्ती पैर पटकती रहती । खेत की इस भुरभुरी मिटटी मे उसने कितनी ही बार इम्रा के धोए हुए कपडे फेंक दिए हैं । इम्रा के दौनान पर भाग भागकर उन्ह थका दिया है ।

कुए पर आती जाती औरतें कहती बटी का इतना बहकना ठीक नही इम्रा चाची नाथ कर रखिए नही ता किसी दिन

'किसी दिन क्या मुह काला कर लेगी, यही तो कहना चाहती हो । इम्रा पलटकर जवाब दती 'नाथकर रखो अपन जाया को । बडा च दन पात रहे है न । दूसरो के लिए कसक मबको होती है । अपना कोई नही देखता हमारी बेटी है हम दख लेंगे गाववाला की छाती क्या फटी जा रही है वटिया को नौ महीने कोख म नही रखा जाता क्या बेटिया का दरद नही होना गाव के दुलरुआ को क्या नही देखतीं । हथेली पर सरसो उगा रह हैं । हम देखते रहन हैं सब । कुछ छिपा थोडे ही है । गाव भर के बटा स हमारी बेटिया अच्छी हैं । बच्चा है अक्ल ही कितनी है चल बटी रत्ती । पोता न खिला पाने के दुर्भाग्य की भडास निकालने का इम्रा को एक मौका मिल जाता ।

इस बीच खिसककर रत्ती इम्रा के पास आ चुकी होती । इम्रा का इस तरह किसीस उलझना उस अच्छा लगता । खास तौर पर इम्रा जब उसक लिए किसीस बैर मोल लेती । रत्ती अपना झगडा भूल जाती । इम्रा स आकर ऐसे चिपटती जैसे कभी खटकी ही न हो । नहाना होता

तो चुपचाप नहा लेती, धोए हुए कपड़े घर ले जाने के लिए उठा लेती। पगडण्डी पकड़कर सीधा इग्रा के पीछे पीछे चलने लगती।

कितनी घटना दुघटनाओं का साक्षी है यह कोइरिया का इनार। बेटी विदा होती है तो उसकी डोली रोककर पानी यहीं पिलाया जाता है। बहू आती है तो पहली आरती यहीं उतारी जाती है। कहार डोली रोककर खड़े हो जाते है। बरसीद मिलन से पहले मजाल है कि डोली का परदा हट जाए, फिर चाहे सिकुडी-सिमटी बहू कितनी ही देर अन्दर बैठी रहे। यहीं तो एक आस बधी रहती है मुह मागा इनाम पाने की। इसी इनार पर रेखा चाचा ने हरिहर भइया के सातो जवान बेटा का मार मारकर पटरा कर दिया था। खुद हरिहर भइया के तीन दात टूटकर गले मे अटके गए थे। रेखा चाची दर दर मनौतिया मानती फिरी थी, हे देवी, देवता, हरिहरवा की जान बचाओ, हम छौना देंग हे गगा मइया हम पियरी से पाट ओढारेंग। बात क्या थी? हरिहर भइया के किसी बेटे ने फूलदी को छेड दिया था बस खून की नदी बहन लगी। इसी सामने की मिट्टी मे लहू के कितने कतरे सूखे दोस्ती-दुश्मनी के कितने कदम उठे, कितने निशान छूटे फिर मिट गए।

खेत की भुरभुरी मिट्टी मे लड रहे कौवे कब के उड चुके थे। मिट्टी मे सना हुआ मास का लोथड़ा एक तीसरा कौवा ले गया था। अचानक रत्ती को याद आया इग्रा न उससे एक बाल्टी पानी मागा था। इस पानी से अरहर की दाल जल्दी गलती है। एक लम्बी सास कुछ टुकडा म बाटकर रत्ती खडी हो गई। पीछे पडा बाल्टी डोर कुए मे लटकाकर उसने झटके से रस्सी छोड दी। खडखड करती बाल्टी छपाक से पानी मे गिरी। तीन चार बार रस्सी ऊपर-नीचे करके रत्ती ने बाल्टी भरी फिर डोरी ऊपर खीचने लगी। खुशबू का एक झोंका उसके नथुनो के पास स गुजर गया वही भूतनाथ वाली खुशबू।

2

रत्ती दो महीने इम्मा के पास रहने आई है। इसके बाद उस बाई फसला लेना होगा। अगर खुद नही ले पाई तो दूसरा के लिए हुए फसले उसपर थोप दिए जाएगे। बेटी की मर्जी कौन पूछता है! बाबूजी की इस इज्जत अफजाई के लिए कई बार उसका मस्तक उनके सामने झुका है। काश, यह इज्जत उसे तब बख्शी गई होती जब उसके सामने भविष्य का एक खाका था, उसकी आखो म चद सपने थे और इन सबका एक सकेत बिन्दु था

आज वह एक चलती फिरती मशीन के सिवा क्या है? इम्मा उसे लेकर गगा नहाने जाती हैं तो चली जाती है। लौटते समय हर देवी देवता के द्वार खटखटाती हैं, वह पीछे बुत बनी खडी रहती है। सब स उसके लिए सदबुद्धि मागती हैं, उसका जी हस पडने को होता है। इम्मा बचपन स उसके लिए सदबुद्धि मागती आ रही हैं जब अब तक नही आई तो अब क्या आएगी! इम्मा की सभी बातें वह चुपचाप सुन लेती है। जब वह धार धार रो पडती हैं तब रत्ती काठ बन जाती है। उसके काठ बन जाने पर जब इम्मा माथा पीटती हैं तब वह हस पडती है। क्या करें? उसके दिल म जब कही कुछ व्यापता ही नही

इम्मा के साथ सात साल तक का गुजारा हुआ बचपन रत्ती की जिन्दगी की सबसे बडी नियामत है। इम्मा ने उस मारा है, चुन चुन कर गालिया दी है लेकिन कही कुछ है जो दोनो को एक साथ जोडता है। इम्मा की मार खाकर रत्ती के मन मे प्रतिहिसा कभी नही जागी। इम्मा की गालियो उनकी फटकारो से उसम सख्ती आ गई है। वह जानती है दुनिया मे सब कुछ रगीन नही होता। माता पिता दोनो के बदल अगर उसे सिर्फ इम्मा मिली होती तो रत्ती आराम से रहती। न आज की यह खलिश होती न कल का वह परायापन।

आज भी आखो मे सजीव है बचपन की व छोटी छोटी बातें। आखो के कोर अक्सर नम हो जाती हैं इम्मा को छेडने के कितने नुक्ते थे उसके पास! कुछ तो रोज के लिए तय थे रात बिस्तर पर जाते

ही रत्ती पैर पर चिल्लाना शुरू कर देती । उसका चिल्लाना तब तक चलता रहता जब तक इश्रा कटोरी मे तेल लेकर उसके परो की मालिश करन न आ जाती । एक पर की मालिश खत्म कर इश्रा जब दूसरा पैर पकडती तो रत्ती कहानी के लिए जिद करन लगती । इश्रा को रोज एक या दो कहानिया सुनानी पडती । सैकडो बार की सुनी हुइ उन कहानिया स रत्ती कभी नही ऊबी और इश्रा भी एक भरे हुए रिकाड की तरह चलती रही । कहानिया तो सभी बच्चे सुनत है, पैरो की मालिश पर मा अक्सर भल्ला पडती, 'क्यो आदत बिगाड रही है दुनिया के बच्चे खेलते है अनोखे की यही तो नही है लडकी की जात है रोज-रोज पैर दबवाने की आदत पड जाएगी तो बडी होकर क्या करेगी ?

इश्रा का जवाब हमेशा एक ही होता, दिन भर खेलती रहती है पैर दुख जाते होगे बडी होकर अपने आप समझ जाएगी ।'

ऐसी बात नही थी कि रत्ती बडी लाडली बेटी थी । खुद इश्रा ने ही बताया था कि जब वह पैदा हुई तो सभी पटटीदारी मे मातम मनाया गया था । दो लडकियो के बाद अक्सर लडके पैदा होते है । रत्ती जब पेट मे थी तो सोलह आने सबको उम्मीद थी अबकी लडका जरूर होगा । लकिन दौडी आई रत्ती । भगवान ने दाग दाग कर भेजा था । पीठ पर कितना बडा काला चकत्ता था । दस दिन बाद ही मा को सौरी से उठा दिया गया । हर बार बेटी पैदा करनेवाली बहू को कितना आराम दिया जाता । मा घर से काम काज मे लगी । दिन भर यू ही री री करने के लिए रत्ती छोड दी गई ।

रोते रोत रत्ती का गला बैठ जाता, गीले ग दे बिस्तर पर घटा पडी रहती । कार्तिक छठ, दूसरे अर्घ के दिन सुबह आठ बजे पैदा हुई रत्ती सूय पुत्री मानी गई थी इस बार भी बेटी होन पर बिलखती हुई इश्रा को लोगो न यही कहकर समझाया था । मा की ओर से वह पूरी तरह सूरज की किरनो के हवाले कर दी गई । दिन चढता, तेज धूप आगन मे उतरती, रत्ती खटोले पर पडी रोती चिल्लाती, सोती-जागती रहती । घर के कामा मे लगी मा का गुस्सा कम होता, ममता जागती तो पल-भर खटोले के पास बैठकर उसे दूध पिला देती कामो का सिलसिला

फिर शुरू हो जाता।

जाड़ा ऐसे ही बीत गया। उतरते चैत के महीने की बात है। रत्ती हमेशा की तरह अपने खटोले पर पड़ी थी। अब उसका चीखना चिल्लाना पहले से कम तो हो गया था। शायद इसी तरह पड़े रहने की अपनी नियति उसने कबूल कर ली थी। ढकना आजी आकर एक दिन उसके खटोले पर झुकी, कुछ मन ही मन बुदबुदाई फिर पलटकर मां पर बरस पड़ीं 'राम, राम, राम, किस हत्यारे की बेटी आई है घर में बच्चे को धूप में सुला सुलाकर मार डाला। देख तो इसकी चमड़ी कैसी झुलस गई है अरी कलमुही, चांद जैसी बेटी पैदा की थी, जला जलाकर कोयला कर दिया कहां ब्याहेगी? कौन पूछेगा इसे?' रत्ती को उठाकर उन्होंने मां की गोद में पटक दिया था फिर इआ से उलझ पड़ीं, 'क्यों रे कलूटी, बेटी का दरद कम होता है दस महीने कोख में उसे नहीं रखा जाता क्या हत्या करने पर तुली हुई है बहू अगर बेटी पैदा करती है तो इसमें बेटा भी तो कहीं दोसी है उसको क्या नहीं कहती कि बेटी पर बेटी बेसरमी से पैदा किए जा रहा है। बीज जब बेटी का देगा तो बहू बेटा कहां से लाएगी?'

ढकना आजी का धिक्कार हो या लोकलाज का डर, इआ रत्ती को चूमने चाटने लगी। रोती बिलबिलाती रत्ती के मुंह में अक्सर अपनी सूखी छाती पकड़ा देतीं। कितने दिन कितने सप्ताह, कितने महीने बीते। रत्ती इआ की गोद में पनाह पाने लगी। इआ की छातियों में ममता का सूखा हुआ स्रोत अजस्र धाराओं में फूट पड़ा। बेटे के इंतजार में हर दूसरे साल मां बेटियां पैदा करती रही। पोता खिलाने की ललक के बावजूद इआ सब से लड़ती झगड़ती रही, 'बिटिया कोई घूरे से उठाकर थोड़े ही आती हैं

खुद पर इआ के अतिरिक्त मोह का पता रत्ती को बहुत पहले चल गया था और इसका फायदा वह अक्सर उठा ले जाती। अगर उसे कटहल की सब्जी खानी है तो देर सबेर कभी भी इआ को बगीचे जाकर कटहल तुड़वा लाना पड़ता, कच्चा, पक्का, बतिया कैसा भी हो कटहल घर में जरूर बनना चाहिए। अगर उसे मिठाई खानी है तो बहू की नजर बचा-

कर इम्रा को वासरोपन हलवाई के यहा जाना ही पडता। नही तो रत्ती का मुह लाल हो जाता भूख प्यास मर जाती, पेट मे दद होन लगता, कुछ नही तो चिल्ला चिल्लाकर रोना ही शुरू हो जाता। इम्रा को सताने के तरीके रत्ती चुटकी बजाकर निकाल लेती। गगा नहान जात समय गगाजली छिपा देना, गगाजल स धुले धुलाए कपडो को जूठे हाथ मे छू देना, तुलसी चौरा पर रोटी का टुकडा डाल देना, बगैर नहाए धोए चदन घिसने लगना या रामनामी ओढ लेना ये उपाय दूर दूर से कारगर होनेवाले थे। नजदीक आकर इम्रा को चिढाने के तरीके भी उसके पास थे। झूठमूठ किसी के सिर मे जू निकालकर इम्रा के सिर मे डाल देने का नाटक, हालाकि बरसा पहले कुम्भ नहाकर अपना सिर उन्होने घुटवा लिया था और हर तीसरे चौथे महीने बाल जब खुजली पैदा करने लगत तो फिर घुटवा लेती। आचल खीचकर इम्रा का पल्लू सामने से हटा दना, सोती हुइ इम्रा के कान और नाक मे तिनके घुसेडना, कान के पास मुह ले जाकर जोर से 'कू' बोलकर भाग जाना, पानी का हाथ मुह पर छिडक देना

एक दिन तो रत्ती ने हद ही कर दी। उसने पहली रात इम्रा न रत्ती के साथ ज्यादती की थी। कितना मन था उसका सात भाइयो वाली राजकुमारी की कहानी सुनन का, और इम्रा थी कि नीद स उनकी आखें झपी जा रही थी। कहानी के हर दूसरे वाक्य पर उनकी जबान लड-खडाती। उस दिन चीखना चिल्लाना खतरनाक था, घर म मेहमान आए थे। रत्ती अपना गुस्सा जैस तस पी गई थी। दूसरे दिन दोपहर म खा पीकर सब लोग सो गए थे। सिलाई की टोकरी स धागे की रील रत्ती पहले ही उडा चुकी थी। साजधानी से उसने एक फदा बनाया। बुढापे का शरीर, इम्रा जम्पर या पटीकोट कभी नही पहनती। आचल सामने से खिसक गया था। रत्ती न इम्रा के स्तन की घुडी मे फदा फसाकर यथासम्भव कस दिया। धागे का दूसरा सिरा अपन हाथ म थामे वह दूर जा खडी हुई और वही से धागा ऐसे खीचन लगी जसे पतग उडा रही हो।

पहले तो इम्रा कुनमुनाइ। एक-दो बार हाथ सीने पर गया, झटके

से कुछ नोचकर फेंका जैसे बदन पर रेंगता हुआ कीटा नोच रही हो। रत्ती का खिंचाव बढता गया। जब पीडा असह्य हो गई तब इआ हड-बडाकर उठने लगी। उनका हाथ खिंचते हुए धागे मे उलझा। अधमुंदी आखे धागे के सहारे रत्ती तक पहुचकर एकदम खुल गइ। इआ के मुह से एक चीख निकल गई। रत्ती चौक पडी। उसने धागा छोड दिया। भागने के लिए उसके पैर उचके लेकिन इआ की चिर परिचित गालिया उसे दौडान नही निकली पल भर को उसकी समझ म नही आया कि वह क्या करे ? इआ की ओर डरते डरत उसने दखा तो होश उड गए। मटमैली आखो से मटठे की तरह आसू उफन रहे थे। स्तन की घुडी स टप टप लहू नीचे की धोती पर निशान बनाता सूखता जा रहा था।

रत्ती समझ गई मा आज मार-मारकर भुरता कर देगी। मा से किसी तरह जान बच भी गई क्योकि इआ मा की लडाई चल रही थी, हो सकता है इआ मा स कुछ न कह, लेकिन शाम को जब बाबूजी दफ्तर से आएग ? चार दिन के लिए तो बेचारी इआ आई थी सक्राति नहान। अनजाने ही रत्ती का हाथ अपने कानो पर चला गया। आज उसके काना की खैर नही। बाबूजी तो एक मिनट मे दोना क न उखाड लेंगे।

रत्ती का मन हुआ भाग जाए। कही ऐसी जगह जाकर छिप कि ढूढ ढूढकर लोग परेशान हो जाए लेकिन नही, बाद मे उसके मिलन पर सारी कसर निकाल ली जाएगी। रत्ती का अपराधी मन बार बार *उस कोडे लगाता रहा, वह वही खडी बुत बन गई।* इआ कितनी देर बैठी रही, कब आचल स मुह ढाप सो गइ उसे पता नही। रत्ती के परो मे बहुत देर बाद हरकत हुइ और लगा कि वह लडखडाकर गिर पडेगी। सामने चटाई पर निरीह पडी इआ का दखकर उसका मन रो पडने को हुआ वह अपनी जगह से हिली और इआ की पीठ से सटकर सो गई।

कितन साल हो गए इस बात को तेरह चौदह पन्द्रह हा, रत्ती *तब सात साल की थी। सक्राति नहाकर इआ गाव लौटने लगी तो उनके* साथ सब लोग चल पडे। बाबूजी ने बहुत दिन से छुट्टी नही ली थी,

पिछली बाढ मे बाबा वाले कमरे की नीव धसक गइ थी, उसके लिए कुछ करना था, कई बरसो से खपरलें फेरी नही गई थी, और भी कई छोटे छोटे काम थे। बाबूजी ने पूरे एक महीने की छुट्टी ली।

उन्ही छुट्टिया मे एक दिन रत्ती की पेशी हुई थी। बाबूजी पूछ रहे थे, वह उनके साथ अकेले इलाहाबाद चलेगी, मा अभी कुछ दिन गाव मे ही रहगी। रत्ती पूछना चाहती थी, इआ तो चलेंगी लेकिन वह अपलक आखो से कभी मा कभी बाप के चेहरे ढूढती रही। मा चित्त लेटी थी, बाबूजी पायतान बैठे थे। रत्ती जानती थी मा के पट की बढी हुई गोलाई किसी भी दिन सिमट जाएगी, फिर कें कें करता हुआ एक नन्हा सा जीव निकलेगा। लपक कर इआ चमाइन से पूछेंगी 'लछमी है गिरहतिन' चमाइन जवाब दगी फिर मुस्कती हुई मा को बोधेगी, 'राम का नाम लो छोटी गिरहतिन बटे-बेटी अपने बस की बात नही। ऊपर वाले की आख कभी तो खुलेगी। घर म मिजाजपुरसी के लिए आने वाला की भीड दिन भर घटती बढती रहेगी।

रत्ती को इन बाता मे कोई दिलचस्पी नही। बाबूजी मा स कह रहे थे, 'मैं अपनी बेटियो को पढाऊगा। पता नही किसकी तकदीर कैसी निकले। विद्या रहेगी तो एक रोटी की मोहताज ये नही रहेगी।'

'बदनामी होगी मा समझाने लगी, 'लोग कहेगे कि बेटा नही हुआ तो बेटियो को पढाकर शौक पूरा कर रहे हैं। पराए घर तो चली जाएगी, क्या होगा पढाकर ? '

'शादी-ब्याह मे आसानी रहेगी। दहेज नही देना पडेगा।

माता पिता की बातचीत की ओर रत्ती का ध्यान नही था। उसके दिमाग म कमला दीदी थी। पटना से आती हैं तो उनकी कितनी इज्जत होती है। राधा बुआ के बच्चे गाव मे इतराते फिरते है। कसे चमकीले तो उनके कपडे होते है। पता नही कैसी कैसी गालिया व खाते रहत हैं। रत्ती जानती थी कमला दीदी के पिता की तरह उसके बाबूजी ऊची आमदनी के बडे अफसर नही हैं। लेकिन दफ्तर का बाबू होना भी कोई छोटी बात नही। राधा बुआ के पति की तरह उसके बाबूजी की ऊपरी आमदनी नही है लेकिन बधी-बधाई तनख्वाह तो है। इआ कहती हैं

भगवान जितना दे उसी में खुश रहना चाहिए। पर मैं तो जैसे तैसे कपड़ों से गुजारा हो जाता है, स्कूल जाने लगेगी तो उसे भी साफ-सुथरे कपड़े मिलेंगे। राधा बुआ के बच्चों की तरह उसके कपड़े चमकीले न सही स्कूल में कोई चमकीले कपड़े पहनता है? राधा बुआ के बच्चों की तरह उसे भी शहरी गोलियां खाने को मिलेंगी। रोज न सही बाबूजी कभी तो कुछ लाएंगे नहीं लाएंगे तो वह थोड़े-से पैसे मांगकर खुद ही खरीद लेगी।

उसने बाबूजी के साथ अकेले इलाहाबाद जाने की हामी भर दी। उसे यही अपने पर फख्र भी हुआ कि जीती जागती कुल पांच बहनों में से पढ़ाने-लिखाने के लिए सब से पहले उसे ही चुना गया। निश्चिन्त पिता की उंगली पकड़े पीछे मुड़ मुड़कर देखती वह पिता के लम्बे डगों के साथ लगभग दौड़ती चली गई। कोइरिया के इनारे तक इया उसे छोड़ने आई थी। चलते समय उसके गाल चूम, दोनों हथेलियां थपथपाईं, ताकि वहां जाकर मन उचाट न हो। दो रुपया बाबूजी की नजर बचाकर उसकी नेकर की जेब में डाल दिया था।

बलिया जिला के एक गांव रामपुर से इलाहाबाद का सफर बड़ी उत्तेजना से कटा। रात भर रत्ती के मन में खुदुर-बुदुर होता रहा वह बाबूजी के साथ रहेगी, बाप-बेटी मिलकर खाना पकाएंगे लड़कों की तरह वह भी स्कूल जाएगी उसके पास साफ सुथरे कपड़े होंगे। गांव की मिठाइयां टिकरी, पटउरा ये भी कोई मिठाई है। इया छिपाती फिरती हैं। कभी गांव गई या इया खुद इलाहाबाद आई तो अपनी गोलियां दिखा दिखाकर खाएगी।

बाबूजी के साथ शुरू के कुछ दिन बड़े कष्ट में बीते। रह रहकर मां इया छोटी बहनों की याद आती और रत्ती कमरे के कोने में खड़ी हिलक हिलककर रोती। सालाना इम्तहान में सिर्फ तीन महीने बाकी थे इसलिए उसका दाखिला भी नहीं हुआ। रत्ती की उदासी या उसका रोना बाबूजी से छिपा नहीं रहा। उन्होंने रत्ती को खुद ही पढ़ाना शुरू किया। दफ्तर जाते तो मकान मालिक चौधरी की बड़ी बेटी से कह जाते, 'जरा देख लेना बच्ची अकेली है' दिन भर के लिए रत्ती को ढेर सा

काम दे जाते—दस दस बार पूरी वणमाला लिखना, पहाडा याद करना, सौ तक की गिनती रत्ती पहले ही सीख चुकी थी

रत्ती का मन उलझ गया। पढने लिखने और चौधरी की बेटी मक्को बुआ की निगरानी के बाद भी उसके पास काफी वक्त बचता। अपनी गुडिया वह लेती आई थी। उसके लिए गहने कपडे बनाना मक्को बुआ ने उसे ढेर सी कतरने और छोटी बडी मोतिया दी थी—गुडिया का ब्याह रचाना, घर के तीन ओर फैले अमरूद के बगीचे मे चोर चोर खेलना, शहतूत के पड पर हरे हरे पत्तो मे छिपकर बैठना, मक्को बुआ से जिद करके बेर के पड पर झूला डलवाना, पौधो की नमरी म फुदकती चिडियो क लिए दाना पानी रख आना, उनके घामलो मे झाक झाक बढते हुए अडो को देखना, नन्हे नन्हे पौधा की आड मे बठकर अपन आपसे बात करना रत्ती के प्रिय खेल बन गए।

बेटो की तरह बेटिया को पढान की बात बाबूजी क दिमाग म न आई होती तो रत्ती इआ के पास ही रहती वही स उसका ब्याह कर दिया जाता, वह अपने घर चली जाती। बाप के घर कोई बेटी पली है? दस जवान बहुए पाल ली जाती हैं एक बटी का बोझ बाप नही उठा सकता बेटी पराया धन है। उसका घर तो वह है जहा उसे सौपा जाता है। एक बार कन्यादान की रस्म अदा हो जाए, फिर बटी का मायके म क्या बचता है?

उस साल जुलाई म स्कूल खुले तो रत्ती का दाखिला चौथी म हुआ। मा री री करती एक ओर टिटिहरी लेकर आ गई थी। रत्ती से छोटी रमा और रितु भी दाखिल करवा दी गई। बेटिया का बाकायदा स्कूल भेजकर पढान का यश बाबूजी लूटन लगे।

लेकिन ये बातें गुजर हुए जमाने की ह एक जिन्दगी दकर भेजन वाले ने रत्ती का इस दुनिया मे भेजा जरूर है उसे जीन का हक देकर नही भेजा। बाबूजी न उस दसवी पास करवाकर बेटो की तरह बेटिया का पढाने का यश लूट लिया। ट्रेनिंग करवा दी कि नौकरी मिल जाए लेकिन उस अपन पैरा पर खडे होन की इजाजत वह नही दे पा रह हैं।

रत्ती के सामने एक ही रास्ता है अपने घर जाकर रहना। अच्छा बुरा जैसा भी हो वह उसका अपना घर है उस घर मे उसकी डोली गई थी तकदीर का दुख मेहमानी से कितने दिन कटेगा ? कितने दिन वह इधर उधर मारी मारी फिरेगी। घर म सास है, दो जेठ, एक देवर हैं एक जेठ तो उसे बहुत प्यार करता है। उसके बीवी बच्चे भी गुजर चुके हैं कहता है अपने हिस्से की पूरी जायदाद वह रत्ती के नाम कर देगा, रत्ती उसकी बेटी जैसी है। बाबूजी उसकी बात पर अभिभूत हो जाते हैं लेकिन रत्ती जानती है आदमी की खोल म छिपे हुए ये भेड़िए अपनी असलियत पर उतर आए तो अपनी जाई बटिया भी इनके लिए सिफ औरत हाती हैं। फिर भी वह बाबूजी की बात का जवाब नही देती लेकिन कहीं उसके मन मे एक गाठ और मजबूती से बध जाती है कि उस घर म उसे अब कभी नही जाना जहा उसकी डोली गई थी या जहा से उसकी अर्थी निकलनी चाहिए।

रत्ती जानती है बाबूजी का आय समाजी मन किसी अनहोनी से घबराया हुआ है। उसे याद है आय समाज के जलसो मे न जाने के कारण कितनी डाट पडती थी। जितना उस जान के लिए बाध्य किया जाता उतना ही उसका मन न जाने के बहाने ढूढता छोटी छोटी बात पर बिदक जाती। मा तब नय जोश म थी। बेटियो के साथ खुद भी पढने लगी थी। आय समाज म जाकर हवन करना, भजन गाना, जलसा मे शामिल होना उनकी दिनचर्या के प्रमुख आकषण बन गए थे। आधुनिकता की हवा उन्ह रास आने लगी थी। मा से रत्ती डरती थी, इमा होनी ता मजा चखा देती। सारा गुस्सा, सारी चिढ छोटी बहना पर उतरता। कभी कभी दीदी दो चाटे रसीद कर देती। रत्ती की आखा मे आसू की जगह खून छलक आता। मुह लटकाए चलती रहती, रास्त भर मा की हूस सहती, बहना की डाट खाती शरीर का कोटर छोड उसका विद्रोही मन पीछे भागता उसके कदम सामने की दूरी नापने की कोशिश म लडखडात रहत।

कितने प्यार थ बचपन के वे दिन। तडके उठकर गगा नहाने की इमा की आदत। इमा कितना चाहती कि रत्ती उनके साथ ही उठे। सुबह-सुबह

गगा का पानी एकदम गरम रहता है, नहाने मे कोई झझट नही न पाच हाथ की रस्सी मे बधी भारी बाल्टी खीचना, न गगा नहान की दूरी पार करके कोइरिया के इनार तक की दूरी पार करना। लेकिन रत्ती की अपनी परेशानिया थी। अगर वह इम्रा की बात मान लेती तो सुबह ही सुबह नहा धोकर फारिग हो जाना पडता, फिर मैली कुचैली छोटी बहना को लादना उनकी बहती हुई नाक साफ करना, उन्ह लेकर खिलान जाना एक तो पल-भर की आजादी नही, रें-रें करती हैं ऊपर से। उनके सामने न अपनी गुडिया निकाली जा सकती है न अपने कत्तर-पत्तर। सब चबा चबाकर भदरग कर देंगी, तोड देंगी और कुछ नही तो टट्टी-पेशाब मे सान लेगी। मा की डाट पडेगी ऊपर स, 'हरदम खुद खेलती रहती है, बच्चो का ध्यान ही नही रहता इस।'

उसकी गुडिया उसके कत्तर पत्तर से मा को कोई मतलब नही। रत्ती को यह साफ साफ पक्षपात लगता। कुछ बोले तो मा मार मारकर अधमरा कर देती। इम्रा न होती तो रत्ती कब की मर चुकी होती। मा की नजर से बचने के लिए एक ही उपाय था, इम्रा से उलझे रहना। कुछ दिनो तक वह इम्रा के साथ गगा नहान गई भी थी। मुह अधेरे गगाजी मे डुबकी लगाने पर उसे मजा भी आया था एकदम गरम-गरम पानी। इम्रा की गगाजली वाला हाथ पकडकर वह डरते डरते कगार से उतरती। कपडे एक ओर थोडी ऊचाई पर रखकर इम्रा छिपछिप पानी मे थप से बैठ जाती। पानी स माथा छुआ प्रणाम करती और फिर कुछ-कुछ मागन लगती, बबुआ की रोजी मे बरक्कत, बबुआवो का सुहाग, हरी भरी गोद, बेटियो को अच्छा घर वर' और अन्त मे बश आग बढाइए गगाजी, सोन की खसी देंगे पियरी से पाट ओहारेंगे ' और भी बुदबुद करके इम्रा बहुत कुछ मागती। कई दिनो बाद एक दिन उस अपना नाम सुनाई पडा 'रतिया को सदबुद्धि ' इम्रा उसके लिए क्या माग रही थी, वह सोचन लगी थी।

लौटते समय इम्रा के हाथ से उसने गीले कपडे ले लिए। एकदम सट सटकर चलने लगी। इम्रा समझ गइ आज देवता पाट हैं रास्त मे कोई शरारत नही होगी। थोडी देर दानो चुपचाप चलती रही। रत्ती

सोच रही थी यही से मागकर इम्रा ले जाती है सब कुछ। मा कहती है किसी स कुछ मागना नही चाहिए। खुद इमा कहती है अपने पास जो हो उसी से सन्तुष्ट रहना चाहिए और खुद मागती हैं। बडे लोग एसे ही होते हैं। जिसके लिए बच्चो को मना किया जाता है वही काम बड लाग खुद करत हैं। लकिन उस दिन इम्रा न उसके लिए भी कुछ मागा था। रत्ती जानना चाहती थी इम्रा न उसके लिए क्या मागा। जब उसने इम्रा स पूछा कि वह उसका नाम क्या ले रही थी तब इआ मुस्कुराइ 'तेरे लिए थोडी-सी अक्ल माग रही थी।'

रत्ती को बुरा लगा। इम्रा क्या उस बमअक्ल समझती है लेकिन अधिक उत्सुकता उस यह बात जानन क लिए हुई कि मागने पर क्या गगाजी सब कुछ दे देती हैं और यह कि जब मागने के लिए बच्चो को मना किया जाता है तो खुद बडे लाग इस तरह क्या मागत फिरत है।

इम्रा ने रत्ती को समझाया किसी आदमी के सामने हाथ नही फैलाना चाहिए देवी देवता तो हमारे मालिक है, कुछ मागना हुआ तो और कहा जाएगे, और गगा जी ? उनका दिया तो हम खात है। जिस साल गगा मया का कोप होता है फसल की फसल तबाह हो जाती है चारो ओर अकाल पडने लगता है मा गगा तो हमारी कुलदवी है इनमे नही मागेंगे तो और किसस मागेंगे।

रत्ती समझ गइ मा गगा स मागने म कोई हर्ज नही। वह सोचने लगी उसकी गुडिया मना की शादी सिर्फ इसलिए टलती जा रही थी कि उसे कोई घर जमाई नही मिल रहा था। उसकी कोई सहेली अपना गुडडा देने के लिए तैयार नही थी, उसकी गुडिया पर अलबत्ता सबकी नजर थी। रत्ती ने भी तय कर लिया था शादी के बाद गुडडा अपने पास ही रखेगी, अपनी गुडिया किसी का नही देगी।

बहुला चौथ भाई का व्रत है। गाव की सारी लडकिया यह व्रत रखती हैं। उस साल रत्ती भी बहुला चौथ का व्रत रखन के लिए मचल पडी थी। इम्रा ने बहुत समझाया कि बिना भाई की लडकियो को यह व्रत नही करना चाहिए। लकिन रत्ती ने कोई बात इतनी आसानी स मानी थी इम्रा झल्ला पडी इतनी ही भाग्यवान होती तो पीठ पीछे

भाई न लाती बहुला चौथ तुझ जैसी अभागियो के लिए नहीं है ।'

रत्ती आसमान से टूटकर जमीन पर आ गिरी थी। उसका मन अधेरे मे छिप जाने को हो आया था। उस दिन वह इतना रोई, इतना रोई अब उसके सामने गगा मैया है, सबकी बातें सुनने वाली, सबको सब कुछ देनेवाली अपना सारा दुख दद वह गगा के सामने रख सकती है।

दूसरे दिन गगाजी के छिपछिप पानी मे इस्रा के साथ रत्ती भी बैठी। अपना माथा उसने भी पानी से छुलाया और साफ स्पष्ट शब्दा मे बोली, गगा मैया मुझे एक भाई चाहिए 'आगे की बात उसने मन ही मन दोहराई, 'मेरी मैना के लिए एक अच्छा सा दूल्हा, मरी मैना का सुहाग, गुडडे की रोजी म बरक्कत '

इस्रा ने सब कुछ देख परखा। उस दिन वह रत्ती से बहुत खुश थी। मा से छिपकर उसे बासरोपन हलवाई के यहा ल गई। गरम-गरम दो टिक्री, एक पटउरा दिलवाकर बोली, 'खा ले रत्ती, घर ले जाएगी ता सबको देना पडेगा।'

उन दिनो इस्रा से रत्ती की खासी पटी हुई थी। इस्रा की एक आवाज पर वह उठ जाया करती। शाम से ही सहजकर रखे गए कपडे उठाती और चल देती गगा नहाने। गगाजी से माथा टिकाकर इस्रा गगाजली म पानी भरती और पानी से निकलकर थोडा ऊपर जा दातौन करने लगती। रत्ती पानी मे घुस तलहटी से बलुही मिट्टी निकाल लाती कभी घर बनाती, कभी ढेर सारे खिलौने, कभी सब्जी के खेत, जिनके बीच काइरिया का इनार बनाना कभी न भूलती। फिर सब कुछ मिटा दती। चुल्लू चुल्लू भर पानी लाकर बलुही मिट्टी पिघलाती फिर गगा के पानी म बहा देती। इस्रा दातौन करके आ जाती तो दोना पानी म उनरती। कमर भर पानी से आगे जान पर रत्ती चिरलाने लगती। वहीं डुबकी लगवाकर इस्रा उसे किनार तक छोड जाती फिर छाती भर गहर पानी मे उनरती। गिन गिनकर इक्कीस डुबकी लगाती। काई कोई डुबकी जानकर लम्बी कर देती। रत्ती का दिल धडकने लगता। उसे लगता इस्रा डब गइ। एक बार तो उसकी आखो मे आसू आ गए थे।

उसकी आखो से टपटप आसू झरते देख इम्रा शायद मुस्कुराई भी थी। कितनी देर बाद पानी स निकलकर खडी हुइ, पूरब की ओर मुह करके निकलते हुए किरण को अघ्य दिया, चुल्लू स पानी उछालती हुई पितरो का नाम ले लेकर अपनी जगह परिक्रमा पूरी की, फिर गीली धोती म लिपटी किनारे तक आकर पूजा की टोकरी उठा ले गईं। पानी म फूल बिखेरे पहले से घिसकर रखे गए चन्दन का छिडकाव किया वही खडे-खडे पत्ती का दीवा बनाया घी मे सनी बाती पर थोडा कपूर रखकर जलाया, फिर दीवा पानी मे बहा दिया। लहरो पर थिरकता हुआ पत्ता दूर जा रहा था लेकिन रोज की तरह रत्ती का ध्यान उधर नही था। उसकी आखो से ढुलके हुए आसू सूख चुके थे, चेहरा अभी सूजा हुआ था। पूजा की टोकरी हाथ म थामे पानी से निकलकर इम्रा जब रोज की तरह उसके माथे पर चन्दन लगान बढी ता रत्ती मुह फेरकर खडी हो गई थी।

इम्रा मन्त्र बुदबुदाती रही, उन्हान कपडे बदले, गीली धोती धोने एक बार फिर घुटना भर पानी मे उतरी। सूरज निकल आया था, नहाने वाला की भीड घाट पर बढने लगी थी। उस दिन सारे रास्त रत्ती चुप रही। इम्रा ने उसे झूठमूठ रुलाया था। इसका मजा उन्हें चखना पडेगा। उसने मन ही मन तय कर लिया था।

रत्ती को अब याद नही इम्रा से बदला लेने के लिए उसने क्या किया। कुछ किया जरूर होगा उन बातो मे अब क्या रखा है। बचपन था बीत गया। मुश्किल तो यह आज है आज कैसे बीतेगा ?

कई बार उसने यह सोचा है, कोइरिया का यह इनार बडी महतिन की तरह उसे अपने मे समेट सकता है। एक बार आत्मा शान्त हो गई तो कच्ची मिट्टी का क्या कोई भी ढोए, कोई भी उठाए यही तो कहग लोग कि मुह काला कर लिया था, किस मुह से जिन्दा रहती, एक का पाप दूसरे के मत्थे कसे मढती । एक बार आख बन्द हुइ तो कोई कुछ कहे कुछ सुने।

रघु क्या सचमुच किसी पाप का साझीदार था ? रत्ती न सचमुच कोई पाप किया था

बाबूजी की इज्जत तो हर बात मे आड़े आती है। रत्ती को अपने लिए जा ठीक लगा है बाबूजी की इज्जत उसीके सामने आकर खडी हो गई है। रत्ती समझ नही पाती। इज्जत का दायरा क्या इतना छोटा होता है, इज्जत क्या इन छोटी-छोटी बातो मे उलझकर आती जाती रहती है उसने दसवी पास कर ट्रेनिंग भी कर लिया तब बाबूजी की इज्जत फख्र से छाती ठोकती रही। बाबूजी की बताई हुई जगह पर अगर वह जाकर नौकरी भी करने लगे तो बाबूजी की इज्जत छाती ठोकती रहेगी। लेकिन यहा, इस गाव मे अगर वह नौकरी करती है, या अधिक समय के लिए टिकी भी रहती है तो बाबूजी की इज्जत चली जाएगी। यहा वह पैदा हुई है, इस गाव की वह बेटी है यहा म उसकी डाली उठ चुकी है।

कभी कभी इया से चिढकर रत्ती अब भी पूछ लेती है, बेटी पराया धन है ता मा बाप पैदा क्या करत हैं ?

इया उसकी बुद्धि पर तरस खाती उसे देखती रहती है। जवाब कुछ नही देती। उनका मन रत्ती के लिए कचोटता है, 'कच्ची उम्र है पहाड़-सी जिन्दगी, बेचारी किस किनारे लगेगी ?'

लाक लाज का डर न होता तो इया सब कुछ छोड़कर रत्ती के साथ रह जाती या जि दगी-भर उसे अपने कलेजे से लगाए रखती इस गाव मे भी लडकियो का एक स्कूल खुल सकता है, वह जानती थी उनका बेटा बडे दफ्तर म काम करता है, उसने गाव म पोस्ट आफिस खुलवा दिया। लडको के दो स्कूल खुलवाए जवार मे आगे बढकर बेटियो को पढाने का आदश स्थापित किया, लडकिया का एक स्कूल क्या जिस दिन चाहे उसी दिन स्कूल खुल जाए।

लेकिन रत्ती उस स्कूल म नौकरी कैसे करेगी। उधर वाले कहेगे बेटी की कमाई खा रहे है ससाले बबुआ का बडा अपजस होगा इया न जाने कितनी बार य बातें दोहरा चुकी हैं।

बाबूजी ने रत्ती को कई बार सिर्फ एक बात समझाने की कोशिश की है वह पढी लिखी समझदार लडकी है। बाबूजी 'उसी' गाव लडकियो का एक स्कूल खुलवा देंगे। जेठ-देवर लफगे हैं सो रत्ती

सास के साथ रह सकती है। वही पढाएगी चार पैसे मिलेंगे तो घर में उसकी इज्जत बढेगी, मान बढेगा पुरानी बातें फिर से दोहराई जाए यह जरूरी नहीं। दुनिया माया के बस म रहती है।

रत्ती ने बाबूजी के सारे उपदेश सिर झुकाकर सुन लिए हैं। कई बार कुछ बातें गले तक आकर ही अटक गई हैं। बहुत चाहने पर भी वह बाबूजी स कुछ कह नहीं पाई है।

अब वह इग्रा के पास है। उसे समझा-बुझाकर राम्न पर लाने की पूरी जिम्मेदारी इग्रा पर सौंप दी गई है। रत्ती जानती है जिस दिन उसने हा कह दिया उसके आठवें दिन यह गाव उससे हमेशा हमेशा के लिए छूट जाएगा। यह हवा, यह मिट्टी, कुछ भी उसका अपना नहीं रहेगा। वह एक ऐसे नरक म झोक दी जाएगी जहा से निकल पाने के लिए दुनिया ही छोडनी पडगी।

रत्ती को दुनिया अच्छी लगती है। एक रत्ती की किस्मत खराब होने से इतनी बडी दुनिया कैसे खराब हो गई केसर जैसे भाग्यवान लोग भी तो यही हैं। इग्रा की सारी मनोकामनाए यही पूरी हुइ गगा मैया ने उन्हे दो पोते दिए, बेटियों से वीरान मा की गोद मे दो बेटा ने किल कारियां भरी इतने सारे भाग्यवानों के साथ एक अभागी वह नहीं रह सकती ?

इग्रा कहती हैं 'मान ले मा बाप ने सारी तोहमत उठाकर तुझे रख भी लिया तो भाई भौजाई, किसके होते है मा बाप हमेशा जिन्दा थोडी ही रहेगे।

रत्ती कहना चाहती है, वह किसी पर बोझ नहीं बनेगी अपनी रोटी आप कमा लेगी इसीलिए तो बाबूजी ने उसे पढाया लिखाया था लेकिन समाज के इस नक्कारखाने मे तूती सी उसकी आवाज सुननेवाला कौन था ?

रघु के साथ कच्ची उम्र म उसने कुछ अल्हड सपने देखे थे। रघु शादीशुदा एक बच्चे का बाप था तो क्या हुआ वह रत्ती को प्यार करता था। रत्ती को पाने के लिए उसने अपनी बीवी को दो बार जहर दिया था, कि किसी तरह वह रास्ते स हट तो रत्ती का हाथ मागा जा सके ।

कहते है कोई काई जहर सूघन भर से आदमी मर जाता है यहा दो-दो बार गिलास भर दूध के साथ जहर भी अमत बन गया। रघु के बीवी के बदन पर फफोले ही फूटे, उसकी जि दगी की कडी नही टूटी । रत्ती ने जब यह बात सुनी तब उसके होश उड गए थे पर कहीं अच्छा भी लगा था । रघु क्या सचमुच उसे इतना प्यार करता था ?

रत्ती और रघु की उम्र मे पन्द्रह साल का फासला था लेकिन उसकी बीवी मर जाती तो रत्ती से उसका ब्याह हो जाता । बाबूजी एक ब्याह के पूरे खर्चे से बच जाते लेकिन रत्ती की जिन्दगी तो कगाल हाट मे नीलाम होनी थी चुटकी भर सिन्दूर जब यू ही उसकी माग म भर देने की बात रघु ने कही तो बाबूजी की इज्जत ने आकर उसे छाप लिया था । जब किसी और का सुहाग उसके माथे पर थोप दिया गया तो पार-पार मे बसे रघु का एहसास उसकी समझ मे पहली बार आया। रघु के सामने सात फेरो का वह ब धन क्या था लेकिन समाज और कानून के हाथ जब मिल जाए तो व्यक्ति कहा बचता है

मा कहती है ब्याह के बाद ही उसकी डोली उठी होती ता शायद बात बन गइ होती । साल भर पति के पास रहने का मौका मिलता । बात तो घडी भर की हाती है । जिन लडकिया की माहवारी दर स शुरू होती है वे लडकिया मा जल्दी बनती हैं। रत्ती चौदह पूरा करके महीना हुई थी । ब्याह के बाद फौरन ससुराल न भेजकर कितना गलत काम किया था बाबूजी न । उ हे शायद रघु का डर था । क्या कर लेता रघु रत्ती का ब्याह हा चुका था, उम्र भी कम थी, कोई हगामा खडा करता तो कानूनी फदा उसके गले म पडता बातें तो आई गइ हो जाती है । थोडी बदनामी होती फिर लोग भूल जात । बेटी की माग मे एक बार सि दूर पड जाए तो पाप कट जाता है, फिर उसे छाती पर बिठाकर रखने स अपजस ही हाथ लगता है । बाबूजी ने जसा किया वसा भुगतें अब । जवान बेवा बेटी को छाती पर बिठाकर रखें । रत्ती के मामले म मा अब कुछ नही कहती ।

रत्ती जानती है राय साहब न बाबूजी को चिट्ठी लिखी थी कि रघु बौखलाया हुआ है, शायद उसने राय साहब से कहा भी था कि

की डोली अगर उसके यहा नही गई तो कही और भी नही जाएगी।

बाबूजी इस बात स कही बुरी तरह डर गए थे। बारात विदा होन के दिन तक किसी को नहीं मालूम था कि वहीं विघ्न हो रहा है या नहा। खुद रत्ती भी नही जानती थी। मा का क्या घर म बैठी-बैठी बातें बनाती रहती है रघु दस गुण्डो को लेकर डोली रोक लेता तो घर गाव की क्या इज्जत रहती ?

बाबूजी न मन ही मन तय कर लिया था कि रत्ती का गौना साल भर बाद कर देंगे। तब तक रघु के मन की आग अगर बुझी नहीं तो धीमी ज़रूर पड गई रहेगी।

3

चुचुहिया की आवाज पर रत्ती उठ जाती है। बचपन मे बाबूजी चार बजे उठा देते थे पाठ याद करने के लिए। रत्ती का पढना नहीं रटना पडता था। पूरा पाठ कण्ठस्थ न हो जाए तो पढने का मतलब क्या ? घर म तब बिजली नही थी, लालटेनें जला करती थी मिट्टी के तेल का धुआ आखो को खराब कर देता है। रत्ती जहा पढती थी एक फुट ऊचे दीवट पर बडे से दीए म रेंडी का तेल जलता था। आठ-साढे आठ खाना खाकर बाबूजी आराम करते, रत्ती को बैठकर रटना पडता। दस बजे से पहले वह बिस्तर पर नही जा सकती थी। सुबह चार बजते ही उसे बिस्तर छोड देना पडता। दीए म तेल हर रात बाबूजी अपने हाथ से भरते रात दस बजे तक से सुबह चार से छ बजे तक के लिए इतना तेल काफी होता। रत्ती यहा कोई घपला नही कर सकती थी लेकिन तेल का कनस्तर बगल वाले कुए म कई बार आधा चौथाई खाली कर चुकी थी। कनस्तर भरा रहे इसलिए कई बार बराबर का पानी मिलाकर बाबूजी की छडी घुमाकर पानी तेल एक दिल कर देती। महीने के आखिर म जब बाबूजी के पैसे खत्म होते तो कनस्तर का तेल भी खत्म हो जाता और तब रत्ती चन्द दिन आराम से सोती। पानी

मिला तेल चिट चिट करके जलता तो बाबूजी दूकानदार को गाली देते, रत्ती मन ही मन खुश होती ।

बचपन ही भला था । हर मुश्किल किसी न किसी तरह आसान हो जाती, हर दिक्कत से उबरने का एक रास्ता मिल जाता । अब तो जि दगी इस तरह जम गई है कि लगता है सदियो से जग लगे लोहे को साफ करन की कोशिश मे वह टूटकर बिखर ही न जाए ।

रत्ती का हसी आती है । बचपन मे लाग कहा करते थे, बडी होन-हार लडकी है, इसका दिमाग बडा तेज है नाक नक्श तीखे न सही, मुह पर बडा पानी है शरारत ? वह तो सभी बच्चे करते हैं शरारती बच्चे ही बडे होकर समझदार बनते है । कहा गए वे सब लोग ? आकर देखत क्यो नही कि रत्ती एक बेहद मामूली लडकी है कि जिसके चारो ओर अधेरा ही अधेरा है कि जिसे इस दुनिया मे लानवाले लोग भी अब सहने को तैयार नही, रुई मे भीगे हुए बोझ की तरह उसे उतार फेंकना चाहत हैं होनहारो के साथ यही होता है ? दिमाग वाले तेज़ लाग ऐसे ही जीते हैं ?

मुह-अधेरे घर आगन बुहारकर रत्ती बिस्तर समेट देती है । इआ उसे कई बार फटकार चुकी हैं कि वह इस घर की बेटी है, बहू नही । इतनी जल्दी उठने या घर के कामकाज मे लग जाने की उसे कोई जरूरत नही । रत्ती सुन लेती है कहती कुछ नही, लेकिन मन कही कचाटता है। काश, उसे बेटी ही मानकर रखा गया हाता । वह सोचती है सारी उम्र तो बाबूजी उसे बेटा मानत रह । बारह साल की उम्र तक नकर कमीज पहनन को मिली । एक अदद घेरे वाली रेशमी फ्राक के लिए तरसत हुए उसका बचपन बीत गया ।

कितनी कोशिश की उसने खुद को बटो की ऊचाइ पर रखकर ऊचा महसूस करने की । बेटा की दुनिया म उसकी पैठ किसके बस की बात थी बेटियो को दुनिया से भी वह निकाल दी गई । अब उसे बार बार समझाया जाता है कि वह बेटी है उस बटी की तरह रहना चाहिए इस घर की मर्यादा उसके आचल से बधी है । उसे जो कुछ करना है उस घर मे करना है । उस घर म उसकी डोली गई है वहा से अब अर्थी ही

निकल सकती है। यह घर वह घर रत्ती सोचती है इसम उसका अपना क्या है ? इम्मा की फटकार पर कहती है, 'बेटी न सही, बहू मानकर ही मुझे याद तो करोगी इम्मा ?' रत्ती की बात कहीं चुभती है, इम्मा का कलेजा फटने लगता है, वह चुप उसे घूरती रहती हैं या मट्ठे जैसा मटमला पानी उनकी आखो स निकलने लगता है।

रत्ती को बस एक ही धुन है उसकी मिटटी चाहे चील-कौवे नोचें चाहे वह गगा की अथाह जलराशि म पनाह पाए, चाहे कोइरिया के इनार वाली महतिन उसे अपने आचल म समेट लें। एक बात तय है कि वह वहा नही जाएगी जहा उसकी डोली एक बार जबरदस्ती उतार दी गई थी। अच्छा ही हुआ वह आदमी नही रहा जिसके साथ दूध का वास्ता देकर मा ने बाध दिया था। मुपन मर गया, दो ही दिन का तो बुखार उसे आया था। रत्ती सुन सबकी लेती है, जवाब किसी का नही देती। किसी के कुछ कहने से क्या फक पडता है। चलना तो हमेशा अपने मन की बात है। एक आदमी कितनी दूर, कहा तक चल सकता है उसकी शक्ति, उसके साहस पर निभर करता है। सबके सुझाए रास्त अलग-अलग होते हैं। एक आदमी उतने रास्ता पर कसे चल सकता है ?

मैदान से फारिग होकर इम्मा जब आती हैं रत्ती जूठे बतन माज चुकी होती है। दोनो अपने अपने कपडे सभालने गगा नहाने चल दती है। सुबह के भुटपुटे म हवा का ठडा झोका रत्ती के आचल म उलझ जाता है। रुखे सुखे बाल हवा म तितर बितर हो जाना चाहते हैं। मन आगे बढ़ रह कदमा का साथ छोड दता है। गगाजी मे ग्यारह या इक्कीस डुबकी लगाने, सूय को अघ्य दन गगाजी को पत्र-पुष्प चढाकर आरती करने म उसका तन रमा रहे मन नही रमता। टटोल टटोलकर भी कभी उसमे मन का एहसास नही जागता। लेकिन मन नाम का कुछ उसके पास था जरूर

रघु की बात सोचना भी उसके लिए अब पाप है। इम्मा कहती हैं, 'तरी ही तरह तो वह भी होगी जिसका हाथ उस अभागे ने थामा होगा दूसरो का सुख छीनकर कोई सुखी कभी नही होता रत्ती !' रत्ती इम्मा की बात सोलह आना सच मानती है। उसका मन एकदम खामोश

हो जाना चाहता है, लेकिन खामोशी के उसी धुकधुक मे खुले आसमान के उडते परिन्दो का एहसास जाग उठता है। सबकी नजर बचाकर वह उन्ही के साथ उड जाना चाहती है, मा, बाबूजी भाई-बहन, सबकी नजर से दूर इस्रा की हिरासत म मुक्त सब कुछ तहस नहस करके, गैरत का दामन सरेबाजार बेचकर ओ रघु यह कौन सी आग तुमने भर दी जिसकी ज्वाला उसे कभी भस्म नही होन देगी, जिसकी खलिश उस जिन्दगी भर सालती रहगी

रघु उसकी दीदी का जेठ, उसके जीजा का बडा भाई

दीदी का ब्याह आज भी गाव म बडी लम्बी चौडी भूमिका के साथ याद किया जाता है। भूमिका तो दीदी के जन्म की भी है। बाबूजी क जन्म के बाद घर मे दीदी जन्मी थी। लोगो ने कहा पहलौठी की बेटी बडी भाग्यवान होती है दीदी लाड प्यार स स्वीकार ली गइ। बचपन हाथोहाथ बीत गया, किशोर हुई तो बहलाने खिलान के लिए छोटी बहनें थी। बडी हुई तो माता पिता की पूरी गिरिस्ती उन्ही के कधो पर आई। हर दूसरे साल बेटे के इतजार म बटिया पैदा करती मा प्रजनन की एक मशीन बन गई थी चूल्हा चक्की, छोटी बहनो को नहलान धुलान स लेकर प्रसव पीडा स छटपटाती मा का बोझ दीदी न जब अपन सीन पर ओढ लिया तब सहसा सबको पता चला कि वह सयानी हो गई है। सौरी से मा की कराह रत्ती न भी सुनी थी, लडकी सयानी हो गई है, कुछ उसकी भी तो सोचो। और तब दीदी के लिए लडका देखा जाने लगा।

रत्ती को नही मालूम कितन लडके देखे गए। किन शर्तो पर शादी की बात चली, लेकिन जिस खूटे स दीदी को बाधा गया वह उनके जोग एकदम नही था घर के पोस्ता होने से क्या होता है लडका भी तो अपनी लडकी देखकर तय किया जाता है। इतने कपडे इतन गहन चढावे की रस्म शुरू हुइ तो फेरो का मुहूर्त टलन लगा। कई-कई गहन कई कई कपडे एक साथ दीदी के माथे से छुलाकर थाल मे रखता हुआ रघु कितना सुन्दर लगा था। गाव की लडकियो ने तो सीना थाम था 'हाय कितना सुन्दर जेठ है कदकाठी एकदम [illegible] राम की तरह हाय, यही दूल्हा होता।' रत्ती बिदक गई थी

बातें करती हैं ये लडकिया, जेठ भी कही दूल्हा होता है ? और छोटे भाई की बहू तो बेटी से भी बढकर होती है। उसपर ता जेठ की परछाई भी नही पडनी चाहिए।

दीदी और जीजा की उम्रो का फासला उतना नही था। इतनी बडी जि दगी मे चार साल क्या होत है। लेकिन लाड प्यार म पली दीदी जितनी निखर आई थी, सम्पन्न परिवार मे पैदा होने के बावजूद जीजा उतने ही मरगुल्ले से थे। दीदी की डोली उठी तो रत्ती तडप उठी थी। दीदी का हाथ थामे डोली के साथ भागती भागती कोइरिया के इनार तक पहुची थी। कहारो न डोली नीच रखी तो दीदी ने रत्ती को अदर खीच लिया। दानो बहनें लिपटकर जार जार रोइ। दीदी को पानी पिलाया गया कि उनकी जिन्दगी जुडाई रहे। गाव की लडकिया मिलती-भेंटती रही। देर होने लगी तो रत्ती खीचकर डोली से बाहर निकाली गई। जीजा की डोली आगे निकल गई थी बाराती एक-एक कर गुजर रह थे। कहारा न झम्म से दीदी की डाली उठाई। दीदी के आसू आवाज बन गए, रत्ती ने अपना चेहरा हथेलिया म ढाप लिया।

गाव की लडकियो स घिरी रत्ती अपना आपा खोती जा रही थी कि एक अपरिचित हाथ आकर उसके कधे पर रुका। एक अपरिचित आवाज सुनाई पडी 'आपकी दीदी सिफ दस दिन के लिए जा रही हैं ।'

रुलाई अपना वेग पकडत पकडत रुक गई। हथेलिया चेहरे से हटी, सूजी हुई आखें ऊपर उठी सामने दीदी का जेठ खडा था, रघु रत्ती तब तेरह साल की थी।

दस दिन बाद दीदी ससुराल से आ गइ। दीदी की सास ने दस दिन म स एक दिन भा बटे-बहू को मिलन नही दिया था। सुबह से शाम तक आहें भरती रही थी, 'बापरे, साडनी है पूरी, मेरे बेटे को तो पूरा का पूरा निगल जाएगी कहा छिपाई थी इसके बाप ने ऐसी जवानी ।'

बाबूजी चारपाई पर सिर झुकाए बठे थे। उनकी आख से टप टप आसू गिरते रत्ती ने पहली बार देखा थे। उसे बाबूजी पर दया आई

थी 'दीदी यह सब क्यो कह रही हैं, जो होना था वह तो हो चुका। बाबूजी शर्मिन्दगी उठा भी लें तो क्या बदल जाएगा ।' उसने मन ही मन दीदी को कोसा था। लेकिन दीदी थी कि बेबाकी से सब कुछ बयान किए जा रही थी। बाबूजी को अपनी गलती का एहसास शायद पहली बार हुआ था। इससे पहले के सारे विरोध उन्होने सह लिए थ। लेकिन अब, जब उनकी अपनी ही जाई सामने बैठी टुकुर टुकुर देख रही है ।

बाबूजी का तमतमाया चेहरा आज भी रत्ती की आग मे साकार हो उठता है। इदर भइया ने कुछ कहा था और बाबूजी एकदम से तमतमा उठे थे। मा की एक भद्दी सी गाली भी उन्होन दी थी इदर भइया को इदर भइया ने जो चुप्पी साधी तो तीन दिन रुके जरूर, बोले एक शब्द भी नही। भेद खुला द्वार पूजा के बाद। भागती हुई कुछ बुजुग औरतें अदर आ गइ राम-राम, क्या देखा था गऊ को बाध दिया बछडे के खूटे से लडका है, एकदम बच्चा बेटी क्या उसे गोली म खिलाएगी ? अरे, अपनी बेटी तो देखी होती ।'

बातें मा के कानो तक पहुची। जीजा जब मडप म आए तो मा झपटकर कोहबर से बाहर आइ। दामाद का देखत ही माथा पीट लिया। दीवार का सहारा न लिया हाता तो वही भहराकर गिर पडी होती रोना पीटना शुरू हो गया। राते रोते मा न एलान कर दिया, 'बारात वापस चली जाए, उन्हे अपनी बेटी नही ब्याहनी।'

इतनी बडी बारात वापस चली जाए बेटी का ब्याह कोई गुडियो का खेल है ? नाइन के हाथ से झपटकर मौसी न आरती का थाल ले लिया था। मा और मौसी मे क्या फक है अब तो घर की इज्जत का सवाल था आज छोटा है तो कल बडा भी हो जाएगा। बारात वापस चली गई तो बेटी पर कितने कलक आएगे ?

गुस्से से फुकते हुए बाबूजी न जाने कहा से अवतरित हो गए थे। मा को कमरे म बद कर दिया गया। कन्यादान की रस्म उन्होने अकेले पूरी की, मा की जगह गगाजल से भरा, आम के पत्तो से सजा एक लोटा रख दिया गया था। मा बाप मे से किसी एक की कमी ऐसे ही तो पूरी की जाती है। किसी को कानोकान खबर भी न हुई, जीजा के स

ने सात फेरे ले लिए।

अब दीदी बैठी थी बाबूजी के सामने, एक बड़ा सा सवालिया निशान बनकर। घर की इज्जत हर तरह से रह गई थी—बेटी का ब्याह हो गया, वह ससुराल भी हो आई। कुछ दिन यूही बाप के घर रह लने म कोई नुकसान नही था। बाबूजी न अपने सामने के सवालिया निशान का एक हल निकाला। उन्होंने मा को स्पष्ट शब्दो मे समझा दिया था जब तक लडका पढ-लिखकर नौकरी नही करने लगता तब तक वह अपनी बेटी नही भेजेंगे बेटी के पढने लिखन की अलग से व्यवस्था होगी।

जल्दी ही सब लोग इलाहाबाद वापस आ गए। दीदी को पढाने के लिए एक पडित जी रख दिए गए। रत्ती स्कूल जाती, दीदी घर मे पढती ज़िन्दगी एक रफ्तार पकडने की कोशिश मे व्यस्त हो गई। जीजा की उम्र बढने के इतजार म दीदी अपनी उम्र की दहलीजें पार करने लगी

रत्ती आज सोचती है, काश ऐसी ही कोई व्यवस्था उसके लिए भी हो पाती। उसे किसी का इतजार नही, पढाई भी जितनी कर चुकी है उसके सहारे पैरो पर खडी तो हो सकती है। चाहेगी तो आगे की पढाई यही से प्राइवेट कर लेगी। हो सकता है लडकियो का स्कूल अलग से खुलने म कुछ वक्त लग जाए, लेकिन यहा लडको के स्कूल मे एक नौकरी तो उसे फौरन मिल सकती है, लडको के स्कूल मे लडकिया भी तो अब पढ़ने जाने लगी हैं। बाबूजी कितनी बार कह चुके हैं बेटे-बेटी मे कोई फक नही।

स्पष्ट शब्दो म रत्ती से बाबूजी ने यह कभी नही कहा कि उनके घर म उसके लिए कोई जगह नही है, लेकिन बार बार उसे यह बात याद दिलाई गई है कि बाप का घर बेटी का कभी नही होता बेटी का अपना घर उसकी तकदीर से मिलता है, कुछ दिनो के लिए आना जाना चल सकता है वह भी तभी तक जब तक मा बाप ज़िन्दा हैं। आगे की बातें अपने रसूक की है। भाई भौजाई से पटती है तो ठीक है वरना कौन किसकी खोज खबर लेता है? छोटे सही, रत्ती के अब दो भाई हैं। दोनो घरो से बनाकर रखे तो उसकी एक ज़िन्दगी क्या कट नही जाएगी?

यह घर रत्ती का अपना नही और उस घर के नाम पर उसका मन

काप-काप उठता है। मिट्टी की चार नगी दीवारो पर पडे फूस के मोटे छप्पर के नीचे जहा रत्ती को पहली बार डोली से उतारा गया था। जिसे उसके कमर को सज्ञा दी गई थी, एक रात भी तो बेखटके वह नही सो पाई थी, एक पल की भी तो सुरक्षा नही थी वहा। भाई की रस्म पूरी करने जब विजय आया तो हटर लेकर दौडाने वाली अपनी दीदी के भाग्य पर कितना कितना रोया था। रात के अधेरे मे या वीरान दोपहरी मे किसी का हम बिस्तर काई भी हो, 'चोर चोर' की पुकार पर जहा मामले रफादफा हो जाते थे नही नही, उस घर मे रत्ती की जिन्दगी के वीरान इकहरे दिन कभी नही कटेंगे।

गगा मया का यह अथाह पानी रत्ती की नन्ही-सी जान के लिए क्या छिछला पड जाएगा ? सूय पिता को अघ्य दने के लिए उठा हुआ अजुरी-भर पानी बूद-बूद करके टपक जाता है। रत्ती की आखें गगा की लहरो मे अपने लिए पनाह ढूढती हैं। इआ की पूव परिचित याचना उसके काना मे गूजती है 'बबुआ की रोजी मे बरक्कत बबुआ बो का सुहाग ' रत्ती के लिए अब वह सदबुद्धि नही उसके मन की शाति मागती हैं। इआ की याचनाए सुनकर हाठो पर आ गई मुस्कान रत्ती बाध लेती है। दुबारा अजुरी भरकर सूय पिता को अघ्य देने का नाटक करती है। उभरते हुए जिस्म का गीली धोती मे अच्छी तरह लपटकर जब वह पानी से बाहर निकलती है तो इआ जबरन मुह फेर लेती हैं। रत्ती जानती है गाव के मनचले छोकरे कगार के ऊपर से उसे घूर रहे होंगे घूरने की एक उम्र होती है। वह अकेली तो जवान नही हुई है इस तरह की बातें रत्ती को परशान नही करती।

धप, दीप, आरती, वदन, इआ जो कहती है रत्ती सब करती है। न जाने किसकी दुआ, किसका आशीष काम आ जाए। जिन्दगी का ऊट किसी न किसी करवट तो बैठेगा ही, जितने दिन इआ के सरक्षण मे कट जाए उतने दुआओ के हागे। ऊपर वाला बडा कारसाज होता है। उसका करम हो जाए तो क्या नही हो सकता। बाबूजी का मन बदलना तो एक मामूली बात है। रत्ती मानती है गलती उसन की, लेकिन गलतिया कौन नही करता ? और अपनी गलती का खामयाजा वह भुगत नही

रही है ?

रघु ने कितनी बेबाकी से कहा था, 'मेरे साथ भाग चलो रत्ती, हम ब्याह कर लेंगे, फिर कोई कुछ नही कर सकता।'

तब यह बात रत्ती को कितनी अनहोनी लगी थी। रघु के साथ वह भाग जाए। लोग क्या कहेंगे कि पडित जी की बेटी बहनोई के बडे भाई के साथ भाग गई छि छि बाबूजी की कितनी बदनामी होगी, नही ऐसा काम रत्ती नही कर सकती। उसने घूमकर रघु को देखा था, बोली तो आवाज़ साधारण से धीमी थी, 'बाबूजी की इज्ज़त धूल मे मिला दू ?'

रघु जानता था इस तरह इज्जत धूल मे नही मिलती। वह हर तरह से रत्ती के योग्य था और सब से बडी बात यह थी कि वह रत्ती को प्यार करता था। वह कहना चाहता था थोडे दिनों बाद सब कुछ ठीक हो जाता है लेकिन रत्ती की बात सुनकर खामोश रह गया। मन की अतल गहराइयो मे कही बाबूजी के लिए अथाह सम्मान उसने महसूस किया था। हर चीज कहने या दिखाने की नहीं होती।

इन तमाम सुबहो की तरह तो वह भी एक सुबह थी। एक गिलास पानी की फरमाइश पर वह रघु के सामने हाजिर हुई थी। वही एक मुलाकात क्या कुछ नही कर गई वरना हसी-मज़ाक कौन नही करता, अच्छा-बुरा लगना किसके बस की बात है ?

दीदी को ससुराल से आए पाच छ महीने बीते होंगे कि रघु की नौकरी बाबूजी के सामने एक चुनौती बनकर आई। रघु की नौकरी मिल जाने का पक्का आश्वासन जब बाबूजी को मिल गया तो उन्होंने दो चिट्ठिया लिखी—एक रघु को कि लौटती गाडी से वह इलाहाबाद आ जाए और दूसरी राय साहब यानी दीदी के ससुर को। राय साहब को चिट्ठी मे बाबूजी ने क्या लिखा रत्ती नही जानती लेकिन सारे बच्चो को जब समझाया गया कि एक मेहमान उस घर मे आकर रहनेवाला है, उसकी खातिर मे कोई कमी नही होनी चाहिए तो रघु को लिखे गए खत का मजमून उसकी समझ मे आ गया।

रघु के स्वागत की तयारिया बडे उल्लास से हुई। बैठक को जमकर

साफ़ किया गया। दीवान पर साफ़-धुली चादर डाली गई। बेहद छोटे बच्चों को बैठक की ओर जाने से मना किया जाने लगा, न जाने कब कितनी गर्दों फैला दें। दीदी के मन में एक विशेष उल्लास था, एक विशेष खुशी थी। इन्तज़ार की घड़ियाँ हमेशा की तरह अपनी रफ़्तार से लापरवाह हो जाती हैं।

रघु से पहले उसका तार आया, आने की सूचना लेकर ? कोई खास बात नहीं थी। घर में चर्चा होने लगी रघु की देखरेख का भार किस पर सौंपा जाए। यह काम दीदी कर नहीं सकती थी जेठ का रिश्ता था। रमा छोटी थी। रत्ती वैसे भी जानती थी यह ज़िम्मेदारी, उसी पर आकर अटकेगी और हुआ भी यही। रत्ती की बढ़ती हुई उम्र का एहसास भी किसी को नहीं हुआ क्योंकि रघु उससे पन्द्रह साल बड़ा, शादीशुदा, एक बच्चे का बाप था। ऐसा न होता तो शायद जवान हो रही बेटियों के घर में उसकी पैठ न हो पाती।

दो चार दिन सकोच में निकल गए। रघु के पास घूम-फिरकर कहने के लिए सिर्फ़ एक बात थी, 'आपके रोने से तो उस दिन लग रहा था गंगा में बाढ़ आ जाएगी।'

पहली बार रघु की बात सुनकर रत्ती चुप रह गई थी। दूसरी बार से पलटकर जवाब देने लगी 'बाढ़ आई तो नहीं।'

'मैंने आपको चुप न कराया होता तो आ जाती।' रघु के होठों पर उस दिन भुवन मोहिनी मुस्कान खेल गई थी।

'आ भी जाती तो आप डूबते नहीं।' रत्ती की हाज़िरजवाबी पर रघु पहली बार कायल हुआ।

'डूबता तो मैं वैसे भी नहीं, मुझे तैरना आता है।'

इतनी कम उम्र में तर्क पेश करनेवाली रत्ती शायद पहली बार रघु के सामने चुप हो गई थी। रघु की बात का कोई जवाब उस दिन नहीं सूझा तो उठकर चली गई। लेकिन दोनों की बातचीत का सिलसिला कुछ जमने लगा। रघु के आने जाने का हिसाब रत्ती रखने लगी और शायद रघु यह बात समझने भी लगा।

रघु नई नौकरी पर बहाल कर लिया गया। गाड़ी लेकर आता . .

सवारियों का टिक्ट चेक करना। तब यह नौकरी कितनी बडी लगी थी । रघु डयूटी पर जाता तो रत्ती उसका कमरा, उसका सामान ठीक कर आती। वापस आती तो चाय-पानी के लिए पूछनी, खाना खिलाती। साली जीजा का सामान्य रिश्ता कायम हो गया था।

यह रिश्ता असामान्य कब हुआ, रत्ती किसी एक जगह मन नही टिका पाती। वही सुबह बार बार जेहन म उभरती है जब रघु ने पानी मागा था। शायद रात को पानी रखना वह भूल गई थी। पानी का गिलास लेकर हाजिर हुई तो रघु की आखें उसपर ऐसी टिकी जैसे पानी की फर्माइश किसी और न की हो।

रत्ती न हाथ आग बढाया, 'आपने पानी मागा था।'

रघु ने रत्ती क हाथ से गिलास लेकर एक सास म खाली कर दिया। जब वह गिलास लेकर जाने लगी तो रघु ने उसका हाथ पकड लिया, 'दो घडी बैठने का इसरार कर सकता हू।

शायद रात चादनी थी। पश्चिम की ओर ढलकर चाद फीका पड गया था। दिन की रोशनी का एहसास जागने लगा था। हवा म एक खास तरह की खुशबू थी। रत्ती दीवान के किनारे सिमटकर बठी तो उसका दिल धडकने लगा था।

'एक बात कहू, बुरा ता नही मानोगी ?' रत्ती का एक हाथ अब भी रघु के हाथ मे था। वह समझ तो नही पाई कि रघु उससे क्या कहना चाहता है लेकिन कही से वह अवश होती जा रही है ऐसा उसे महसूस हुआ। अपना हाथ छुडाने की उसने कमजोर सी कोशिश की भी लेकिन रघु की गिरफ्त कुछ और बढ गई, न जाने क्यो तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो। कितने दिनो से यह बात तुमसे कहना चाहता था। बुरा ता नही मान रही ?'

'मेरा हाथ छोड दीजिए, रत्ती की आवाज कापने लगी थी।

और अगर न छोडू ?'

रत्ती की अधमुदी आखें रघु की आखो से मिली, उसकी चेतना कहीं लुप्त होने लगी।

'मुझसे डरो मत रत्ती तुम्हारे साथ कोई ज्यादती नही करूगा।

बहुत दिनो से एक वजन है जिसे आज तुम्हारे सामने हल्का करना चाहता हू। तुम्हारी दीदी के ब्याह म तुम्ह देखा था, अनेक चेहरो मे एक सिफ एक चेहरे पर मेरी आखें टिक गई थी। परदे के पीछे से झाकती हुई उन तमाम आखो मे से सिफ इन तुम्हारी दो आखो की भाषा मुझे अपनी लगी थी, फिर तुम भीड मे गुम हो गइ। मेरा मन उसी दिन बेचैन हो उठा। मैंने बार बार इधर-उधर देखा। मैं जानना चाहता था तुम कौन हो पता नही क्यो मैं जानता था तुम्ह लेकर बेचैन होन का हकदार मैं नही हू फिर, एक प्रवाह था जिसे रोक पाना मेरे लिए असभव होने लगा। उस दिन तुम्ह इतना रोते देखा तो रोक नही पाया तब से लेकर आज तक न जाने क्या क्या सोचता रहा हू।'

रत्ती सारी बात उस दिन भी नही सुन पाई थी। बडे जीजा जी के नाम पर एक झुरझुरी का एहसास उसे होने लगा था उन्हे छकान की बात वह सोच सकती थी रुई की पकौडिया बनाकर नाश्ते मे परस सकती थी, एक सीमा तक हसी-मजाक भी कर सकती थी लेकिन इस तरह की बाता का सदभ उसके पास नही था।

रत्ती जानती है एक झटके मे बात उसी दिन खत्म हो सकती थी। वह हाथ छुडाकर चल देती, रघु फिर कभी कुछ न कहता। वहा रहता या चला जाता रत्ती पर उसकी परछाईं भी न पडती

लेकिन रत्ती क्या ऐसा कर सकती थी? रघु की पुष्ट हथेली मे दुबका उसका हाथ उसका अपना कब रह गया था, कितना सुख, कितनी सुरक्षा, कितना सुकून था उसकी नजदीकी मे कितना आश्वासन था उसकी बातो मे। इनका एक जर्रा भी तो किसी ने नही दिया था उस दिन तक। रत्ती को उस दिन पहली बार समझ मे आया कि रघु से उसकी पहचान बहुत पुरानी है उस दिन उसे रोता देखकर वह यूही नही चला आया था उसके पास। बात वैसे दुस्साहस की थी लेकिन लडके वालो की सवेदना मानकर रघु से लोग कितना प्रभावित हुए थे —'कितनी माया ममता है घरवाले अच्छे मालम पडते हैं घर अच्छा हो तो गुजर हो जाती है एक लडका ही तो छोटा है दीदी के विदा होन से लेकर उनके वापस आने, और अब यहा रघु के हाथ मे अपना हाथ

देकर वैठे रहने के बीच कई बार वह उसकी ग्राहट पर चौंकी। भागकर बाहर ग्राई, रघु को ग्रपनी ग्रोर मुखातिब पाकर उसके दिल की रफ्तार बढी ग्रौर भी ऐसे ही बहुत कुछ हुग्रा है। नहीं, एक दिन मे, एक पल मे कभी कुछ नही होता। होनेवाले कुछ का बीज कही ऐसी जगह दब जाता है या दबा दिया जाता है कि जब तक ग्रकुरित होने पर उसके कल्ले नही फूटते कुछ पता नही चलता। ग्रौर एक दिन या एक पल म कभी कुछ होता है तो कम से कम वह रत्ती के साथ नही हुग्रा। बात सिफ इतनी हुई कि कुछ होन का सत्यबोध उसे बाद म हुग्रा। रत्ती का बस चलता तो वह उसी तरह हाथ मे हाथ दिए, दूसरे हाथ मे खाली गिलास लिए बठी रहती, लेकिन मर्यादा ग्राडे ग्राई या रघु की गिरफ्तर ढीली पड गई रत्ती उठने लगी।

'ऐसे नही रत्ती, कुछ कहकर जाग्रो।" रघु की ग्रावाज मे कितनी मिठास थी। उसने उठती हुई रत्ती को फिर से बिठा लिया था।

रत्ती क्या करती। रघु की हथेली म गिरफ्तार ग्रपने पखेरू जैसे हाथ की ग्रोर देखा, पलकें फिर भारी होने लगी थी।

'तुमने मेरी बात का बुरा तो नही माना ?' रघु ग्राश्वासन चाहता था।

रत्ती ने सिर हिलाकर 'ना' की ग्रोर हाथ छुडाकर खाली गिलास लिए ग्रदर भाग गई। उसके पर हवा मे तिर रहे थे, मन ग्रासमान मे उडा जा रहा था।

उस दिन से रत्ती बदल गई। सहेलिया के बीच बठी बठी ग्रचानक उठ जाती, ग्रकेले मे बठना या चुपचाप ग्राख बद कर लेट जाना उसे ग्रच्छा लगने लगा। कभी कभी ग्रपने ग्राप ही जी मुस्करा पडता ग्रास-पास देखकर कोई कुछ पूछ बठता तो रत्ती एकदम घबरा जाती। एक ही बार म किसी की बात न सुनना उसकी पुरानी ग्रादत थी। लेकिन तब वह न सुनने का बहाना करती थी। ग्रब सचमुच उसे सुनाइ नही पडता था उसकी ग्राखा मे चौबीसो घटे एक ही छवि उजागर रहने लगी—पलटकर सवारे गए घुघुराले बाल, काली घनी भौंहे, चौडे गेहुग्रा चेहरे पर हमेशा सजग रहनेवाली काली बडी ग्राखें, उनमे तैरते

हुए लाल डोरे—रत्ती का अछूता मन इन लाल डोरो को समर्पित हो गया। आज तक रत्ती ने वसी आखें दुबारा नही देखी। न जाने कौन सा जादू था रघु की उन अलमस्त आखा म

रत्ती का मन पढने-लिखने से उचट गया लेकिन किताबें उसके सामने फिर भी खुल रही। चीटो की तरह काले काले अक्षरा के बीच रघु का चेहरा कब उभर आएगा रत्ती नही जानती थी। उसे आज भी ताज्जुब हाता है कि घटा तक एक ही पन्ना खालकर बठे रहन की उसकी बेखुदी पर किसी का ध्यान क्या नहीं गया

रघु के प्रति अपनी जिम्मेदारिया वह निभाती रही। किसी बात पर दोनों का खुलकर हसना या आपस मे मजाक करके एक दूसर को छेडना अपन आप कम हो गया। रत्ती क्या करती? पहले की तरह चहकना, शरारतों की तलाश मे नई-नई योजनाए बनाना अब उसके बस म नही था। रघु कभी सामन पडता तो उसकी आखो पर बोझ बढने लगता, खिल पडने को आतुर उसका तन-मन एक अजीब सकोच से सिमटन लगता, कतरनी सी चलनेवाली उसकी जुबान पर ताला जड जाता। कभी-कभी मन की बचैनी इतनी बढ जाती कि रघु की नजरो से बचकर दूर किसी कोन मे वह रघुमय हो जाना चाहती। कितना सुख, कितना चैन था बेखुदी के उस आलम मे। लेकिन सुकून आज तक कभी टिकन के लिए आए हैं? बेचैनी हाथ-पैर फैलाकर जितनी तजी से बढती है सुकून उतनी ही जल्दी दुबकने लगते हैं।

हवा मे तिरने वाले उसके पैर धीरे धीरे जमीन की ओर मुखातिब होन लग। आसमान मे उडने वाला उसका मन यथाथ की चट्टानो क नजदीक आने लगा। सुख-दुख के अहसास से परे उडे जा रहे रत्ती के दिन धीरे धीरे भारी होने लगे।

4

रत्ती मे हानवाले परिवतना की ओर सबसे पहले जीजा का ध्यान गया।

नौकरी पर आने के कुछ ही महीनों बाद रघु ने जीजा को किसी बहाने बुला लिया था। तभी दीदी से उनकी मुलाकात भी करा दी गई थी। जीजा अब आने-जाने लगे थे। दीदी से उनकी मुलाकातें सामान्य हो गई थीं। जब आते, दोनों की दिनचर्या बदल जाती। घर के काम छोटी बहनें मिल जुलकर करने लगतीं। दीदी जीजा के लिए विशेष कुछ करती या उसके पास बैठी रहती, कमरे का दरवाज़ा भेड़ कर दोनों न जाने क्या कहते सुनते अंधेरे से जी ऊब जाता तो घूमने चल जाते सिनेमा जाते।

एक बार दीदी जबदस्ती रत्ती को भी अपने साथ ले गईं। रत्ती को जीजा से कोई चिढ़ हो ऐसी बात नहीं थी, लेकिन उस दिन उसका जाने का बिलकुल मन नहीं था। रास्ते भर मुंह फुलाए रही। जीजा ने कई बार उसे छेड़ने की कोशिश की लेकिन रत्ती जब वहां हो तब तो किसी बात का उसपर असर पड़े। जीजा ने दीदी के कान में कहा था, 'रत्ती बड़ी तेजी से जवान हो रही है।'

'हां, ठीक तुम्हारी तरह।' दीदी मुस्कराई थी।

बात इतनी धीमी नहीं कही गई थी कि उसे सुनाई न पड़ती। उसका मन संकोच से वहीं गड़ जाने को हुआ। दीदी पर उसे बेहद गुस्सा आया। जीजा का लेहाज न होता तो वह बीच रास्ते से लौट आई होती।

दूसरे दिन पड़ोस वाली भाभी दीदी से मजाक कर रही थी, 'खुदा जब हुस्न देता है नज़ाकत आ ही जाती है।'

हुस्न तो खुदा ने आजकल रत्ती को दिया है और नज़ाकत भी उसी की देखने लायक है। न जाने कहां से टपककर जीजा भी उनकी बातों में शामिल हो गए थे।

रत्ती वहां से उठ गई। ये बातें उसे बड़ी घटिया, बड़ी सस्ती लगीं। रघु ने तो आज तक ऐसा कुछ नहीं कहा उससे। कहां है रघु? कहां है उसकी वह भुवन मोहिनी मुस्कान। अंधेरे को चीरती हुई रघु की आंखें उसके सामने आकर क्यों नहीं ठहर रही हैं? रघुमय हो जानेवाला अपना अकेलापन उसे इतना अजनबी क्यों लग रहा है? उसका सुख,

उसका सुकून लेकर रघु कहा गया ?

रत्ती की ग्राखें बेमौसम बरसात की तरह झरने लगी थी। जिस तिनके का सहारा लेकर रत्ती ज़िन्दगी का समदर पार करने चली थी वह अचानक उसके हाथ से छूट गया। रत्ती के मन म पहली बार यह एहसास जागा कि रघु एक विवाहित पुरुष है ग्रौर उसके गिर्द जो सपने ग्रस्तित्व म ग्राने लगे हैं उन्ह एक दिन टूटना है।

रत्ती के मन मे हुए इस परिवतन के लिए ग्रगर किसी घटना का ज़िम्मेदार ठहराया जाए तो वह महज इतनी थी कि रघु गाडी लेकर बनारस गया था, वही स दो दिन के लिए ग्रपने गाव चला गया। ग्रपने जाने की खबर तार स उसने बाबूजी को दी थी ग्रौर वापस ग्राने की तारीख भी बता दी थी। रत्ती के दिमाग ने कई बार यह सोचा कि हो सकता है कि रघु का यह कायक्रम ग्रचानक बन गया हो, ग्राखिर बनारस ग्रौर जौनपुर की दूरी कितनी है हो सकता है गाव का कोई ग्रादमी मिल गया हो, उसने कोई एसी-वैसी खबर दे दी हो लेकिन इस तरह की कोई भी बात रत्ती को बोध नही दे पाई।

रघु जब वापस ग्राया तो रत्ती बुझी बुझी दिखाइ पडी। रघु की ग्राहट पर मन का उद्वेग दबाकर भाग ग्रानेवाली रत्ती ग्रब जहा होती वहा जम जाती। सामने पडती ता उसके हाथ पैर मे तर जानेवाली ठडक रघु महसूस कर लेता। उसकी बुझी हुई ग्राखो के ग्रधेरे को चीरकर मन का उद्वेग पढ लेना रघु के लिए मुश्किल नही था। रघु के प्रति रत्ती की ज़िम्मेदारी मे कोई फक नही पडा लेकिन पन्द्रह दिन बीत गए एक पल के लिए भी दोनो की एकात मुलाकात नही हो पाई।

रत्ती का मन उस दिन टुकडे टुकडे होकर बिखर जाने के लिए बेताब होने लगा। दीदी ने जीजा की चिट्ठी उससे ज़िद करके पढवाई थी। ग्रपना सुख किसी के साथ बाट लेने के लिए दीदी बेकरार हो उठी थी काश ग्रपने सुख मे ग्रादमी इतना पागल न होता, न ग्रपने दुख की लकीरें पीट पीटकर दूसरो का चैन हराम करना उसकी ग्रादत होती। रत्ती के मन मे उठ रहे तूफान का ग्राभास भी दीदी को नही हुग्रा। बडे प्यार स बहन के गले मे बाहें डालकर बोली, 'देख रत्ती, तेरे जीजा ने

कितनी प्यारी चिट्ठी लिखी है देख देख, ये आखिरी लाइनें तेरे ही लिए तो हैं।'

जीजा ने अपने पत्र की अंतिम पंक्तियों में रत्ती का परिवर्तन दोहराया था, कि अब वह जवान होने लगी है, उसका ध्यान रखना चाहिए।

दीदी गदगद होकर खत का जवाब देने बैठी। रत्ती किसी काम का बहाना बना कमरे से बाहर चली गई। मन का तूफान अब बवंडर बनने लगा था। समय का एहसास जाता रहा। कुए के बगल वाली शरीफे की नर्सरी मे जैसे वह अपना खोया हुआ बचपन ढूंढने पहुंच गई। मां या बाबूजी से जब डांट पड़ती, रत्ती जब चारों ओर से उपेक्षाओं की मार सहते-सहते थक जाती तो यहीं आकर बैठा करती किनारे के कुछ पौधे शायद सुबह ही बेचे गए थे। मिट्टी खोदी गई थी। रत्ती उस खाली जगह मे दुबककर ऐसे बैठ गई जैसे उसपर से गुज़रने वाले बवंडर ये नन्हें हरे-हरे पत्ते झेल लेंगे। यहीं कहीं चिड़ियों के लिए वह दाना पानी रख जाया करती थी। यहीं कहीं बैठकर वह चिड़ियों के अंडों के बढ़ने फूटने का हिसाब लगाया करती थी। पीछे वाले शहतूत के पत्तों मे छिपकर उसने कितनी दोपहरी गुजारी थी। सामने यहां से वहां तक फैले हुए अमरूद के पेड़ उसने कितनी बार गिने थे।

माली कहता उसे गिनती नहीं आती। पेड़ों की कुल संख्या पांच सौ थी लेकिन हर बार रत्ती की गिनती चार सौ निन्यानवे पर पहुंचती और सारे पेड़ खत्म हो जाते। इन्हीं पेड़-पौधों में ही उसका बचपन खो गया था। इन्हीं डालियों और पत्तों मे उसका किशोर मन झूमता रहा था वह बेफिक्री वह बेबाकी जरूर होगी यहां कहीं। रत्ती उसे पाना चाहती थी उसके दिमाग की नसें झनझना रही थीं मन का तनाव टूट पड़ने को आकुल हो गया था।

नर्सरी के दूसरे छोर पर गौरैयों का एक जोड़ा शरीफे के एक नरम सपाट पौधे पर घोंसला टिकाने में जुटा हुआ था। दो पत्तों की डंठलों के सहारे बार बार तिनके टिकाए जा रहे थे। हर आठ दस तिनकों के बाद हवा मे झूमते हुए पौधे तिनकों का महल ढहा कर देते, कुछ तिनके

खिसककर नीचे आ जाते, फिर उन्हें उठाया जाता। यह सिलसिला न जाने कब से चल रहा था। टिकने से पहले रत्ती की निगाहें कई-कई बार यहां से लौट गई थीं। पल भर के लिए रत्ती अपनी जद्दोजेहद से कट गई। चिड़िया फुर से उड़ती तो रत्ती की नज़र भी उसके साथ उड़ जाती फिर तिनके लेकर वापस आती। घोसले का निर्माण रत्ती की नज़रों के सामने होता रहा और रत्ती का मन एक अपूर्व अभोगी खुशी के कतरे समेटने में अपने-आपको पूरी तरह भूल गया।

अचानक कोई चीज़ रत्ती के पैरों के पास आकर गिरी। चिड़िया के निर्माण सुख में डूबा उसका मन धरती का कड़ापन महसूस करने लगा। आंखें तिनकों को रास्ते में ही छोड़कर वापस आ गईं। कागज़ का एक मुड़ा-तुड़ा छोटा-सा पुलिंदा सामने पड़ा था। हाथ उसे उठाने के लिए आगे बढ़े इससे पहले नज़र चारों ओर घूम गई। दोपहर के सन्नाटे में जूतों की धीमी पड़ती चरमराहट रत्ती के लिए अनजान नहीं थी।

कांपती उंगलियों से उसने कागज़ का पुलिंदा उठा लिया। दिल की तेज़ होती रफ्तार की ओर उसका ध्यान बिल्कुल नहीं था। कुछ देर पुलिंदा मुट्ठी में दबाए वहीं बैठी रही लेकिन उसका मन चिड़िया के साथ फिर नहीं उड़ पाया, न उसकी आंखें गिरते-उठते तिनकों को ही देख पाईं। मुट्ठी की जागीर वक्ष की गहराइयों में छिपाकर वह उठ खड़ी हुई। उसके अचानक उठ जाने की आहट पर उड़ गई चिड़िया की ओर भी उसका ध्यान नहीं गया।

वह कमरे में आई। दीप्ती पत्र के सम्मोहन में अभी भी खोई हुई थी। रत्ती ने अपने कपड़े उठाए और नहाने जा रही हो, ऐसे गुसलखाने में घुस गई। दरवाज़ा अंदर से बंद करते-करते वह बेसुध होने लगी—पलटकर संवारे गए घुंघराले बाल, काली घनी भौंहें चौड़े गेहुंए चेहरे पर हमेशा सजग रहनेवाली काली बड़ी आंखें, आंखों में तैरते लाल डोरे उसे आसपास की असंख्य भुजाओं की तरह अपने में समेटने लगे। दरवाज़े की चिटखिनी पर उसका हाथ जम गया, आंखें धीरे धीरे बंद होने लगीं, सिर दरवाज़े से टिक गया।

रत्ती को याद नहीं कितनी देर वह उसी तरह खड़ी रही फिर बैठ गई। वक्ष की गहराइयों से मुट्ठी की जागीर कब बाहर आई और कब उसकी निगाह पहले शब्द से आखिरी शब्द तक फिसल गई कितनी बार कितनी जगह रुकी, कितनी बार एक ही शब्द आखें दोहराती रहीं।

मा के नाम लिखी गई बाबूजी की चिटिठ्या रत्ती ने कई बार चोरी से पढ़ी थी। हर चिटठी का एक ही सबोधन, प्यार और अधिकार की मुहर जैसा। रघु ने उसे वही सबोधन दिया था।

जीजा की हर चिटठी का सबोधन अलग होता था। दीदी कहती, "पगली, इससे प्यार की गहराई का पता चलता है। प्यार म गहराई जितनी होगी सम्बोधनो के रत्न भी उतने ही होगे, एक से एक सुन्दर, सुगढ, चमचमाते हुए।'

शायद दीदी ठीक कहती हो लेकिन मा के लिए प्रयुक्त बाबूजी का एक सबोधन रत्ती को सबसे अच्छा सबसे बडा और सब से भारी लगता।

रघु का एक सबोधन रत्ती के मन का सारा मैल धो गया। रघु ने उसकी अनायास उभर आई खामोशी का कारण पूछा था। अनजाने म उससे कोई भूल हो गई हो तो रत्ती की ओर से वह सजा का हकदार था वह रत्ती को चाहता है, उसे अपनी जिन्दगी मे सम्मानित करने की महत्त्वाकाक्षा है उसकी। अपने विवाहित होने के यथार्थ को वह नजर-अदाज नही कर रहा है, सबको मद्दे नजर रखते हुए वह रत्ती को पाना चाहता है। अपनी पत्नी के नाम घर की जमीन जायदाद करके वह खुद को मुक्त कर लेगा, उसकी पत्नी का स्वास्थ्य वैसे भी ठीक नही रहता। रत्ती का हाथ थामने के बाद से उसकी जिन्दगी का एक एक पल रत्ती की नजर से गुजरेगा और अगर रत्ती को यह सब मजूर नही तो वह रत्ती का शहर, अपनी नौकरी सब कुछ छोडकर चला जाएगा। रत्ती की सुख शान्ति की दुआए मागेगा। रत्ती की मर्जी के खिलाफ कभी कुछ नही करेगा। अगर वह चाहेगी तो उस लेकर जनमी आई इच्छाओ का खून भी कर देगा उसकी जिन्दगी उसका भविष्य, अब रत्ती के हाथ मे है वह जानता है रत्ती उसके लिए अमूल्य निधि है जिसे खोकर

जिन्दा रहना जीतेजी मर जाने के समान है लेकिन अगर रत्ती चाहे तो जिन्दगी की लाश भी वह ढोएगा। अचानक दो दिन के लिए घर चले जाने का कारण बताते हुए उसने लिखा था, मा की बीमारी का बहाना कर मेरी श्रीमती जी ने याद किया था वह बात बाद मे पता चली। अंत मे उसने सब कुछ रत्ती पर छोड दिया था। रघु को कोई जल्दी नही थी जितना समय चाहे रत्ती सोचने विचारने के लिए ले सकती है बस उसे इतना बता दे कि कितना समय वह लेगी ताकि रघु शान्त चित्त अपना काम और उस दिन का इन्तजार करता रहे। एक सिर्फ एक बार कुछ लमहो के लिए उससे मिले। अपने मुह से कह दे वह क्या चाहती है।

दरवाजे पर थाप पडी तो रत्ती की तद्रा टूट गई। बाहर से दीदी पूछ रही थी, 'सो गई है क्या रत्ती, कितनी देर और लगाएगी ?'

'बस दीदी अभी आई।' जसे तसे नहाकर रत्ती बाहर निकली तो दीदी तयार खडी थी चौराहे तक जाने के लिए, हाथ म जीजा की चिटठी थी। कहने लगी, 'अभी डाल दूगी तो तीन बजे वाली डाक से निकल जाएगी। रत्ती ने बाल ठीक किए पैरो म चप्पल फसाई और दीदी के साथ चल पडी।

उस शाम लाख चाहने पर भी रघु को खाना खिलाने रत्ती नही जा पाई। सम्बधो पर साधारणता का मुखौटा लगाना अब उसके लिए सभव नही था। रमा ने बताया बडे जीजाजी ने आज बिल्कुल खाना नही खाया कह रहे थे सिर म दद है। कई बार रत्ती के जी म आया उसके सामने जाकर खडी हो जाए। उससे कह, एक कागज पर काला, सफेद करके जो तुमने भेजा है उसे एक बार दोहरा दो। एक बार अपनी जुबान से कह दो कि रत्ती मे ऐसा क्या है जिसने वह सब लिखने के लिए तुम्ह विवश कर दिया तुम, तुम्हारा घर तुम्हारी बीवी, तुम्हारा बच्चा सब कुछ बहुत बडा है। रत्ती के कमजोर हाथो मे इतनी बडी जिम्मेदारी मत सौंपो। या उसे कधो से झिझोड दे पूछे, यह तुमने क्या किया रघु ? रत्ती से उसकी सुकून-भरी रातें क्यो छीन लीं। नन्ही-सी जान लेकर अब वह कहा जाए, क्या करें तुम्हारी आहट भर से

जिस्म का एक-एक कतरा जम सा जाता है हिलना डुलना तो दूर की बात है और कुछ कहना ? तुम्हें देखते ही जबान तालू से चिपक जाती है, आवाज गुम हो जाती है

रत्ती का मन हुआ एक बार बस एक बार अपना कांपता हुआ हाथ रघु की चौड़ी हथेली पर रख दे। चुपचाप उसके सामने बैठी रहे। या फिर साफ साफ कह दे कि रघु उसके सुकून के लिए किसीसे दुआ की भीख न मांगे। वह समझ गई है कि सुकून जैसा अब कुछ उसके नसीब में नहीं है। दूसरों को तबाह करके किसीको चैन नहीं मिलता यही बात तो इमा बार-बार अपनी कहानियों में उसे समझाती रही है।

लेकिन ये सभी ऊहापोह उसके दिमाग में ही हुए। अपनी ढीली-ढाली चारपाई पर पत्थर बनी वह रात भर पड़ी रही। वह जानती थी बगल के कमरे में पड़ा रघु पहलू बदल रहा होगा। दोनों कमरों के बीच एक ही दीवार का तो फासला था। यदि उस दीवार में एक सुराख होता तो रत्ती झांककर देखती। रघु के कमरे में पहुंचने के लिए बाहर की दालान फिर पूरा आंगन पार करके बाहर निकलना पड़ता, तब वह बैठक के दरवाजे तक पहुंचती जहां रघु को टिकाया गया था।

रात जैसे तैसे बीत गई। विश्वविद्यालय की घड़ी हर पन्द्रह मिनट पर समय का एलान करती रही। दीदी उस रात आराम से सोई थी। मां बाबूजी का कमरा दूसरी ओर था। उनके सोने जागने का पता बच्चों को कम ही चल पाता। बैठक खाली रहती तो कभी-कभी बाबूजी वहां सो जाते, लेकिन उन दिनों तो रघु टिका हुआ था। बाबूजी बैठक की ओर तभी जाते जब उन्हें रघु से कुछ बातचीत करनी होती। दो छोटी बहनें मां के साथ सोती, बाकी सब एक कमरे में। रत्ती का बिस्तर जिस कमरे में था उसमें दीदी नाम भर को रहती। उनका असली कमरा तो गोदाम वाला था। जीजा से उनकी मुलाकातें गोदाम में ही होतीं। उनका सामान उसी कमरे में रहता रत्ती अगर चाहती तो सबकी नजर बचाकर कभी भी रघु के कमरे में जाकर उसकी पूछी हुई बातों का जवाब दे सकती थी लेकिन उसके पैरों में लाज की बेड़ियां जकड़ गई थीं।

दूसरे दिन सुबह रघु छः बजे ड्यूटी पर चला गया। सके जूते की

चरमराहट उनीदी रत्ती के कानो तक भी पहुची थी। सुबह की चाय पता नही रघु को कौन दे आया था। रोज उसे चाय दे आने के लिए उठा दिया जाता, उस दिन वह उठाए जाने का इतजार ही करती रही और रघु चला गया। दीदी रघु से परदा करती थी, इसलिए उनके चाय दे आने का सवाल नही उठता था। रत्ती ने सुबह उठकर छोटी बहनो के हाथ मुह धुलवाए, बाल सवारे फिर घर की सफाई मे लग गई। दीदी रसोई मे घुसी तो सुबह के नाश्ते मे लेकर दोपहर का खाना तैयार करके ही बाहर निकली। काम मे लगी हुई रत्ती सोचती जा रही थी रघु ने अपनी खामोशी का क्या मतलब लगाया होगा। अदर के सारे कमरे, दालान, आगन की सफाई करके रत्ती जब बैठक मे पहुची तब दस बजने वाले थे।

बाबूजी साढे नौ बजे दफ्तर चले जाते। छोटी बहनें पास के स्कूल मे डाल दी गई थी, आठ बजे चली जाती। तिमाही इम्तहान के बाद रत्ती को रोक लिया गया था क्योकि सभी परचो मे उसके नम्बर कमाल के थे। पडित जी ने बाबूजी को सुझाया था, लडकी का मामला है, पढने लिखने मे होशियार है, स्कूल जाकर साल बरबाद करेगी इससे अच्छा दसवी का प्राइवेट इम्तहान दे देगी साल-भर मे ट्रेनिग हो जाएगा, कमाने लायक हो जाएगी का शादी ब्याह मे कोई झझट नही होगा। इस तरह के सुझावो से बाबूजी का विश्वास जीता जा सकता है। दीदी के साथ पडित जी रत्ती को भी पढाने लगे थे। दोनो बेटियो को पढाने के लिए फीस दूनी तो नही ड्योढी जरूर कर दी गई थी। पर कम थे तो कोई बात नही, पडित जी की दो जगह जाने की जहमत बच गई थी। शाम की चाय के साथ कुछ न कुछ नाश्ता भी मिल ही जाता। कोई त्योहार पडता तो रात के भोजन की व्यवस्था भी हो जाती। पडित जी खुश थे।

छोटे बच्चो के लिए कुछ कपडे खरीदने थे। दीदी को लेकर मा कटरा चली गई थी। रत्ती ने भी सुबह के सारे काम निपटा दिए थे बस एक बैठक रह गई थी। नियम कायदे के हिसाब से मन चलता तो रत्ती यह काम भी देखते देखते निपटा देती, फिर नहा धोकर

उठाती, किसी पेड के नीचे जाकर बठती, चिडियो का तिनके चुनना, चोचे लडाना देखती या किताबो के बीच से उभरती रघु की [तस्वीर से बात करती। लेकिन बैठक मे दाखिल होते ही उसने भाड़ू एक ओर फेंक दी। अदर से दरवाजा ब द कर दिया। रघु उस दिन बिस्तर ठीक करके गया था। करीने से लगाए हुए उस बिस्तर पर लेटकर रत्ती ने रघु की चिटठी निकाली और इतमीनान से पढने लगी प्रिय ' इस एक शब्द के आगे उसे कुछ भी दिखाई नही पडा। अगर बताने लायक बात होती तो रत्ती दाव से कह सकती थी कि उसे पूरी चिटठी कठस्थ थी और जब सब कुछ कठस्थ था तब कोई पढे क्या ? दरअसल जादू कुल मिलाकर इस एक शब्द का था। बडी देर तक रत्ती की निगाह इसी एक शब्द पर टिकी रही फिर दष्टि छोटी होते होते बन्द हो गई। एक भीनी सुग ध चारो ओर से रत्ती को अपने म समेट रही थी। रत्ती इस सुगन्ध से परिचित थी। वह जानती थी रघु काई खुशबू इस्तमाल नही करता। वह खुशबू बाजार से खरीदकर लाई जानेवाली थी भी नही। बेहद नजदीक स रत्ती को इस खुशबू का एहसास उस दिन हुआ था जिस दिन उसका हाथ पकडकर रघु ने उसे इसी दीवान पर बिठा लिया था।

कितना अच्छा होता उसी दिन उसी क्षण रत्ती की जिन्दगी खत्म हो गई होती उसका स्वग दाजख की आग मे तो न जलता। रघु का लेकर रत्ती के मन म उठनेवाली हूक मर्यादा की हजार परतो के नीचे दब चाहे गई हो, खत्म तो नही हुई। रघु की चिटठी हाथ म लिए, उसकी खुशबू मे डूबकर उसकी सासें अगर अपना सफर उसी दिन खत्म कर देती तो आज की यह चुभन तो न होती। रघु अपनी बीवी की आखा का नूर बनकर जीता या उसके वियोग मे मर जाता, वह देखन तो न आती।

दरवाजे पर हल्की थाप पडी तो रत्ती सपना की दुनिया म धरती पर आ गई। बच्चे तीन बजे से पहले नही आ सकती, कटरा से मा और दीदी का लौटना बारह एक स पहले असभव था। बाबूजी इस तरह कभी दफ्तर स नही आते। रत्ती को लगा कही भ्रम तो नही हुआ।

दस्तक तभी दोहराई गई। दरवाजे की दरारो से किसीके बाहर खडे होने का एहसास भी हुआ। उसने हाथ की चिट्ठी हडबडी मे मोडकर ब्लाउज मे छिपा ली। दिल रफ्तार पकडने लगा था। धीरे से दरवाजा खोलकर नजर उठाई, सामने रघु खडा था।

आखो के लाल डोरे और लाल हो आए थे। पलटकर सवार गए घुघराले बाल हवा मे तितर बितर हो गए थे। रत्ती का एक हाथ अब भी दरवाजे की चिटखनी पर था। लेकिन उसके पैरो को लकवा मार गया। आखो के सामने की धरती घूमने लगी। न जाने कब तक दोनो उसी तरह खडे रहे खामोश चित्रलिखित

तब रघु एक कदम बढा। रत्ती के पैर हल्के से लडखडाए आखें रघु की गिरफ्त से छूट गई। दूसरे ही क्षण रत्ती रघु की बाहो मे थी

आज भी रत्ती आखें बद कर उन बाहो का दबाव महसूस करती है। रघु की बेसब्र धडकनें उसके कानो म कद हो गई हैं। काश, वह एक पल रत्ती के हिस्से मे आया ही न होता

अमरूद के बगीचे के दूसरे छोर वाले पेडो पर चढकर रत्ती का ममेरा भाई विजय जब बासुरी बजाता तो बाबूजी का हटर लेकर रत्ती उसे ढूढने निकलती। पेड के पत्तो मे छिपा विजय जब दिखाई पडता तो कडककर कहती, 'कितनी बार मना किया है विजय कि इस तरह छिपकर तू बासुरी न बजाया कर।'

'क्यो दीदी, सुध भूलने लगती हो।' विजय उछलकर नीचे आ जाता। रत्ती के हाथ मे हटर देखकर दो कदम पीछे हटता। रत्ती हाथ सीधा करती तो भाग लेता।

वही बेसुधी रत्ती का स्थायी भाव बन गई।

रघु दो दिन बुखार मे पडा रहा। रत्ती दिन रात उसकी सेवा म लगी रही। यह बात न उस समय किसीको खटकी, न बाद मे कभी इसकी चर्चा हुई। लकिन वही दो दिन रत्ती का वह सब समझा गया जो जिन्दगी भर कह-कहकर भी किसीको नही समझाया जा सकता।

× × ×

रघु की अपलक आखें अधेरे मे रत्ती के सामने आज भी उभरने

लगती हैं। रत्ती उनकी गहराइयों में डूबी है, लेकिन उसकी आखों के उभरते लाल डोरे ओक्टोपस की असख्य भुजाओं की तरह काट दिए गए हैं। अब रत्ती के लिए वहां कुछ नहीं। दोनों के बीच कई तरह की दूरियां हैं—चार सौ मील का फासला तो सिर्फ एक बात है

रत्ती की फूटी हुई किस्मत पर तरस खाकर पडोस वाली भाभी एक दिन भावुक हो उठी थी। उन्होंने बताया था रत्ती से अलग होकर रघु तीन साल एकदम विक्षिप्त रहा न खाने का ठिकाना न रहने का ठौर घरवालों के नाम पर तो जान लेने देने को तैयार रहता था झांसी वाला उसका दोस्त आया, कितने दिन उसके साथ रहा, रघु का हाल ये कि द्रौपदीघाट पर जाकर घंटों बैठा रहता, यार दोस्त ढूंढते रहते। आखिर न झांसी वाले दोस्त की बीवी न जाने कैसे मना कर ले गई। जाने कितने महीने वहां रहा। इसी बीच इलाहाबाद से उसका तबादला हो गया। वक्त सारे घाव भर देता है। बाद में घर वाले उसकी बीवी को पहुंचा गए। बेचारी सड रही थी। सारे बदन पर बडे बडे चकत्ते, पीप पड गई थी। रघु ने बडी सेवा की। उसके इलाज पर पैसा पानी की तरह बहाया अब उसके तीन बच्चे हैं।

रत्ती इन दूरियों को पाट नहीं सकती। रघु जैसे-तैसे व्यवस्थित हो गया है अब उसकी जिन्दगी में रत्ती की कहां गुंजाइश है। अगर हो भी तो रत्ती उसे कुबूल नहीं करेगी। कानून की दीवार तब भी थी जब रत्ती वयस्क नहीं थी। कानून की दीवार अब भी है क्योंकि रघु सरकारी नौकर है। जिस रघु के दिल की मलिका बनकर रत्ती ने जिन्दगी को समझा था अब क्या नहीं, रघु से रत्ती कट चुकी है, दोनों के रास्ते अलग हैं रत्ती अपना रास्ता ढूंढेगी, अपने लिए जगह बनाएगी एक बात तय है कि दूसरों के दिखाए हुए रास्ते पर अब वह नहीं चलेगी। मां के दूध की लाज उसने एक बार रख ली है। पिता की पगडी सलामत रहे इसलिए एक बार वह डोली पर भी बैठ चुकी है, अब उसे किसी की परवाह नहीं। शरीर का सौदा ही अगर उसकी नियति है तो वह मिट्टी की दीवारों पर रखे पुआल के छप्परों के नीचे नहीं करेगी जहां उस घर की लक्ष्मी कहकर डोली से उतारा गया था, जहां गीता के पहले

पाच श्लोक पढवाकर उसके पति ने उसे ग्रहण किया था
रत्ती के दिमाग की नसो का तनाव बढने लगता है। बाबूजी की
अक्ल पर अब उसे तरस आता है। इआ के पास आखिरी मुराद स्वरूप
उसे पटक तो दिया गया है। लेकिन बाबूजी के मन का भय अभी मरा
नही रत्ती अगर चाहे तो क्या यह चार सौ मील का फासला पाटा
नही जा सकता ? या रघु अगर रत्ती को ढूढने ही निकले तो यहा तक
नहीं पहुच सकता। किसीके दिमाग पर तो अकुश नही लगाया जा
सकता। रत्ती अपने भाग्य के विद्रूप पर मुस्कराती है उसे रोना कभी
नही आता।

काश, एहसास किसी मुनादी के बाद जागते या जानेवाले दिन
कुछ कहने की हालत मे होते। रत्ती कभी-कभी सोचती है रघु क्या
इतनी दुनियादार हो गया है

× × ×

शाम का झुटपुटा घिरने लगा तो रत्ती ने उठकर सझौती जला दी।
जलता हुआ दीया आचल की ओट देकर सारे कमरो मे बारी बारी घुमा
लाई फिर तुलसी के चौरे पर रखकर वही बैठ गई।

इआ किसीके घर से कडे पर आग लेकर हाजिर हुई, कडा बीच
आगन मे रखकर हाथ-पैर धोया फिर कडे की आग उठाकर रसोई घर
की ओर जाते जाते कहती गई, जैसा भी हो अपना घर अपना घर होता
है बेटी, बाप के घर कोई बेटी बसी नही है आज तक।'

वैसे तो इन बातो का सिलसिला रोज रोज का था, लेकिन उस
दिन रत्ती तिलमिला गई, 'बमन को अब है क्या इआ एक रोटी क्या
इतनी भारी पड रही है।' उसका गला भर्रा आया।

'रोटी किसे भारी पडती है पगली,' चूल्हे मे आग रख ऊपर से कडे
के कुछ टुकडे डाल इआ रत्ती के पास आ गई, 'लोक लाज भी तो देखना
है तेरी छोटी छोटी बहनें हैं।'

'उन्हीकी बात सोचकर तो बैठ जाती हू इआ वरना '

'छि छि कैसी बात करती है रत्ती मेरी बच्ची, भगवान तेरी
आत्मा को शाति दे।'

इश्रा रत्ती के लिए शान्ति प्राथना मे लग गईं। रत्ती अपनी स्मृतिया के खडड मे औंधे मुह गिर पडी ।

5

जीजा की आवाजाही कुछ ज्यादा ही बढ गई। उन्हे देखकर मा अब पहले की तरह खुश नही होती, न उनके स्वागत मे लपककर बाहर आती। बाबूजी के साथ कहा सुनी स्थायी रूप लेने लगी।

'मैंने पहले ही मना किया था कि आने जाने का सिलसिला मत बढाइए।' कोई भी बात होती तो छूटते ही बाबूजी मा के सामने यह वाक्य खडा कर देते।

'कभी कभार बुलाने का मतलब बाजार बसाना तो नही था।' मा अपनी झुझलाहट को भरसक दबाने की कोशिश करती।

'तो ना नुकुर क्या कर रही हैं भोगिए अब।

मेरे भोगने से आपकी छाती ठडी होती है तो भोगूगी, आज तक भोगती ही तो आई हू।

ऐसा मैं क्या कर रहा हू जिसे आप भोग रही हैं?' बाबूजी कडवा घूट पीकर भी मासूम बने रहते।

मा उस मासूमियत से जल जाती। बाबूजी जले पर नमक छिडकते भाग्य सराहिए कि मेरे जैसा सीधा सादा पति मिला वरना ।

वरना आज का यह झूमर कानो मे न झूलता या यह तिनखाब तन ढाकने का न मिलता, यही न ' मा एकदम औरताना लहजे पर बहुत कुछ कहने लगती। बाबूजी को शायद उनके आप्रवचनो मे आनन्द मिलता। बात दीदी से शुरू होकर न जाने कहा कहा घूम आती। बच्चे जहा तहा सिटपिट हो जाते या खेलने निकल जाते। एक रत्ती थी जो कोने अतरे कही न कही खडी रहती—उसे आज भी याद है मा बाबूजी की गरमा गरमी मे उसने तू तकार कभी नही सुना। बातें कितनी भी तल्ख होती हमेशा 'आप' से कही जाती।

मा की ओर से वसे तो हर काम के लिए दोषी बाबूजी थे, दीदी की बात चलती ता मा बाघिनी की तरह झपटती, 'ये सब किसके चलते हुआ। बेटी के जोग लडका देखा होता तो आज वह अपने घर होती।'

'कुछ दिनो मे बाल-बच्चे वाली हो जाती' बाबूजी बात से बात जोडत हुए कुछ गरम होते, 'ब्याह की जल्दी किसे पडी थी?'

'जल्दी का मतलब यह था कि गाय सी बेटी को बछडे से बाध दीजिए?'

'जल्दी जल्दी मे कभी काम खराब हो जाता है। मैं मानता हू चूक मुझस हुई। घर इतना अच्छा था, लोग इतने अच्छे थे मैंने सोचा दो चार साल मे लडका सयाना हो जाएगा',

'और आपकी बटी की उम्र ठहरी रहेगी' मा बाबूजी की बात काट देती, 'जब लडका जवान होगा लडकी बूढी होने लगेगी कौन-सा सुख मिलेगा उसे?'

'दो चार साल मे ऐसे ही कोई बूढा नही होता। लडका इधर पढ रहा है, इधर लडकी को पढाने की व्यवस्था कर दी है। अपनी उसी एक गलती को सुधारने की कोशिश मे लगा हुआ हू सारा गुड गोबर कर रही है आप',

'गुड गोबर तो हमेशा मैं ही करती हू मैंने तो सोचा था सयानी लडकी है मन एक जगह बध जाए तो भटकने का डर नही रहता। दम दिन ससुराल रहकर आई थी, उस निगोडी सास ने एक दिन का भी मेल मिलाप करा दिया होता तो मुझे दामाद को यहा बुलाने की क्या जरूरत थी।'

दो चार साल मेल मिलाप न भी हाता तो क्या हो जाता, लडका छोटा था, तब तक बडा हो जाता मेल मिलाप के लिए तो पूरी उम्र पडी है।'

'आपकी बुद्धि हमेशा ऐन मौके पर पथरा जाती है।' मा की आवाज सामान्य से तेज हो जाती।

'...मैं आपकी बुद्धि से काम करता हू।'

'काम करता हूं' मां बाबूजी के शब्द चबाने लगती, 'मेरी आपकी शादी हुई थी तो हमारी उम्र क्या थी ?'

आप तब सात साल की थी और मैं चौदह का।'

'हमारा गौना कब हुआ ?'

'सात साल बाद।'

'जब मैं पहली बार मां बनी तब मेरी उम्र क्या थी ?'

'पन्द्रह साल।'

आपकी बेटी अब कितनी बड़ी है ?'

'पता नहीं, शायद इस जून मे उसने अठारह पूरे कर लिए हैं।'

फिर भी आपकी अक्ल पथराई हुई है' मां कसला सा मुंह बना कर चुप हो जाती।

बाबूजी मूड में होते तो बात आगे बढती, वरना यहीं खत्म हो जाती। फिर समस्या का समाधान ढूंढा जाता। जीजा का बार बार आना कैसे रोका जाए। पढाई लिखाई के माध्यम से कई बार बात दीदी के सामने मां ने रखी थी। दीदी चुपचाप सुन लेती कभी मुस्करा देती मैं क्या करूं मां आप उन्हीको मना कर दीजिए।'

जिस दामाद को खुशामदें करके बुलवाया गया उसे साफ साफ मना करने का संकट दीदी खूब समझती थी, और शायद इसीलिए बात मां के सिर डालकर निश्चिन्त हो जाती। जीजा जब भी आते, दूसरी बार आने की तारीख तय करके जाते। दीदी उस दिन का इन्तजार करती। पढने लिखने में उनका मन बहलाना प्यास को ओस चटान के समान था। दीदी ने तो साफ साफ कह दिया था 'ढाई आखर' ही पढ गई तो मेरी जिन्दगी के लिए बहुत हैं कौन मुझे पढ लिखकर नौकरी करनी है।'

एक बार मां की बातो से तंग आकर उन्होने जीजा को आने के लिए मना भी किया था, 'इतनी जल्दी जल्दी आआगे तो पढाई का क्या होगा ?'

'पढाई भी उतनी ही जल्दी-जल्दी होगी।' जीजा की चचल आंखें दीदी के चेहरे पर टिक गई थीं।

म चली गइ । जात समय रत्ती ने दीदी की सूजी हुई आखें देखी थी। कितना रोई हागी दीदी

जीजा की बढती हुई आवाजाही को लेकर एक बार बाबूजी ने रघु से भी बात की थी बाबूजी की बात रघु ने बडी सजीदगी से टाल दी थी, 'दोना बडे हो गए हैं बाबूजी अपना भला-बुरा खुद देख लेंगे।'

बाबूजी चुप हो गए थे। कही वह रघु की बात से इत्तफाक भी करते थे। दबी जुबान मा से भी एक आध बार उन्होने कहा था 'इतने प्रेम, इतने आदर से बुलाया, अब दोनो का मिलना जुलना आपको बुरा क्यो लगता है।

बात तीखी थी। मा तडप उठी, 'आप सोचते है बटी दामाद के मिलने-जुलन से मैं जलती हू ?

जले पर नमक छिडकने के लिए बाबूजी उस दिन तैयार नही थे, इसलिए चुप रह गए। उन्ह मालूम था आधुनिकता के चक्कर मे मा ने दामाद को बुला तो लिया है। लेकिन उनका सस्कारी मन बटी दामाद की मायके म हुई हर मुलाकात पर चोट खाता है। 'जो चीज जहा की हो वही शोभा देती है' मा का तकियाकलाम बन गया था यह वाक्य।

उस दिन दीदी जीजा के साथ गई तो फिर लौटकर नही आई।

हमेशा की तरह बाबूजी छ बजे दफ्तर से लौट। दामाद के साथ बेटी के चले जाने की खबर मा ने उन्ह दे दी। बाबूजी पर इसकी प्रतिक्रिया जो भी हुई हो, मा को पता नही चला। पहल की तरह मा स उनकी नोक-झोक नही हुई। सुबह सरसरी निगाह से देखा गया अखबार वह ध्यान से पढने लगे।

बाबूजी अगर कुछ कहते तो मा बात आगे बढा सकती थी लेकिन जब वह मौनी बाबा बन गए तो क्या वह दीवारा स सिर मारती ? घर के काम, बाल बच्चा म ऐसी उलझी जैसे चाबी देकर किसी मशीन को चला दिया गया हो।

उस दिन घर मे बडी शान्ति थी। सारा काम विधिवत हुआ, छाटे बच्चो को खाना खिलाकर सुला दिया गया। तब बाबूजी न खाना खाया। बाबूजी को हाथ धुलाकर रत्ती तौलिया पकडा ही रही थी कि बाहर के

दरवाजे पर दस्तक हुई।

जरूर दीदी हागी। रत्ती का मन हुआ लपककर दरवाजा खोल दे, लेकिन मा ने सार बच्चो का इक्टठा करके कहा था, दीदी को अब इस घर मे घुमने नही दिया जाएगा, और बाबूजी सामन खडे थे।

दस्तक दुबारा हुई तो बाबूजी न रत्ती को जाकर दखने का इशारा किया। रत्ती ने आहिस्ता से दरवाजा खोला। सामने रघु था।

तीन महीन पहले रघु ने अलग मकान ले लिया था। अलग मकान लेकर रहने की बात बाबूजी को एकदम पसन्द नही आई थी। मा ने बडी मुश्किल से उन्ह राजी किया था, 'रिश्तेदारी थोडे दिन के लिए होती है हमेशा कोई थोडे ही रह सकता है और फिर रघु शादीशुदा है उसकी बीवी कब तक अलग रहगी उससे ?'

बाबूजी का बस चलता तो रघु अपने बीवी बच्चे के साथ बाबूजी के पास ही रहता। दामाद का बडा भाई दामाद ही हाता है। लेकिन मा ने उनकी एक न चलन दी।

'दोना जवान जहान है, दोना को आजादी चाहिए इस गिचपिच म कहा रहग ?'

बाबूजी खामोश हो गए थे। उसी मोहल्ल मे दो कमरो का एक सैट उन्होने रघु को दिलवा दिया था। जिस दिन रघु अपन नए मकान मे गया। मा भाभी से हसत हुए कह रही थी, रत्ती से गप्पें किए बगर रघु का खाना कसे पचेगा ?'

बडे जीजा से रत्ती बीबी की खासी पट गई है अम्मा,' भाभी चटखारे लेने लगी, फिर रत्ती की ओर मुखातिब हाकर 'कौनो फरफद मे न पडिहो बीबी।'

रत्ती ने आखें तरेरकर भाभी को देखा, लेकिन अन्दर स दहशत जसी कोई चीज उसे महसूस हुई जरूर थी।

दो दिन बुखार मे पडे पडे रघु ने उससे कितनी कितनी बातें की थी—बचपन, स्कूल, कालज की कितनी कहानिया दोहराई थी। बुखार स जल रही उसकी आखे ब द लेकिन होठ लगातार बुदबुदात रह थे जब वह आठवी मे पढता था तभी उसकी शादी एक नौ दस बरस की

लडकी से कर दी गई थी। रघु तब तेरह साल का था। पाच साल बाद गौना हुआ, उसके दो साल बाद वह बाप बन गया सुबह शाम खाना-नाश्ता, दिन को स्कूल जाना पडता, रात का सा जाना रघु का कभी नही लगा कि ब्याह-गौना या बाप बनन का अस्तित्व इन बाता से अलग हटकर भी कुछ है रत्ती को पहली बार देखकर कुछ अजीब से एहसास उसके मन मे जागे थे, जो एकदम ताजे थे, नये थे, बडे मीठे मधुर थे। जिनम हल्की सी खलिश थी जो पार पार को किसी नशे स भर दती थी

रघु की हर बात को समभन की क्षमता रत्ती म तब नही थी। अब वह बिना कह भी बहुत सी बातें समझ जाती है। किरपाल चौब न जाने क्यो इम्रा को ढूढत हुए आए थ उस दिन। अपनी मरी हुई बकरी के अनाथ बच्चे को गोद मे दुबकाए रत्ती शीशी म दूध भरकर मुहाने पर थोडी-सी रुई दवा कपडा बाध रही थी, ताकि बच्चा मा का स्तन समभकर किसी तरह दूध पी ले। रत्ती ने उनकी ओर दखे बगर कह दिया था, इम्रा बगीचे की ओर गई हैं। दोपहर तक लौटेंगी ' चौबेजी फिर भी डट ही गए। सामने की चौकी पर पैर पसारने लगे कि ढकना आजी दाखिल हा गइ। चौब जी के पसरते हुए पर तनफना के सिकुडे और नौ दो ग्यारह हा गए।

'चल रत्ती उठ यहा से कलूटी कहा गई है? घर मे न रहे ता अन्दर ही बैठा कर ये आदमी हैं कुत्ता की औलाद।' ढकना आजी उस आगन तक पहुचाकर चली गई थी। रत्ती हर नजर पहचानती है हर कदम की तडफडाहट महसूस करती है।

लेकिन उस दिन ऐसा कुछ नही हुआ था। रघु की बातें सुन सुनकर अनेक सवाल उसके मन मे उभरे फिर गायब हो गए। बडी मुश्किलो मे जो सवाल ठहरा वह रघु को कही कचोट गया।

'ठीक हो जाने पर एक बार दीदी को लाएगे न?' रत्ती रघु के माथे की पट्टी बदल रही थी।

रघु कुछ बोला नही। रत्ती को अपनी ही बात बडी बेतुकी लगी। खामोशी का दायरा जरूरत से ज्यादा बढ गया हो रत्ती समझ गई रघु

की आखें झप गई हैं। रत्ती के हाथ यन्त्रवत थोडी थोडी देर पर पट्टी बदलते रहे। टटोलते हुए रघु के तप्त हाथ म रत्ती की गीली उगलिया उलझ गई। रघु के होठ बुदबुदाने लगे, 'रत्ती सिफ यही शब्द काटे की तरह चुभता है, अपने और तुम्हार बीच। मैं अपने और तुम्हारे बीच कोई फासला, कोई शब्द, कोई सम्बोधन नही चाहता तुमसे पहले मेरी कुछ नही थी मैं तुम्ह चाहता हू तुम्ह हासिल करना चाहता हू नहीं, तुम कुछ मत कहो, तुम्हे कुछ करना भी नही मैं जानता हू तुम मेरी हो, सिफ मेरी हो सकती हो तुम्ह कुछ नही कहना, कुछ करना भी नही मैं मैं करूगा सब कुछ तुम्ह हासिल करने की कीमत चुकाऊगा। मैंने इस दुनिया मे सिफ तुम्ह जाना है रत्ती '

रघु के प्रलाप से रत्ती घबरा गई थी। उसे लगा बुखार की तेज़ी मे रघु न जाने क्या क्या कहता जा रहा है। उठकर मा को बुलाना चाहती थी लेकिन बुखार मे झुलसते हुए जिस्म के बावजूद रघु अपने पूरे होशोहवास मे था। उठती हुई रत्ती को अपनी ओर खीचकर उसने पूछा था, 'अगर दीदी हमारे रास्ते से हट जाए तो मुझसे ब्याह करोगी रत्ती ?'

रघु की गिरफ्त मे रत्ती का हाथ बेजान हो उठा था। उसने कुछ कहा तो नही लेकिन रघु को अपन सवाल का जवाब मिल गया था।

बीमारी से उठने के बाद रत्ती के प्रति रघु का रवया बदल गया। रत्ती से मिलन की बेकरारी न किसी निश्चय का रूप ले लिया। मन के लरजते हुए तूफान इन्तज़ार के दायरे मे बाध दिए गए।

रत्ती से मुलाकात होती तो रघु की आखो के लाल डोरे एकदम शान्त रहते। रत्ती को बाहो मे समेट लेने के लिए बेताब उसका मन इतनी परतो के नीचे बेचैन होता कि रत्ती को उसका एहसास तक न होता बातचीत मे आम बातें ही ज्यादा होती। कभी कभी रघु उसके सिर पर हाथ रख देता तो भावनाओ की सारी गरमाई रत्ती उस एक स्पश म महसूस कर लेती।

रघु का यह परिवतन रत्ती को अच्छा लगा। इसम रफ्तार नहीं थी कोई वचनी नही थी, न रात रातभर जागकर यन्त्रणा भोगने की घुटन, न दोपहरी भर बगीचा, नर्सरी, इधर-उधर आने जाने का भटकाव,

अनिश्चय, पकड़े जाने का डर । रत्ती की परीक्षाएं नजदीक आ रही थी। रघु उसकी पढाई मे दिलचस्पी लेता, कभी एक दो घण्टा बैठकर कुछ पूछने-समझाने लगता । ऐसा बहुत कम होता लेकिन निहायत एकात मे रघु रत्ती के गाल थपथपा देता, उसके माथे पर अपने संतुलित, सधे हुए हाथ रख देता रत्ती निहाल हो जाती। और तब, रत्ती के लिए इतना ही बहुत था।

रघु का अलग मकान लेकर रहना उसे बिल्कुल बुरा नही लगा था। रघु के व्यवहार मे कोई बात भी तो ऐसी नही थी जिससे शिकायत की कोई गुंजाइश रहती। शुरू शुरू मे रघु सुबह शाम दोनो वक्त आता रहा, फिर दिन मे एक बार आने लगा। कुछ दिनो बाद एक न दिन का बीच दे देता

रघु जिस दिन नही आता महरी उसका हालचाल पूछती, कैसी हो बिटिया ?'

'ठीक हू महरी, क्या बात है ?' रत्ती सहज भाव से जवाब दे देती।

काफी अरसे बाद रत्ती की समझ मे बात आई कि रघु जिस दिन उसके घर नही आएगा महरी उसका हालचाल जरूर पूछेगी। वह जानती थी रघु के घर महरी काम करने लगी थी। रघु की जासूसी पर वह मन ही मन मुस्कराई भी थी।

बाबूजी है ?' चेहरे की तरह रघु की गम्भीर आवाज सुनकर रत्ती सपना से जागी। उसने रघु की आखो मे झाककर देखा। उन आखो का सम्बन्ध रघु के चेहरे से नही था, न उसकी आवाज से ही था। रत्ती उन आखो की भाषा पढ सकती थी।

रघु के सवाल का जवाब दिए बगैर रत्ती आगे बढी। उसने बैठक का दरवाजा खोल दिया। पीछे-पीछे बाबूजी भी आ गए थे।

रघु के बैठक मे दाखिल होते ही रत्ती बाहर आ गई। उसका बस चलता तो वही दरवाजे से चिपटकर रघु और बाबूजी की सारी बात सुनती लेकिन आगन के दरवाजे मे टिककर मा आ खडी हुई थी। रत्ती दबे पाव अंदर आ गई।

बाबूजी के साथ रघु की देर तक बातें होती रही ? रघु जब जाने लगा तो यह बात तय हो गई थी कि दूसरे दिन महरी के हाथ दीदी के रोजाना के इस्तेमाल के कपड़े रघु के घर भेज दिए जाएगे। रघु ने बाबूजी को बताया कि उसने अपने चाचा को तार दे दिया है। उनके आने तक दीदी जीजा उसीके यहा रहगे। रघु ने दोनो को बहुत समझाया पर दीदी किसी भी शत पर वापस आने के लिए तैयार नही थी।

मा का गुस्सा सभाले नही सभल रहा था। बार बार वह कह रही थी, दुनिया की बेटी ससुराल स भागकर मायके आती है इसके लिए मायका जेल हो गया अरे हमने तो कोई बधन नही लगाया, रीति-रिवाज सब बलाए ताख पर रखकर दामाद को भी बुलाया, बेटी दामाद का मेल मुलाकात क्या मायके की शोभा है हमने तो वह भी किया किस्मत अपनी ही खोटी है, कही भी जस नही, जिसके लिए कुछ किया उसीने अपजस दिया अच्छी औलाद भी नसीब वालो को मिलती है '

दीदी के जाने के पाचवें या छठे दिन दीदी के ससुर आ गए। ठहरे तो रघु के यहा लेकिन फौरन ही मिलने चले आए। बाबूजी दफ्तर जा चुके थे। दरवाजे की ओट म बैठी मा अपनी नालायक स तान का रोना रो रही थी, 'हमने तो बेटो की तरह पाला पोसा, पढा लिखा रहे है। इनके भी पढने का इ तजाम कर दिया था। दामाद जब तक पढ लिख-कर तयार होता यह भी मिडिल पास कर लेती। नौकरी करने के लिए ही थोडे पढा जाता है पढने से ज्ञान बढता है हमे क्या मालूम था जिस बिरवे को हम सीच रहे हैं वही एक दिन हमारी इज्जत पर अमर-बेलि की तरह छा जाएगा ।'

मा के बिसूरने का कोई अ त नही था। दीदी के ससुर उ ह तसल्लिया देत रहे, 'ससुराल और मायके मे कोई फर्क नही बहनजी, जी छोटा मत कीजिए आपकी बेटी हमारी भी बेटी है जहा बच्चे खुश रहे मा-बाप के लिए वही ठीक है। गौना होता, बाजे गाजे के साथ आकर बहू को ले जाता तो मुझे भी खुशी होती लेकिन नही हो पाया। नसीब से ही सब कुछ होता है अब मैं आ गया हू, अपने साथ

उतनी ही खुशी से ले जाऊगा। किसीको कानाकान खबर भी नही होगी कि बेटी अपन आप ससुराल आई है।'

दीदी के सोन चादी के भारी भारी गहन राय साहब अपने गमछे मे बाधकर ले गए। ससुराल की कीमती साडिया यू ही गठरी बनाकर वापस कर दी गइ। मायके से दिए गए गहने कपडे रोक लिए गए। जो औलाद मा बाप के कहन मे नही उसको लेना देना क्या? मा ने पास-पडोस सब के सामन ऐलान कर दिया, सात नही अब उनकी सिफ छ बेटिया हैं।

मायके से मिले जिन गहने कपडा मे दीदी एक बार ससुराल हो आई थी वे सब रत्ती के लिए सहेजकर रख दिए गए। बचपन मे जरा-जरा सी बात पर बिदककर रत्ती का गला काटने के लिए तयार दीदी की हर चीज रत्ती की विरासत मानकर रख दी गई। सुनहरे चौडे किनारे की बनारसी लाल साडी पर तो रत्ती मर मिटी थी। ब्याह के बाद दीदी न जब वह साडी पहनी थी कितनी प्यारी लग रही थीं।

रत्ती के लिए मोह का कितना गहरा समदर था दीदी के मन मे। नई-नई ससुराल से लौटी तो एक दिन रोते राते यहा तक कह बठी थी, 'तेरे जीजा की उम्र बिल्कुल तेरे जोग है रत्ती हाय उसकी शादी तरे ही साथ क्या न हुई।' न जाने किस बात पर दीदी व्याकुल हो गई थी। रत्ती को इतना याद है कि दीदी से चिपटकर अनायास ही वह भी रो पडी थी।

वही दीदी मायके स मिला अपना सब कुछ रत्ती के लिए छोडकर हमेशा, हमेशा के लिए चली गइ।

6

रत्ती बाल्टी भर कपडा लकर फैलान जा रही थी कि महरी आकर खडी हो गई। असमय महरी को सामने देखकर रत्ती ठिठक गई। बाल्टी उसने जमीन पर रख दी। महरी ने इधर उधर देखा और आचल के छोर से

ज्यादा मा उसीपर नाराज़ हैं कि उसने उनके बेटी-दामाद को अपने यहा टिकाया क्या ? अगर उसकी शह न मिली होती तो दीदी मा का घर छोड़कर जेठ के घर बिन बुलाए जाकर रहने की हिम्मत नही करती। बाबूजी ने मा की हा म हा चाहे मिला दी हो, रघु उनकी नज़र म बेकसूर था। बाबूजी के व्यवहार म उसके प्रति कोई कमी नही थी और वह जानता था मा का गुस्सा बेबुनियाद है क्योकि दीदी को कोई शह उसने नही दी थी। दीदी जब जीजा के साथ खुद ही चली गईं तो रघु क्या करता रघु जानता था मा का गुस्सा कुछ समय बाद अपने आप ठडा पड जाएगा फिर सब कुछ सामान्य चलने लगेगा। सभवत यह बात उस बाबूजी न ही समझाई थी, इसीलिए किसीके प्रति उसके व्यवहार म कोई अन्तर नही आया।

रघु के प्रति डर जैसी कोई बात रत्ती के मन मे नही थी लेकिन इस तरह घर से बाहर चार बजे सुबह एकान्त म उसे क्यो बुलाया है रघु ने, दिन भर रत्ती यही सोचती रही। दिन जस तस बीत गया। कई बार हाथ पर की उगलिया के पोरा की ठडक रत्ती ने महसूस की, कई बार एक हल्की सिहरन उसके जिस्म म दौडी।

दोपहर बाद बतन धोते धोते महरी उसे देखकर बडे रहस्यमय ढग स मुस्कराई थी, 'बिटिया सोच समझ लेव, ब्याहता के चलते बडा दुख होई।'

रत्ती चाहते हुए भी कुछ बोल नही पाई। महरी का व्यवहार भी उस दामुहा लगा। इसीने तो पुरजा लाकर दिया अब यही समझा रही है क्या उसे मालूम था रघु ने पुरजे मे क्या लिखा था। उलझना के दायरे शाम तक फैलते सिमटते रहे। रात का विश्वविद्यालय की मीनार घडी हर पन्द्रह मिनट पर अपना सगीत देती रही। रत्ती की आखें झपती खुलती रहीं।

जाडे खत्म हो रह थे लेकिन अभी लोगा ने बाहर सोना शुरू नहीं किया था। मा बाबूजी अपन कमर म थे। बैठक म ताला बन्द था। बहनें साई पडी थी। पौने चार की घटी पर रत्ती ने करवट बदली। फिर फिर धीरे धीर उठी। आगन मे आकर आहट पता लिया, गुसलखाने गई,

पानी पीने का बहाना किया। सन्नाटा कहीं से भी नहीं टूटा। आगन की कुंडी खोलकर रत्ती बाहर निकली। ठंडी हवा का झोंका तन-मन मे एक अजीब सी सिहरन भर गया। धीरे धीरे चलकर रत्ती ने दोनो नसरी पार की। रहट वाले गडढे मे पल भर को रुकी। झरबरी पर किसी चिडिया ने पख फडफडाए फिर सन्नाटा छा गया। हल्के कदम बढते-बढते रत्ती स्कूल की चहारदीवारी तक पहुची फिर अमरूद के पेडो की सीधी कतार के साथ-साथ चलने लगी। सूखे पत्तो पर पैरो का दबाव चुरमुराहट पदा कर रहा था।

अशोक के घने पत्तों ने पेड के नीचे अधेरा कर रखा था। रघु कहीं दिखाई नही पडा। रत्ती आश्वस्त होकर अशोक के नीचे पहुची। भोर के अधेरे मे पल भर इधर उधर देखती रही। उसकी निगाह उस जगह भी ठहरी जहा वह सीता बनकर बठा करती थी। यहीं उसके सामने हनुमान के वश मे विजय पड से छलाग लगाकर कूद जाया करता थ। उसका मन हुआ उसी तरह वह आख बन्द कर आज भी बठ जाए आयपुत्र आयपुत्र की गोहार लगाए, तभी बगल की चहारदीवारी पर कुछ सरसराहट हुई और धम्म स किसीके कूदन की आवाज भी। परो के नीचे दबकर सूखी हुई पत्तिया चरमराईं। एक परिचित ग ध उसके चारो ओर सिमटने लगी। रघु न आगे बढकर उसे थाम लिया। दोनो बेहद पास खडे थे, बेहद खामोश। शब्द खो गए थे। अथ यहा बेमानी थे।

काफी देर बाद रत्ती का चेहरा अपनी हथेलियो मे भरते हुए रघु न अपनी आर किया पूछोगी नही, मैंन तुम्ह क्यो बुलाया ?'

रत्ती की ब द पलकें बन्द ही रहीं। होठा ने हिलन का काई प्रयास नही किया।

रघु ही फिर बोला, 'कल गाव जा रहा हू, महीने-भर के लिए। सोचा तुम्ह बताकर जाऊ। बस बाबूजी को बता चुका हू।'

रत्ती निर्जीव प्रतिमा की तरह रघु के सामने खडी थी। उसका चेहरा रघु की हथेलिया मे था, आखें पलका के परदा म बन्द थी। रघु की आवाज़ कानो म जा रही थी फिर अचानक कुछ हुआ शायद रघु के

हाथो का खिचाव बढा या रत्ती लडखडा गई ठीक से याद नही, लेकिन हुआ ऐसा ही कुछ । एक मुलायम सी टहनी की तरह टूटकर रत्ती रघु की बाहो म सिमट ग्राई थी । उसका चेहरा रघु के सीने पर था । रघु का दिल धर्य की सीमा तोडकर बाहर ग्रान के लिए बेशुमारी से धडकने लगा था । रत्ती को उन धडकनो के ग्रलावा कही कुछ भी सच नही लगा था ।

मुलाकात कुल ग्राधे घटे की थी, रघु न ग्रपना सवाल शायद दोहराया भी था । रत्ती कितने दिन उस एक मुलाकात की मिठास म खोई रही । रघु की बीवी बीमार थी वह एक की जगह दो महीने की छुट्टी बिताकर ग्राया । बाबूजी के नाम उसन तार भेजा था । रत्ती ने भी सब कुछ भूलकर खुद को इम्तहान की ग्राग मे झोक दिया था ।

दो महीन बाद रघु ग्राया तो इम्तहान का भूत उतर चुका था । रत्ती ग्रब खाली थी । मा का गुस्सा भी काफी कुछ कम हो गया था । रघु कभी कभी घर भी ग्राने लगा । रत्ती न कई बार पूछा उसकी बडी दीदी को क्या बीमारी थी लेकिन हर बार रघु टाल गया । ग्रशोक के नीचे की एक मुलाकात कई मुलाकातो मे बदली । रघु ग्रपना इकलौता सवाल दोहराता रहा, रत्ती ग्रपनी खामोशी मे उस एक सवाल का जवाब ढूढती रही । मिलने का समय बदलता रहा, ग्रलग ग्रलग मुलाकातें ग्रलग ग्रलग समय । रत्ती की बात करन की झिझक धीरे धीरे मिट गई थी, ग्रब वह रघु स किसी भी विषय पर बात कर सकती थी ।

उस दिन रघु कुछ उखडा उखडा लगा । उस सीमा तक धैय उसने पहले नही खोया था । रत्ती का हाथ ग्रपने हाथ मे लेकर बडी ग्राजिजी म बाला, 'मेरे साथ भाग चलो रत्ती, एक गाडी स जाकर दूसरी से वापस ग्रा जाएग ।'

कहा ?' रत्ती ग्रवाक उसका मुह देखन लगी थी ।

झासी ।'

'वहा क्या है ?'

'मेरा एक दोस्त । हमारी शादी की गवाही देगा, फिर तुम्हे पहुचा दूगा ।'

मा बाबूजी ने घर मे न घुसने दिया तब ?'

'अपनी बात बन जाएगी। तुम मेरे साथ रहोगी।

और दीदी ?'

'उसकी बात तुम मुझपर छोड दो।'

'महरी कह रही थी ब्याहता के चलते बडा दुख होता है।'

'मुझपर भरोसा नहीं ?'

'डर लगता है।'

'एक बार हिम्मत कर लो सब ठीक हो जाएगा। बोलो, कब चल रही हो!'

रत्ती चुप हो गई।

'तुम कहो तो अपने दोस्त को चिट्ठी लिख दू।'

'क्या ?'

'यही कि हम इस गाडी से आ रहे हैं ?'

'बाबूजी की इज्जत धूल मे मिल जाएगी रघु!' रत्ती रघु के और पास सिमट आई थी।

रघु कहना चाहता था इस तरह किसीकी इज्जत धूल मे नही मिलती। कुछ दिन तक चर्चे होते हैं फिर सब ठीक हो जाता है। लेकिन उसने ऐसा कुछ नही कहा। पास सिमट आई रत्ती को अपने बेहद पास महसूस करता रहा। उस दिन के बाद उसने रत्ती से कुछ नही कहा। दोनो की मुलाकातें आम हो गइ। पास पास बठते, इधर उधर की बातें करते। रघु के कन्धे से सिर टिकाकर बठना रत्ती को बेहद अच्छा लगता। रघु अपनी ओर से ऐसा कुछ न करना जो रत्ती को पसन्द नहीं था।

× × ×

जाने कब तक दोनो की मुलाकातें सामान्य गति से और चलती रहती मगर राय साहब ने बीच मे टपककर सब कुछ खत्म न कर दिया होता। सुबह के कामो का सिलसिला चल ही रहा था कि राय साहब टपक पडे। जाहिर था कि टिके अपने भतीजे के साथ थे, क्योकि कोई सामान उनके साथ नही था। बाबूजी सुबह दफ्तर जाने की जल्दी

मे थे, 'शाम को बात होगी', कहकर चले गए। मा की जिद पर राय साहब ने दोपहर का खाना वही खाया फिर मा के साथ उनकी कचहरी बठी। छोटी बहनो को लेकर भाभी के घर जाने का आदेश रत्ती को देकर मा हमेशा की तरह दरवाजे की ओट लेकर बैठ गइ।

समधी समधिन की कचहरी जो उस दिन बैठी तो शाम होने को आई। बातो का सिलसिला खतम नही हुआ। दो बार रत्ती भाक भाककर देख गई। अत म जब चार बज गए तब वह घर आ गई शाम की चाय का समय हो गया था।

मा का चेहरा सारी शाम तना रहा। रत्ती से उन्होने कुछ कहा तो नही लेकिन उनकी चुभती हुई आखें उसकी आखो से टकराइ कई बार। बाबूजी आए तो मा ने भट उन्हे अन्दर बुला लिया। रत्ती के मन म कही चोर तो था। लेकिन बात क्या है एकदम म वह समझ न पाई।

दीदी होती तो भट मा के पास पहुची होती। इधर उधर की बात करके उनसे सब उगलवा लेती कुछ नमक मिर्च अपनी ओर से मिलाती। अपने ढग से तोड-मरोडकर सब कुछ सबको बता देती, कुछ कहने-सुनने वाला को भला बुरा कहती, आने जाने वाला को रोककर बात करती। जरा देर म सबको सब कुछ पता चल जाता। लेकिन मा का तना हुआ चेहरा, चुभती हुई आखें देखकर रत्ती एकदम सकपका गई थी।

बाबूजी के लिए चाय बनाकर रत्ती ने रमा के हाथ भेज दिया। पता नही बाबूजी ने चाय पी या बस ही छोडकर बैठक की ओर निकल गए। रत्ती ने उन्हे जाते हुए देखा था। वह रसोई म लगी थी लेकिन उसके कान बाबूजी के साथ ही बैठक की ओर मुखातिब हो गए थे। वहा से आने वाली हर आवाज सीसे की तरह पिघल पिघलकर उसके कानो म उतरने लगी।

'मुझे अपने भतीजे रघु के लिए आपकी बेटी रत्ती का हाथ चाहिए', राय साहब की आवाज सधी हुई थी।

'राय साहब, कोई बात कहने से पहले एक बार सोच लेना चाहिए।' बाबूजी के स्वर मे भी कोई गर्मी नहा थी।

मैं बहुत कुछ सोच समझकर ही आपके पास आया हू।

'आपने कुछ सोचा होता तो इस तरह की अनहोनी बात न करते।'

'मैं बहुत-सी अनहोनियों को बचाना चाहता हूं।'

'मैं आपका मतलब समझा नहीं।'

'उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। सवाल यहां दो घरों की इज्जत का है।'

'आप अपनी फिक्र कीजिए। अपनी इज्जत मैं संभाल लूंगा।'

'बात इतनी आसान नहीं है भाई साहब। हमारी आपकी इज्जत अब बंटी नहीं है।"

'आप साफ साफ क्यों नहीं कहते?'

'कह तो रहा हूं। रत्ती का ब्याह रघु से कर दीजिए।'

'क्या बात कर रहे हैं आप? रघु शादीशुदा एक बच्चे का बाप है'

'हमारी हैसियत पर आपको शक नहीं होना चाहिए।'

'उम्र का इतना बड़ा फासला?'

'उम्र के फासले दो चार साल में ठीक हो जाते हैं। लड़कियां लड़कों से जल्दी सयानी होती हैं'

'राय साहब, आप हद से गुजर रहे हैं। मैंने आपके यहां लड़की दी है इसका मतलब यह नहीं।'

'हद से अभी नहीं गुजर रहा हूं भाई साहब, लेकिन जरूरत पड़ी तो गुजर जाऊंगा।'

'आप हमको धमकाने आए हैं।' गुस्से से तमतमाया बाबूजी का चेहरा रत्ती की आंखों में घूम गया। उसके लहू का एक एक कतरा बर्फ बनता जा रहा था।

'नहीं, मैं आपसे सलाह मशविरा करके अपने बेटे के लिए आपकी बेटी का हाथ मांगने आया हूं। मैं मानता हूं रत्ती अभी बच्ची है मेरा रघु उससे पन्द्रह साल बड़ा है रत्ती को मैं अपनी बेटी की तरह पालूंगा, उसे पढ़ाऊंगा, उसके सुख के लिए कुछ भी करूंगा मेरा रघु।'

बाबूजी ने राय साहब की बात काट दी 'अभी इतना मत सोचिए,

यह अधिकार न मैंने आपको दिया है न दूंगा। आप आए हैं, सिर माथे पर, आराम से रहिए, अपनी सामर्थ्य भर आपका स्वागत सत्कार करूंगा। आपकी हैसियत बहुत ऊची है। बेटे वालों की हैसियत हमेशा ऊची होती है।'

'आप अच्छी तरह जानते हैं बेटे वालों की हैसियत से मैं यहां नहीं आया हू। आपकी पत्नी से मैंने सारी बातें बता दी हैं। मैं वचनबद्ध हू। मुझे अपने रघु के लिए आपकी रत्ती चाहिए।'

'आपके वचनबद्ध होने से मुझे कोई सरोकार नही, आप यहा जिस भी हैसियत से आए है एक बात सुन लीजिए कि रत्ती मेरी बेटी है, उसका हाथ उसीको दिया जाएगा जिसे मैं चाहूगा। बाबूजी की आवाज साधारण से तेज थी।

'अनर्थ हो जाएगा भाई साहब, एक अनर्थ को रोककर आ रहा हू, दूसरा शायद रोक न पाऊ। मैंने रघु को वचन दिया है रत्ती का ब्याह उससे होगा।'

'आप अपनी हद से बहुत आगे बढ गए हैं, आप शायद यह भी भूल गए हैं कि रत्ती आपकी नही मेरी बेटी है।'

'एक बाप का दिल मैं भी रखता हू। अगर मैं गलत नही समझता तो रत्ती भी रघु को चाहती है।'

'रत्ती अभी बच्ची है, पसन्द नापसन्द का फैसला खुद नही ले सकती।'

'रघु उसके वयस्क होने का इन्तजार कर सकता है।'

'हम इस बात का ध्यान रखेंगे कि इन्तजार का मौका रघु को न दिया जाए।'

'रघु ने तो मीठी मीठी बातें करके हमारी पीठ मे छुरी भोकी है' यह आवाज मा की थी, ऐसा आज तक देखा तो क्या सुना भी नही था।'

'रघु को आप गलत समझ रही हैं बहनजी, हमारा रघु ऐसा लडका है नही। मेरी इसी गोद मे खेलकर बडा हुआ है मैं जानता हू आप दोनो की वह कितनी इज्जत करता है'

लगता है मुझे साथ उसीका देना पडेगा। उसकी खुशी, दोनो खानदानो की इज्जत की बात सोचकर आपके पास आया था। चाहता था बात आपस मे ही तय हो जाए। रघु के हिस्से की जायदाद मे रत्ती आधे की हकदार हो सकती है। लेकिन आपको चूकि यह मजूर नही है, इसलिए वापस जा रहा हू। इतना जरूर कहूगा कि रघु बडा जिद्दी लडका है, इतनी आसानी से मानेगा नही और मैं समझता हू आपकी लडकी भी उसे चाहती है।'

राय साहब तो मामला अपनी ओर से खत्म करके चले गए लेकिन वह खत्म हुआ नही। न जाने मा से या बाबूजी स उनकी क्या गुफ्तगु फिर हुई। दो दिन बाद दूसरा प्रस्ताव लेकर हाजिर हुए कि रत्ती अगर सब के सामने यह कह दे कि उस रघु से कुछ लेना देना नही ता, यह बात हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी और वह रघु को मना लेंगे।

रत्ती ने जब यह बात सुनी तो उसे हसी आई। उसे मालूम था कि मा-बाबूजी इस ड्रामे के लिए कभी तयार नही होगे। लेकिन उसे हैरानी हुई जब बाबूजी इसके लिए तयार हो गए। शर्त उन्होने एक ही रखी कि जब यह ड्रामा खेला जाएगा वह खुद हाजिर नही रहगे।

उस दिन का रघु का सौम्य चेहरा आज भी रत्ती के जेहन मे ताजा है। सधे भारी कदम आज भी उसे सुनाई पडते हैं। उस दिन जब ड्रामा शुरू हुआ राय साहब आकर दीवान पर आसीन हो गए थे। मा ने दरवाजे म पीछे मचिया पर अपना आसन ग्रहण कर लिया था। तब पेशी हुई थी रत्ती की। घुमा फिराकर बार बार राय साहब ने उसे एक ही बात समझाई थी कि वह उसकी खुशी चाहते हैं और उसकी मर्जी के खिलाफ वह कुछ नही करेंगे, न किसीको कुछ करने देंगे। रघु का आना कुछ देर बाद हुआ। वह चुपचाप आकर राय साहब के पास दीवान म एक किनारे बठ गया था। उसके चेहरे पर स्थिरता थी। कुछ हासिल करने का विश्वास था। उसकी आखो मे लाल डोर शान्त थ। कमरे म प्रवेश करत हुए रघु पर रत्ती की उचटती नजर पडी तो उसकी चेतना काप उठी थी, पिछले दो घण्टा म सिखाई पढाई भूमिका वह अचानक भूलने लगी थी। अपराधी की तरह न्याय के कटघरे म खडी रत्ती का मन

किसी अछूत भय की कल्पना से काप रहा था।

पहल राय साहब ने ही की, 'रत्ती बेटे, डरा मत। तुम्ह इस तरह यहा खडा करके हमे कोई खुशी नही मिल रही है तुम जानती तो हम तुम्हें खुश देखना चाहते है।'

रत्ती को लगा राय साहब अपना डायलाग भूल रह हैं, यह बात तो उन्ह बाद मे कहनी थी लेकिन इसके बाद जो शब्द उसके कानो मे पडे उसस वह समझ गई बातचीत की भूमिका बदली है उद्देश्य नही बदला।

'रघु तुम्हें चाहता है शायद तुम भी इसे चाहती हा ?'

रत्ती की काया अपने आप मे सिमटने लगी।

'तुमने इसे विवाह का वचन दिया है '

राय साहब की बात बीच म रघु ने काट दी 'चाचाजी, इतना सीधा सवाल मत कीजिए रत्ती के साथ मेरी ऐसी कोई बात नही हुई ।

रघु की बात पर कोई ध्यान न देकर राय साहब न अपना सवाल दोहराया।

'बोलो बटा, बोलो मा की आश्वासन भरी आवाज़ रत्ती के कानो में पडी, 'अगर तुमने ऐसा वचन दिया है तो हम तुम्हारी बात सुनेंगे।

'रघु कहता है कि तुमने इसे वचन दिया है।' राय साहब ने दढ शब्दो मे बात फिर दोहराई।

'रत्ती' रघु लगभग चीख पडा, 'मैंन ऐसी कोई बात नही कही है मैंने एसा कुछ नही कहा '

'बोलो बेटा तुमने एसा कोई वचन रघु को दिया है ?' मा और राय साहब का सम्मिलित प्रश्न था।

'मैंने विवाह का कोई वचन नही दिया', रत्ती का गला भर्रा आया।

'रघु कहता है तुमने इस विवाह का वचन दिया है।' यह आवाज राय साहब की थी, और सिफ इसीलिए उसने अपनी बीवी को दो बार जहर दिया है ताकि इसका रास्ता साफ हो जाए '

'चाचा जी ' रघु की आवाज़ तज थी।

'बोलो रत्ती, क्या इसमे तुम्हारी रजामन्दी थी ?'

रत्ती की दोनो हथेलिया उसके चेहरे पर आ गई। अपनी जगह वह

इस तरह लडखडाई जैसे गिर पडेगी।

रघु बिजली की तरह तड़पकर अपनी जगह से उठा। गिरती हुई रत्ती को उसने सम्भाल लिया, 'रत्ती इन बातो पर तुम बिल्कुल ध्यान मत दो' फिर राय साहब से 'चाचाजी, मुझे आपस ये उम्मीद नही थी ।'

रत्ती ने रघु का हाथ झटक दिया, 'छोड दीजिए मुझे' फिर राय साहब की ओर मुखातिब होकर, 'मेरी समझ मे कुछ नही आता अगर रघु ने यह सब कहा है जो आप कह रह हैं तो मैं मैं ओ मा ।'

दरवाजे के पीछे से झपटकर मा निकली। रत्ती की बाह पकडकर अ दर खीच लिया, 'मेरी बच्ची तेरे लिए जिसन अपनी बीवी को जहर दिया वह कल किसी और के लिए तुझे भी ।'

'बस करो मा ' रत्ती एक झटके से मा की गिरफ्त से मुक्त हो अपने कमरे की ओर भाग गई।

रघु की घायल, स तप्त आखें कितनी देर उस विपाक्त परिवेश को घूरती रही, कब वह धीरे धीरे उठा और चला गया। मा और राय साहब मे आग क्या बातें हुई, क्या योजनाए बनी रत्ती को कुछ नही मालूम।

बहुत रात गए जब औधे मुह पडी रत्ती का मुह सीधा करके मा ने अपन कलेजे से लगाया तब उनकी आखा म पानी था। वह रत्ती का सिर बार बार थपककर कह रही थी, 'आज तूने मेरे दूध की लाज रख ली रत्ती, नही तो मैं कही की न होती।'

ड्रामा खत्म हो गया था। इसके बाद रघु फिर उस घर मे कभी नहीं आया। बाबूजी रात गए घर लौटे तो सारा बयान सुनने के बाद रत्ती के कमरे मे आए। बडे प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरत रहे। उस पढा-लिखा कर डाक्टर वकील बनने के सपन दिखात रह। रत्ती के मन तन को घेरे रघु की अपराधी बाहें थी जिनम रत्ती का समेट रखने के लिए उसन अपनी बीवी को दोबारा जहर दिया था। उसी रात मा बाबूजी की बात स रत्ती को पता चला अगर दीदी न देख न लिया होता तो रघु न जहर देने के बाद अपनी बीवी का गला घोट ही दिया होता

रघु क्या सचमुच उसको इतना चाहता था ?

आनेवाले दो-तीन हफ्तो ने ही साबित कर दिया कि डाक्टर या

वकील बनना रत्ती की किस्मत मे नही है उसके लिए तेजी से लडके की तलाश हो रही है। महरी पर शक था, इसलिए उसे काम पर से हटा दिया गया। बाबूजी का अधिक समय यात्राओ पर बीतने लगा। मा की ममता का कोश चौबीसो घण्टे रत्ती के आचल मे खाल दिया गया।

आनेवाले दो महीन रत्ती के लिए कठिन कारावास के दिन साबित हुए। इस बीच मा शायद ही बाजार गई हो। आगन म आकर काव काव करत कौवा और फुदक्ती गौरैयो के अलावा रत्ती ने और कुछ नही देखा। रत्ती अगर चाहती तो मा उसे लेकर कही भी जा सकती थी। मन बदलने के लिए एक बार ननिहाल जान की बात उठी, लेकिन रत्ती का मन उसके ककाल होते जिस्मे म कहा था जो किसीसे मिलन या कही जाने की बात सोचता।

तभी एक दिन मा ने एलान कर दिया कि रत्ती का रिश्ता तय हो गया है। लडका इण्टर मे पढता है, घर अच्छा है छ जुलाई रत्ती के ब्याह का दिन तय है। ब्याह यहा नही गाव से ही होगा—घर की परम्परा के अनुसार।

रत्ती हाडमास की एक कठपुतली बनकर रह गई।

7

रघु चुपचाप चला तो गया था लेकिन इतनी आसानी से बात निपट जाएगी यह उम्मीद न बाबूजी को थी न मा को। राय साहब भी एसा ही कुछ साच रह थे। जब तक रत्ती की शादी नही हो जाती रघु के पास टिके रहन का फैसला उन्होने ले लिया था।

रघु का डर न हाता तो रत्ती का ब्याह इलाहाबाद स ही होता। इतने लोगो के आने-जाने का खर्चा बचता, लेन देन का झमट ज्यादा न हाता। इतनी दूर आखिर आता भी कौन ब्याह की तिथि इतनी नजदीक थी और न्योता भेजने मे बाबूजी ने जान-बूझकर भी कुछ समय लगाया।

शादी के समय रघु काई भी हगामा खडा कर सकता था रघु की

चाह पाकर रत्ती भी बदल सकती थी। उसकी बुझी-बुझी सूरत, सबसे कटकर बिस्तर पर पड़े रहने की दिनचर्या, किसी भी काम में पहल न करने की तटस्थता, खाने पीने के प्रति अरुचि, मां के लाख पुचकारने पर भी चेहरे पर बना रहनेवाला भाव, मां बाबूजी को डराए रखने के लिए पर्याप्त थे।

रत्ती के ब्याह की कुछ खास तैयारी होनी भी नहीं थी। दीदी के गहने कपड़े उसके लिए सुरक्षित थे। लेन देन के लिए कुछ मामूली कपड़े खरीद लिए गए और शादी से दस दिन पहले गांव पहुंचने की योजना तय हो गई।

यह बताना बड़ा मुश्किल था कि रत्ती अपने एकान्त क्षणों में क्या सोचती रहती रघु एक हो सकता था, लेकिन रघु के अलावा और कितने आयाम रत्ती के सामने एक साथ खुल गए थे। ताज्जुब इस बात का था कि इन आयामों के अस्तित्व की बात भी रत्ती के दिमाग में कहीं दूर-दूर तक न थी। अपनी पूरी ज़िन्दगी में मां के इतने सान्निध्य की बात रत्ती ने सोची भी नहीं थी। मां की ममता की फूटी अजस्र धाराओं में रत्ती नहा उठी थी। बाबूजी का धीर गम्भीर रहनेवाला चेहरा इतना सहज, इतना सामान्य हो उठा था कि रत्ती कहीं खुद को ही अपराधी मानने लगी थी। काश, उसे मालूम होता, मां के मन में उसके लिए इतनी ममता और पिता के हृदय में इतना स्नेह है रघु से अनायास कट जाने की वेदना उसके दिल को चीर जाती, लेकिन वहीं मां बाबूजी का प्यार उसके ज़ख्मों को सहलाता रहता। रघु की यादों की छटपटाहट वह मां की थपकियों में भूल जाने की कोशिश करती। रत्ती कभी कभी महसूस करती, कितनी राहत, कितनी सुरक्षा, कितना स्नेह है इस नये एहसास में। ममता की आधी छांह भी अगर उस उम्र से अलग होने के बाद मिली होती तो प्यार की इन कांटों भरी राह पर वह क्यों चलती जहां हर ओर चुभन, हर ओर जख्म और उसपर छिड़का जानेवाला नमक ही मिला उसे। मां के सीने से लगी एक पखेरू की तरह दुबककर वह सोचती चलो अच्छा हुआ, एक चक्रवात में पड़ते पड़ते बच गई। लेकिन रघु की धीर गम्भीर मुद्रा से अधिक देर चैन न लेने देती। उसकी आंखा

की गहराइया उसे चारा ओर से घेरने लगती तब उसका मन फफक कर रो पडने को होता न जाने क्या मा बाबूजी और रघु विरोधी दायरा मे आ खडे होते और दोनो के बीच की रस्साकशी रत्ती अपनी सास के हर वजन पर महसूस करती।

गाव के लिए रवाना होने मे दो दिन बाकी थे। भाभी ने मा के सामने एक प्रस्ताव रखा, एक दिन मगल गान यहा भी होना चाहिए। भाभी की हर बात मा अमूमन मान लेती हैं और यह तो खास खुशी का मौका था। सबको बुलावा भेजा गया। ऐसे मौको पर दोस्ती दुश्मनी नही देखी जाती। महरी के बिना तो कोई भी मगल काय अधूरा रहता। बुलवाया उसे भी गया। बाजार से दस सेर बडे बताशे आए। चार चार बताशा के लिफाफे भरे गए। रत्ती को उस दिन हल्दी-बुकवा लगाकर बीच मे बिठाया गया। उसके पास ही बैठी भाभी ने ढोलक सभाल ली थी। वकीलिन चाची के हाथ म मजीरा था। अन्दर के सारे ऊहापोह के बावजूद रत्ती का मन उस दिन हल्का था।

भाभी ने ढोलक पर थाप दी। उसकी आवाज सभी आवाजा म तरती हुई हवा मे गूजने लगी मेरा बना ईद का चाद रत्ती के दिल मे एक चुभन हुई। उसने अपना सिर घुटना पर रख लिया। उसकी आखें अपने आप बन्द हो गइ। गाना-बजाना शाम सात बजे तक चला। वकीलिन चाची की छोटी बहू फिरकी की तरह नाचती रही। मोहल्ले म जहा भी, शादी ब्याह होता, किसीके घर लडका होता तो वकीलिन चाची अपनी छोटी बहू के साथ जरूर बुलाई जाती। लट्टू की तरह नाच नाचकर उनकी बहू सबके दिला मे उतर गई थी। कोयल की कूक सी उसकी आवाज पर गानेवालिया मे एक मस्ती छा जाती। हर बार दो चार नये गान उसके कोष मे होते। नये गानो का कोष रित जाता तो पुराना की फरमाइश होती। इन्ही पुराने गाना म से एक रत्ती का बहुत पसन्द था। खास कर इस गाने पर छोटी भाभी नाचती बहुत अच्छी थी। रत्ती की अनकही फरमाइश उस दिन भी छोटी भाभी तक पहुची। महरी की बडी बेटी राजो के हाथ मे ढोलक पकडाकर भाभी भी नाच के घेरे मे आ गई। दानो भाभियो का सम्मिलित स्वर बढे

उत्साह से गूंजा मेरे गोरे बदन पर हरी बूटी घुंघरू और पाजेब की सम्मिलित छनछन पर औरतें झूमने लगीं। तालियों की पट पट ऐसे शुरू हुई कि रत्ती की बन्द आंखें खुल गई।

ठीक सामने ढोलक की थाप के साथ तालियों की लय मिलाती हुई महरी अपलक रत्ती को घूरे जा रही थी। उसके होंठ गाने के बोलों के साथ खुल बन्द हो रहे थे। रत्ती की आंखें महरी की आंखों से बंध गईं। मन का इन्द्रजाल टूट गया। रंगीन बादलों के बीच उड़ती हुई रत्ती अचानक जमीन पर आ गिरी। वास्तविकता की चोट खाकर मन एकबारगी भयभीत हो उठा। महरी ने उसके मन का तूफान भांप लिया। सबके साथ गाते गाते उसके होंठ एक रहस्यमय ढंग से मुस्कराए और वह फिर गाने में मस्त हो गई।

गाना बजाना खत्म हुआ तो बताशे भरे लिफाफों का थाल लेकर मां आई। महरी झपटकर उठी, 'सबसे पहले बिटिया का आंचल भरो बहू जी।'

उसने रत्ती का आंचल खींचकर मां की ओर बढ़ा दिया। मां ने मुस्कराते हुए एक लिफाफा रत्ती के आंचल में डाल दिया। आंचल का छोर रत्ती के हाथ में पकड़ाते हुए महरी ने अपने पान से रंगे दांत दिखा दिए, 'मुबारक हो बिटिया।'

आंचल का सिरा मुट्ठी में पकड़े हुए रत्ती ने कागज का कोरापन महसूस किया। उसकी मुट्ठी ज़ोर से भिंच गई।

हमेशा के लिए रत्ती एक नई राह पर अग्रसर हो जाए इससे पहले रघु एक बार, सिर्फ एक बार, उससे मिलना चाहता था। रघु गुनहगार था, रत्ती की आंखों में भी अपराधी था उस दिन रत्ती ने जो कुछ सुना अगर वह सब सच था तो रघु के अपराध से कौन इन्कार कर सकता था? फिर भी रत्ती रघु का आग्रह टाल नहीं सकती थी।

नियत समय पर जब वह अशोक के नीचे पहुंची तो रघु उसका इन्तजार कर रहा था। दोनों एक-दूसरे के सामने पल भर ठिठके फिर एक-दूसरे की गिरफ्त में ऐसे आ गए जैसे कभी अलग न होने की कसम खा रहे हों रत्ती अपना आपा खो बैठी, रघु अपना संयम भूल गया पेड़ा

हो रहा है रत्ती सच नही लग रहा है, बिल्कुल सच नही ।'

× × ×

दूसरे दिन शाम की गाडी से रत्ती का सारा परिवार गाव के लिए रवाना हो गया। इन्ना को चिटठी पहले ही डाल दी गई थी

सारी राह रत्ती खिडकी पर बैठी खुले आसमान को निहारती रही। सूरज डूबने से पहले उडते परिन्दा के साथ उसका मन उडता रहा काश सबकी नजर बचाकर वह उन्हीके साथ उड सकी होती, मा-बाबूजी के अचानक उमड आए प्यार के समुद्र के ऊपर, रघु की खुली मुक्त बाहो के दायरे मे, ममता की जकडती इन कडिया से मुक्त।

सूरज डूब गया तो रत्ती के मन मे उडते परिन्दो का एहसास जागता रहा। आखें खालिस अधेरे का मुकाबला करते करते थककर अपने आप बद हो गइ।

रघु को लेकर उसने जिन्दगी के नन्हे नन्ह सपने बुने थे। कुछ रेखाए *खीची थी जि ह मिलाकर वह एक सुन्दर आकृति बनाना चाहती थी,* जिसे दुनिया जिन्दगी का नाम देती है। बाबूजी अगर चाहते तो रत्ती की जि दगी की तस्वीर उन्ही रेखाओ से बनती। रघु के साथ उसकी एक प्यारी जिन्दगी होती रघु की पत्नी और उसके बच्चे की वह अपना लेती रघु सचमुच उसे प्यार करता है, वह उसके लिए सब कुछ करती।

लकिन उस दूसरे सपन बुनने का आदश मिला है। उसकी अपनी रेखाए मिटाकर कुछ नई रेखाए खीच दी गई हैं। रत्ती अब इन्ही रेखाओ का जोडेगी काश उस दिन राय साहब के सामने उसन वह नाटक न किया होता, अपना मन खोलकर साफ साफ सबके सामने रख दिया होता हा, वह रघु को प्यार करती है, उसकी जि दगी का पहला और अन्तिम पुरुष रघु ही हो सकता है । लेकिन बहुत से 'काश' मिलकर जुड भी जाए तो क्या एक असलियत उतरती है ? मा ने तो बडे गव स कह दिया, बेटी आज तुमन मेर दूध की लाज रख ली। जैस किसी *एरे गर को न सौंपी जाकर रत्ती रघु को सौंप दी गई होती तो दूध* की लाज चली जाती।

रत्ती के मन मे कई बार आया कि वह मा से पूछे कि अगर वह दूध की लाज न रखती तो क्या होता ? लेकिन इस तरह मा से कोई बात पूछ लेना सिर्फ दीदी के वश की बात थी। दीदी ने न देखा होता तो उस दिन रघु ने अपनी बीवी का गला घोट दिया होता। जमींदारी का रुतबा था। पुलिस वाले खा पीकर चुप हो गए होते। फिर रत्ती की शादी रघु से करने मे बाबूजी को कोई आपत्ति न होती

उसका रिश्ता एक ऐसी ही जगह गया भी तो था। पता नही उसकी बीवी सगी मौत मरी थी या उसे मार दिया गया था। एक बच्चा था पाच साल का। उम्र के लम्बे फासले की बात भाभी ने कही तो मा मुस्करा पडी थी, बडी उम्र के लडके के साथ हमारी रत्ती की अच्छी पटेगी।'

रत्ती उसे जानती थी। बाबूजी के साथ जब वह पढने के लिए अकेले आई थी तो वह अक्सर घर आता था। बाबूजी से न जाने किन-किन विषयो पर देर तक बाते करता रहता। शायद उन दिनो वह बी० ए० कर रहा था। बाद मे इस्पक्टर ऑफ स्कूल्स हो गया। बाबूजी से मिलने आता और बाबूजी न होते तो रत्ती से देर देर तक गप्पे मारता।

एक दिन उसने बाबूजी से कहा था, आपकी यह बेटी बडी तेज है।'

बाबूजी रत्ती की ओर गर्व से देखकर मुस्कराए थे। रत्ती शरमाकर भाग गई थी।

रत्ती का रिश्ता लेकर जब बाबूजी उसके पास गए तो उसने मना कर दिया था 'वह तो एकदम बच्ची है, और मैंने हमेशा उसे अपनी बहन माना है।'

बाबूजी चुप लौट आए थे। शायद बाबूजी की खामोशी उसे खली होगी, एक दिन वह खुद मिलने आ गया, जाने किसी दौरे पर आया था या सिर्फ इसी उद्देश्य से। एक दुबली पतली चुलबुली लडकी की जगह रत्ती दिखाई पडी तो देखता रह गया। अपनी बात वापस लेने का कितना अनुरोध उसने किया, लेकिन बाबूजी एक बार अड जाने के बाद डिगे कभी अपनी जगह से ? उसे साफ साफ मना कर दिया।

यहा तक कह दिया कि रत्ती का रिश्ता उसीके पडोस वाले गाव मे तय हो गया है, हालाकि तब ऐसी कोई बात नही थी।

अब रत्ती की जिन्दगी एक अनजान व्यक्ति से बधने जा रही थी। गाव किसीके पडोस का हो या दूर का, क्या फर्क पडता था। लडका इण्टर मे पढता था घर अच्छा था रत्ती को और क्या चाहिए सचमुच अब कोई फर्क नही पडता था अपना सब कुछ वह रघु को दे चुकी थी। जिन्दगी का एक पल उसे मिल चुका था। रत्ती को लगा अब उसे कुछ नही चाहिए, अब वह कही जाए उसकी जिन्दगी का कुछ भी हो, कोई फर्क नही पडता। काश, जिन्दगी इतनी आसान होती।

स्टेशन से सात मील की दूरी बलगाडी पर ढचर ढचर पार करके सबको समेटे बाबूजी गाव पहुचे तो इआ लोटा भर गगाजल लेकर बाहर खडी थी। सब पर गगाजल का छिडकाव हुआ। रत्ती को देखकर मुस्कराइ, 'इतनी बडी हो गई रे रत्ती!'

रत्ती ने झुककर इआ के पर छुए तो उन्होने आशीर्वाद की झडी लगा दी। जाहिर था पिछले कुछ महीनो मे जो कुछ घटित हुआ उसकी कोई खबर इआ को नही थी।

उसी शाम से घर मे चहल पहल शुरू हो गई। साझ की सझौती, सुबह की प्रभाती गा गाकर पितर जगाए जाने लगे। आधी आधी रात तक ब्याह के गीतो से आगन गूजता रहता। सुबह-शाम आकर नाइन रत्ती का हल्दी-बुकवा लगा जाती। यही तो एक आस होती है बेटी के जनम से। बेटी के कपडे धोबिन मुफ्त धोती है, कहारिन उसके नहाने का पानी मुफ्त भरती है, लगन पडने के बाद नाइन हल्दी बुकवा मुफ्त करती है और इस मुफ्तनामे का खामयाजा बेटी के ब्याह म ससुरालवाले भरते हैं। सबके लिए नय कपडे, घर सम्पन्न हुआ तो एक-दो थान, हल्के फुल्के जेवर भी ससुराल से आते हैं लडकिया जन्मती हैं तो इनके घरो मे घी के दीये जलते हैं, लडका के जन्म स तो मां-बाप मालामाल होत हैं इन बचारियो का क्या? एक एक साडियो के साथ थोडी थोडी मिठाइया पकडा दी जाती हैं, वह भी महीने भर बहू का

हल्दी-बुकवा करने के बाद।

दिन मे गेहू धोना-बीनना, दाल पीसना, चावल दाल बीनना बारात के तीन वक्त के स्वागत की तैयारियो मे घर, पास-पडोस जुटा हुआ था। गीतो की झनकार दूर दूर तक ब्याह का सदेश पहुचाने लगी। पास पडोस की गानेवालिया थम जाती तो अकेली अजोरिया की आवाज वातावरण मे गूजती रहती

रिश्तेदारो को न्योता जान-बूझकर देर से भेजा गया। कही से किसी खुटके की गुजाइश बाबूजी छोडना नही चाहते थे। रत्ती के ब्याह मे दीदी नही बुलाई गई। पता नही न्योता गया या नही। एक सौ एक रुपये का मनिआडर राय साहब ने बाबूजी के नाम भेज दिया था।

रत्ती के लिए कोई बात न रही हो, लेकिन दूसरो के लिए सबसे बडा आकर्षण साबित हुआ बिदेसिया का नाच। ऐरे गैरे ब्याहो मे यह नाच नही आता। एक रात के तीन सौ रुपये सबके बूते की बात नही। रत्ती के घरवालो की सम्पन्नता पर बिदेसिया का नाच एक बडी मुहर साबित हुई। बाबूजी ने खुले खजाने एलान किया कि इस नाच के लिए लडके वाला ने जिद की है। खरबूजा चाकू पर गिरा हो या चाकू खरबूजे पर बिदेसिया वालो के तीन सौ रुपये खडे हो गए बाबूजी ने इन रुपया का बदोबस्त कैसे किया यह उनका जाती मामला था।

बडी शोहरत हुई। दीदी की बारात इतने बडे घर से आई थी फिर भी बिदेसिया का नाच नही आया आई थी बनारस की एक अधेड-सी पतुरिया। रत्ती के घरवाला की रईसी के ठाट थे देखें अबकी दामाद कैसा आता है

आखिर छ जुलाई की शाम बारात भी आई। कुल जमा बारह आदमी। लोगो का माथा ठनका। तिलक मे भी तो पचास आदमी हो ही जाते हैं औरतो मे काना फूसी होने लगी। लेकिन द्वार पूजा के समय दूल्हे को देखकर सबकी आखें जुडा गइ। कद काठी, नाक नक्श, रग रूप जीजा मे जो-जो कमिया थी वे सब रत्ती के दूल्हे ने पूरी कर दी। रत्ती का भाग्य हजार हजार शब्दो मे सराहा जाने लगा। दिन भर के उपवास के बाद हल्दी म रगी हुई रत्ती गाव भर की भाभियो की

चुटकियां सहते सहते कसमसा उठी। रघु के प्रति समर्पण का वह एक क्षण दिन भर में एक बार भी तो उसे किसीने याद नहीं करने दिया।

मण्डप में जाने से पहले नहा धोकर तैयार होना था। हल्दी में रंगी कोरी धोती उसके सामने पड़ी थी, जिसे पहनकर फेरे पड़ने थे। पल-भर के लिए *कोहबर में रत्ती अकेली रह गई, दूल्हे की रूप चर्चा में मग्न* लड़कियां न जाने कहां मर खप गई। रत्ती के मन में आया, एकदम से आग लग जाए जिसमें जलकर उसका आसपास सब कुछ भस्म हो जाए। लपटों के बीच शांत मन से वह अपनी काया की आहुति दे दे। रूप, रस, गंध उसे कुछ नहीं चाहिए। आग से उठी हुई लपटों के साथ उसकी आत्मा ऊपर उठे, आकाश के शून्य में दर-दर भटकने लगे अपने रघु की तलाश में उस दिन तक भटकती रहे जिस दिन जिन्दगी की उम्मीदों का रिश्ता तोड़ रघु उसकी बांहों में न आ जाए।

रत्ती को याद नहीं कब उसे नहलाया गया। कब वह मण्डप में आई, चढ़ावे की रस्म कब पूरी हुई। बाबूजी के साथ गठबंधन करके मां कब बैठी कब कन्यादान हुआ, कब फेरे पड़े

दूसरे दिन जब ससुराल के गहने कपड़े पहनाकर बेटी को मण्डप में *बिठाने का समय आया तब मां अपने गहनों का बक्सा उठा लाई।* दीदी के उतारे हुए कपड़े-गहने उसे पहना दिए गए। शायद कुछ कमी महसूस हुई मां ने अपने गहने भी पहना दिए रत्ती अब पूरी तरह सजा दी गई।

गांव की बड़ी-बूढ़ियां ने सवाल किया, 'बेटी का चढ़ावा कहां है बहू ?'

सिर का पल्ला संभालती हुई मां ने जवाब दिया 'स्वराजी ब्याह हुआ है चाची! ससुराल वाले दिखावा पसन्द नहीं करते, लड़की जब जाएगी तब देंगे जो कुछ देना होगा।'

किसीने कुछ नहीं कहा। लेकिन मण्डप में सजी धजी बैठी रत्ती की आंखें तुलसी चौरे के पास बैठी इआ की बिसूरती हुई आंखों से कई बार मिलीं। उसका मन हुआ लपककर वह इआ की सिकुड़ती हुई गोद में समा जाए। मन के सारे जख्मों को खरोंच खरोंचकर ताजा कर दे।

आई । नाइन आगन मे फली जा रही थी, बिटिया को नहलाकर कल लुटिया यही तो रख दी थी। तावे की भरी लुटिया जान दिए जा रहे हैं हीरा मोती जडी थी उस लुटिया मे मूजी माग ता लाए नही बडी बिटिया का ब्याह हुआ था तो छ गजी साडी आई थी, कान मे झुमके मिले थे विदाई के समय लुटिया नही मिलेगी तो समधी खाने नहीं उठेंगे ।'

हगामा दोपहर के खाने के समय हुआ था। रत्ती के चचिया ससुर रूठ के बठे थे । नेहछू के पानी वाली लुटिया वापस नही गई थी । दोपहर ढलने लगी थी, सारे बाराती भूखे वैठे रहे । गाव भर म थू थू हो रही थी ।

नाइन को मा ने फटकार दिया, 'काहे को चाव-चाव कर रही है । साडी नही आई, हम तो नही भाग रहे हैं ।'

लेकिन नाइन का रिकाड चालू था, बेटी के जनम से आस बधती है हम लोग की हे राम, एक तावे की लुटिया के पीछे इतनी चमरई बेटी का निस्तार वहा कैसे होगा '

केसो भइया ने घुडककर उसे चुप किया । वावूजी का दाहिना हाथ केसो भाइया । जाने क्या ले दे के चचिया ससुर को मनाया गया । बाराती खाने आए, तब जाकर भूख से छटपटाते रिश्तेदारो को खाना मिला । धोबिन, कहारिन, नाइन को एक एक धोती घर स दी गई ।

नाम को दूल्हा कलेवा करने आया तो बहू बेटिया ने घेर लिया, 'लुटिया कहा छोड आए वावू जरा हम भी तो देखें चाचा की जान उसीमे बसती है या अम्मा के दहेज मे आई थी वह लुटिया हमारे ठठेरा के यहा एक रात अम्मा को भेज देते, पचास लुटिया चूही गढकर दे देता हाय हाय, एक लुटिया के पीछे नगई पर उतर आए, हमारी हीरे की कनी कैसे रहगी तुम्हारे घर ।'

छट्ठी का दूध याद आ गया होगा रत्ती के दूल्ह को। लेकिन वह भी था पक्का घाघ । मजाल है जो जुबान खोली हो ।

रत्ती के विदा की पूरी तैयारी थी लेकिन ऐन मौके पर कुछ हो गया या वावूजी ने ही पतरा बदल लिया । सुनने में आया लडके वाले बहू ले

जाने के लिए तैयार नही है।

बारात विदा होने के दूसरे दिन सारे रिश्तेदार विदा हो गए। बाबूजी की छुट्टी भी कहा थी। इलाहाबाद वापस आने की तैयारी होने लगी।

इमा का मन था रत्ती उनके पास गाव मे ही रहे। रत्ती भी यही चाहती थी। अपने प्यार की उजडी हुई मजार पर एक दीया जलाने का हक भी उस अब कहा था। लेकिन बाबूजी के मन का चोर रत्ती को अकेले गाव म इमा के साथ छोडन के लिए तैयार नही हुआ। बाबूजी न तक जो भी दिए हा, इमा चुप हो गइ। उनकी जिन्दगी का अकेलापन चार दिन रत्ती के साथ रहने से कट भी तो नही सकता था।

नियत दिन इमा से विदा लेकर रत्ती मा बाबूजी के साथ इलाहाबाद के लिए रवाना हो गई।

8

रत्ती से हुई अतिम मुलाकात के बाद रघु एकदम खोखला हो गया। गाडी के साथ इलाहाबाद से कानपुर, कानपुर से टुण्डला यात्रियो के टिकट देखते फिरने की उसकी यात्राए अर्थहीन हो गइ। अब तक की उसकी दिनचर्या काय कलाप, जिन्दगी का एक केद्रबिन्दु थी—रत्ती। रत्ती जहा भी थी, जैसे भी थी एक उम्मीद थी कि एक दिन जैसे भी हा वह उस अपनाएगा। उसके साथ की एक वाछित जिन्दगी की कल्पना ही उसके तन मन म एक विश्वास पैदा कर देती। रत्ती पर अपना एक अदश्य अधिकार उसने हमेशा महसूस किया जो अब हट गया था। उसके मन प्राण म बसी रत्ती अब किसी और को सौप दी जाएगी यह खयाल ही उसके सतुलन को विच्छिन्न किए जा रहा था। सिर पर सवार उसके चाचा जी बार बार उसे यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि रत्ती म ऐसी कोई खास बात नही अगर वह चाहेगा तो उसके लिए लडकियो की कतार लगा दी जाएगी, जिसे वह पसन्द करेगा उससे उसकी दुबारा शादी कर दी जाएगी, वह अमीर घर का लडका है, आकषणो की

कमी उसके लिए दुनिया मे सभव नही।'

लेकिन ये बातें रघु बहुत पहले सोच चुका था। रत्ती को लेकर मन म उमड आए सम्मोहन पर उसे खुद ही हैरानी हुई थी। सीधी-सादी एक जरा सी लडकी न उसके व्यक्तित्व को इस तरह ढक लिया था कि उसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार था। रघु को अपनी बीवी से कोई शिकायत नही थी। गाव के खुले माहौल म पली स्वस्थ-सुदर उसकी बीवी उसके इशारो पर उठ-बठ सकती थी। खानदानी रुतबे मे दो चार रिश्त इधर-उधर भी कर लिए जाए तो पौरुष के प्रतीक माने जात हैं। लेकिन रघु अपने व्यवस्था पसद मन मे सिफ रत्ती को बिठा पाया। उसकी व्यवस्था सिफ रत्ती को अपना पाई, वरना भरा पूरा परिवार माता पिता चाचा चाची, भाई बहन बीवी बच्चा क्या नही था उसके पास और एक रत्ती थी कि उसके आ जान स सभी रिश्ते कच्चे सूत की तरह टूट गए थे।

छोट भाई की शादी मे पहली बार जेठ बनकर गया तो परदे के पीछे से झाकती अनेक आखो मे सिफ दो आखों पर उसकी नजर टिकी। सिफ एक चेहरा, किशोर, चुलबुला इस एक चेहरे पर चमकती दो आखो की अदेखी असीम गहराइयो मे रघु का वयस्क मन डूबने लगा था। इन आखो पर तैरते चचलता के अनक द्वीप रघु एक झटके मे पार कर गया। न जाने क्या दिल की असख्य धडकनो म से एक वहीं रुक गई थी चेहरा परदे के पीछे के असख्या चेहरा मे खो गया। रघु का वयस्क मन रुकी हुई दिल की धडकन वही छोड आगे बढ गया था।

दो दिन बारात रुकी। दो दिन रघु वह एक चेहरा ढूढता रहा, हर रस्मअदायगो के समय जब भी जनवासे से इधर आना हुआ रघु बेचनी से निराश होता रहा। बहू की डोली उठी तो अनेक लडकिया के बीच बेहाल होता डोली के साथ भागता वह चेहरा उसे फिर दिखाई पडा। डाली जब एक जगह रख दी गइ तो विदा होते बारातिया मे वह सबस पीछे हो गया। अजाने आकपण म खिचा वह उसके पास पहुचा। रिश्ते का अदाजा लग गया था। किशोर चेहरे पर जडी आखो की गहराइया एक बार फिर सामन आइ उसी क्षण रघु को लगा इन गहराइयों म वह

डूब जाएगा। कही डूबकर खो जाने की इच्छा इससे पहले उसके मन मे कभी नही जागी थी।

अब तक की अपनी जिन्दगी से धीरे-धीरे उसे अरुचि होन लगी। अपने चारो ओर का वातावरण उसे एकदम सहज सुगम और शायद इसीलिए उबाऊ लगने लगा। बचपन स लेकर अब तक उसे जिस चीज की जरूरत पडी उसके कहन स पहले वह हाजिर कर दी गई। फिर चाहे उसने उसका इस्तमाल किया या यूही छोड दिया। स्वाभाविक तो यह था कि इस तरह का बचपन बिताने के बाद वह एक जिद्दी, स्वार्थी, परले सिरे का घमडी या ऐसा ही कुछ होता। लेकिन प्रकृति न जिस साचे मे उसका दिलोदिमाग ढाला उसमे इस तरह की प्रतिक्रियाओ की गुजाइश नही छोडी गई। वह शान्त, गम्भीर और सर्वप्रिय बनकर बडा हुआ। रघु को याद नही जब उसके विरोधिया ने भी किसी बात के लिए उसे कभी मना किया हो।

पत्नी के प्रति उसका लगाव इतना ही था कि वह उसके साथ बाध दी गई है, जो उसके तरुण जिस्म की भूख मिटा सकती है, समय आने पर उसका निर्वाह उसे करना होगा कही कोई जाखिम नही जिसे उठाकर आदमी कुछ कर गुजरने का हौसला बुलन्द कर सके।

रत्ती को देखन के बाद उसके मन मे कुछ हासिल करने की पहली जिज्ञासा जागी। दो साल पहले बी० ए० पास करके आगे पढने की अपनी अनिच्छा वह जाहिर कर चुका था। जमीदारी के खत्म होन के चर्चे थे, इतना पढ लिखकर घर का कारोबार क्या सभालना! एक नौकरी की तलाश थी जिसे वह कर सकता था। इसीलिए जब इलाहाबाद मे उसकी नौकरी की बात चली तो बेझिझक उसने अपनी सहमति दे दी। जाहिर था कि नौकरी हासिल करने से ज्यादा उसे रत्ती को नजदीक स देखन परखने की उत्सुकता थी।

रस्म के हिसाब से रत्ती जब उसे जीजाजी कहन लगी तो पहले उसके मन मे खीझ पदा हुई लकिन कोई उपाय नही था। रघु के मन मे उठन वाले तूफाना को समझने के लिए रत्ती छोटी थी और जल्दीबाजी म काम बिगाडना रघु ने सीखा नहीं था। रत्ती के हल्के फुल्के

मजाक़ मे वह हिस्सा लेने लगा।

घर मे इधर से उधर चिड़िया की तरह फुदकती रत्ती रघु के व्यक्तित्व के झरोखे पार करती गई। रत्ती के व्यवहार म होने वाले परिवतनो को वह बड़े ध्यान से परखता रहा। उसे किसी ऐस मौके की तलाश रहने लगी जब वह अपने मन की बात रत्ती के सामन रखता और रत्ती पर उसकी सही प्रतिक्रिया होती।

यह सच है कि रत्ती के साथ हुई उसकी तमाम मुलाकातो मे रत्ती ने कभी कुछ कहा नही, लेकिन उसकी भावभीनी आखें जिस अपेक्षा से रघु की ओर उठती उस समझने म उसने कभी गलती नही की। रत्ती के साथ की सम्मिलित ज़िन्दगी म एक ही बाधा थी उसकी बीवी। अगर वह रास्ते स हट जाती तो दुनिया की कोई ताकत उसे रत्ती को पा लेन से रोक नही सकती थी। कई रातें जाग जागकर रघु ने बडे ठडे दिमाग *से सोचा, तब उसे एक तरकीब सूझी। ऐसा नही था कि इस तरकीब पर वह उछल पडा हो इस ख़याल मात्र से वह हफ्ता बेचैन रहा,* लेकिन रत्ती को हासिल न कर पाने की बेचनी जब कई गुना बढ गई तब रघु खामोश बैठा नही रह सका।

रघु जानता था रत्ती उसे चाहती है। उसकी बीवी के होत हुए भी उसका बढा हुआ हाथ वह थाम लेगी। लेकिन बीच मे उसके कट्टर माता-पिता थे जो सौत पर अपनी बेटी कभी नही देत। रघु के सामने उस एक तरकीब के अलावा कोई रास्ता नही था महीने भर की छुट्टी लेकर गाव के लिए अब वह रवाना हुआ तो उसे पूरा विश्वास था कि जब वह लौटगा तो उसकी दुनिया बदल चुकी रहगी। दो चार महीन गमी म कट जाएगे फिर घरवाले शादी का प्रस्ताव रखेंग। तब वह अपन चाचा का अपने दिल की बात बता देगा और हर बार की तरह इस बार भी चाचा उसकी इच्छा पूरी करके निहाल हो जाएग।

नौकरी लगन के बाद पहली बार गाव गया था इतने दिन रहने। तीन चार रातें बीवी के साथ भी अच्छी हो गुज़री। पानी बदलने से हल्का-सा जुकाम था, सिरदद का बहाना करके रात भर लेटा रहता। बीवी सिर पैर दबाते दबात थककर सो जाती। दो चार दिन ऐस भी

निकल जाने मे कोई हज नही था।

पाचवी रात अपनी तरकीब पर पहली बार अमल करने का फसला रघु ने कर लिया। दोपहर से ही मन पक्का करता रहा शाम को चाचाजी के साथ खेतो की सैर करने निकला। इधर-उधर की तमाम बातें की। हवेली के चारो ओर पक्की दीवार खिचवाने की बात तय हो गई। लौटकर दोस्तो के साथ गपशप करता रहा। सबके साथ रात का खाना खाया फिर थकान का बहाना करके जल्दी ही सोने चला गया।

काफी देर बाद बीवी दूध का गिलास लेकर दाखिल हुई। रघु उसे गौर से देखता रहा। न जाने क्या सोचकर बीवी ने दूध का गिलास सिरहाने रखे स्टूल पर रख दिया और पास आकर खडी हो गई।

'गोविन्द कहा है ?' उसने बेटे के बारे मे पूछा।

'अम्मा के पास।'

रघु बोला नही। हाथ पकडकर बीवी को पास बिठा लिया। कुछ देर वह आखें बद किए पडा रहा।

'आज तबीयत कसी है ?' बीवी थोडा और पास आ गई।

रघु ने कोई जवाब नही दिया। हाथ का खिचाव बढा। उसने बीवी को पास लिटा लिया। दोनो चुपचाप लेटे रह फिर अलसाए हुए रघु ने बीवी की ओर करवट बदली। उसका हाथ गठे हुए जिस्म पर फिसलने लगा। उत्तेजना की ऊष्मा से सासें गम होने लगीं।

पल भर के लिए रघु सब कुछ भूल गया। रत्ती रत्ती को हासिल करने की बचैनी बीवी का मासूम चेहरा सिरहान रखे गिलास भरे दूध पर एक नजर पडी। दूसरे ही क्षण रघु की गम सासो के नीचे तडपता हुआ बीवी का जिस्म था उसकी रगो मे गम लोहे जैसी पिघलती तप्त वासना थी और सब शू य, एकदम शू य इतनी हिंसा उसमे पहले कभी नही जागी थी।

'दूध नही पियोगे ?' काफी समय बाद नोचकर फेंके गए अपन कपडे टटोलती बीवी न पूछा।

'तुम पी लो,' रघु की आवाज उनीदी थी, 'जरा खिडकी खोल देना, बडी गर्मी लग रही है।'

बीवी ने कपडे पहने, बगल वाली खिडकी खोल दी। एक साँस में ठंडे पड गए दूध का गिलास खाली कर दिया, फिर चुपचाप आकर पति की बगल में लेट गई।

आधी रात बीत चुकी थी। रघु की आँखों में पल-भर को भी नींद नहीं आई। दम साधे वह ऐसे पडा था जैसे कोई गहरी नींद सो रहा हो उसके दिल की धडकन एकबारगी रुक जाने को हुई जब उसकी बीवी आहिस्ता से उठकर दरवाजे की ओर बढ़ी। अभी कुंडी खोल ही रही थी कि आ ओ करती हुई वहीं बैठ गई। रघु को लगा किसी ने भरा हुआ घडा झटके से उलट दिया हो। एक प्रतिक्रिया हुई कि एकदम से उठे पूछे कि क्या हुआ, लेकिन गहरी नींद सोने वाला आदमी इतना आसानी से थोड़े ही उठता है। वह पडा रहा! दरवाजा खुलने की आहट उसने सुनी।

दरवाजे के बाहर होते होते जब दूसरी बार कै हुई तब रघु को अपनी बीवी की पतली बेजान आवाज सुनाई पडी, अम्मा '

जरा देर में सारा घर जाग गया। रघु की बीवी कै पर कै करती जा रही थी। चाचा की आवाज आई, 'काहे को मारा घर सिर पे उठाए जा रही है खाने पीने में गडबडी की होगी छोटी बहू से कहो दो बूँद अमृतधारा दे दे, ठीक हो जाएगी ।'

चाची ने आकर रघु को जगाया, 'बाहर जाकर सो जाओ बाबू, सारा घर उल्टी से भर गया है कहाँ गन्दगी में पडे रहोगे!'

आज्ञाकारी बच्चे की तरह दरवाजे पर फैली गन्दगी से बचता बचाता रघु बाहर चला गया। चाचा की चारपाई के पास एक बिस्तर उसका भी लगा दिया गया था।

सुबह होते होते बीवी के हाथ पर ठंडे पडने लगे। गाँव के हकीम को बुलाया गया। बडी पूछताछ के बाद लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि दूध में ही कुछ पड गया होगा। छोटी बहू ने अपना अपराध कबूल कर लिया कि रात दूध उसने पीतल की कढ़ाई में औटा दिया था। गनीमत थी कि एक गिलास दूध रघु की बीवी ही निकालकर लाई थी बाकी सारा दूध जमा दिया गया था।

जमी हुई दही की बडी सी मटकी घूरे पर फेंक दी गई। रघु की मा न अपना भाग्य सराहा। लाख लाख देवी देवता गोहराए कि दूध उसके बेटे ने नहीं पिया वरना आज वह कहा की होती।

आने वाले तीन दिन तक रघु की बीवी निढाल पडी रही। रघु उसे दिन की रोशनी मे दो एक बार देख आता। फिर सब कुछ सामा य हो गया। बीवी का सानिध्य उसकी गम सासो के नीचे बीवी का जिस्म बार बार तडपा उसकी रगो मे वासना बार बार पिघली उसकी तप्त हिंसा मे नहाकर उसकी बीवी ध य हो उठी। यार दोस्तो से मिलना बरकरार रहा। चाचाजी के साथ शामे कटती रही। दस दिन और बीत गए।

उस दिन गाव का बाजार था। छोटे बच्चो को लेकर रघु बाजार गया। सब को अलग-अलग खिलौने, बताशे, मिठाई दिलवाकर काफी देर बाजार का चक्कर काटता रहा। लौटन लगा तो दो बीडे पान के भी बधवा लिए।

रात का घर के सारे काम खत्म करके बीवी आई तो रघु उसका इ त-जार कर रहा था, लपककर उस अपनी बाहो मे भर लिया।

लगता है इस बार मुझे जिन्दा नही छोडोगे बीवी का जिस्म कस मसा उठा उसके होठो पर तप्ति की मुस्कान थी।

रघु ने अपनी गिरफ्त ढीली कर दी। जेब से निकालकर एक पान खुद खा गया, दूसरा बीवी की ओर बढा दिया।

सुबह का कोलाहल आगन म शुरू हुआ तो रघु उठा। बीवी बेखबर सो रही थी। सिरहाने खूटी पर टगा कुर्ता उतारकर उसन पहना, एक उचटती नजर बिस्तर की ओर डाली और कमर से बाहर हो गया।

छोटी बहू आगन म झाडू लगा रही थी। रघु को कमरे से निकलता देख उसने चेहरा घुमाकर पल्लू थोडा आगे कर लिया। आगन का दर-वाजा खोलकर वह बाहर आ गया। सुबह का झुटपुटा साफ हो चला था। इधर उधर देखे बगर वह सीधा खेतो की ओर निकल गया। सुबह की ताजी हवा उसे अच्छी लगी। गाव आए उसे प द्रह दिन बीत चुके थे

अचानक रत्ती का खयाल आया। वह इस समय क्या कर रही होगी, वह यूही सोचने लगा।

छुट्टिया अभी पन्द्रह दिन बाकी थी। पहले प्रयास की असफलता का खामयाजा चुकाने के लिए इतना समय काफी था।

उस दिन रघु की बीवी दिन चढे तक सोती रही। रसोई अकेली छोटी बहू न सभाली। बेटा इतने दिनो बाद घर आया था। दोना जवान थे। इतनी समझ तो घरवाला मे होती है किसीने इस ओर खास ध्यान नही दिया। दोपहर का खाना छोटी बहू जेठानी के कमरे म रख आई। दो एक बार उसन उठाने की कोशिश की लेकिन भरी नीद थी जा टूटने का नाम नही ले रही थी।

'रख दे छोटी, अभी उठती हू।' कहत हुए करवट बदलकर रघु की बीवी फिर सो गइ। छोटी बहू ने खाना रख दिया, मुस्करात हुए जेठानी के अस्त-व्यस्त कपडे ठीक किए फिर कमरे का दरवाजा भेडकर चली गई।

बीस प्राणियो के घर मे एक बहू का न उठना या राज के कामो मे शामिल न होना किसीको अजीब नही लगा खासतौर पर जब परदेसी बेटा घर आया हा तमाम दूसरे दिना की तरह वह दिन भी बीत गया।

रात को रघु कमरे मे आया ता दोपहर की थाली खुली पडी थी शायद दो चार लुक्मे ही खाए गए थे। रघु न बहन को बुलाकर जूठी थाली उठवाई, भाभी के लिए एक गिलास दूध मगवाया और अन्दर से दरवाजा बन्द करके पलग पर आ गया। बराबर बीवी को देखकर मन का जानवर धीरे-धीरे जागन लगा था।

सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। जिस्म की भूख मिटाकर उसने बीवी को झिझोडा और दूध का गिलास उसके होठो स लगा दिया। बीवी की झपती हुई पलकें ऊपर उठने की कोशिश मे फडफडाईं लेकिन वजन भारी था गटगट करके दूध का गिलास एक सास म उसने खाली कर दिया। उसे लिटाकर रघु भी आराम से लेट गया। यह उसके धय की परीक्षा थी और शायद भविष्य का आखिरी दुरावह स्वप्न।

लगभग बीस मिनट बाद बगल मे पडी बीवी के गले से निकलती घुर-घुर की आवाज उसने सुनी । थोडी देर बाद बेजान से हाथ पैर भी शायद छटपटाने की कोशिश मे हिले डुले फिर शान्त हो गए। चौकन्ना होकर रघु न एक नजर अपनी बीवी पर डाली। चेहरा अधेरे म ठीक से दिखाई नही पडा लेकिन आखो की पुतलिया अधखुली थी। यह मौका अगर हाथ से निकल गया ता दुबारा नही मिलेगा।

रघु उठा। जेब से रूमाल निकालकर उसने बीवी के गले पर रखा रघु के व्यक्तित्व का सारा सयम बहशत मे बदल गया। दूसरे ही क्षण वह अपनी बीवी के सीने पर था। उसके हाथ पूरी ताकत से बीवी के गले पर जकडते जा रह थे।

बीवी के गले की घुर घुर शायद तेजी मे बदल गए थे। बगल वाली खिडकी फटाक स खुली छोटी बहू की आकृति पल भर रुककर विलीन हो गई। रघु के पोर पोर का लहू बफ बन गया।

दरवाजे पर तेजी से थाप पडने लगी ता उसकी तन्द्रा टूटी। यन्त्रचालित पुतले की तरह वह बीवी के सीने से उतरा, रूमाल जेब म रखा और दरवाजे तक गया, कुडी खोल दी। जागे अधजागे कई चेहरे दरवाजे पर थे। बदहवास चाचा की आखो मे वह पल-भर दखता रहा फिर आगे बढने को हुआ। एकदम आगे बढ आए चाचा की ढीली भुजाओ मे उसका जवान जिस्म अचानक बूढा हो गया।

घर मे सन्नाटा कायम रखने का एलान करते हुए रघु को अपनी बाहो म समेटे राय साहब सबकी आखो स ओभल हो गए। रघु न अपन चाचा को साफ साफ सब कुछ बता दिया।

बहू का बेशम जवान जिस्म खतरे की सीमा पार नही कर पाया। उसके जिस्म का जहर घरेलू उपचार से निकाल दिया गया। उस रात के बाद रघु अपनी बीवी से फिर नही मिला।

महीने भर बाद जब रघु की छुटिटया खत्म हुईं तो काम पर वापस आन की इजाजत उसे नही मिली। राय साहब की जिद पर एक महीन की छुट्टी उसे और लेनी पडी। यह पूरा समय उसका राय साहब के साथ ही बीता। कुछ दिन घर पर रहने के बाद जब बडी बहू के स्वास्थ्य म

सुधार होने लगा तब राय साहब रघु को लेकर हाथ से निकलती जमीदारी के दौरे पर चले गए। इस बीच रघु से उनकी तरह तरह की बातें हुई। अपने मन का एक-एक कोना उसने राय साहब के सामने खोलकर रख दिया।

सारी बात सुनने समझने के बाद राय साहब ने रघु से एक ही बात कही 'अगर तुम सचमुच चाहते हो तो रत्ती तुम्हें मिलेगी। लेकिन उसके लिए तुम बहू की जान नहीं लोगे।'

रघु ने राय साहब की बात पर अमल करने का वचन दिया।

दो महीने पूरे हुए तो रघु अपने काम पर वापस आ गया। राय साहब ने कुछ दिनों बाद इलाहाबाद आकर बातचीत आगे बढ़ाने का आश्वासन उसे दे दिया था। रघु को अपने चाचा पर विश्वास था।

रघु नहीं चाहता था कि इस पूरे किस्से में रत्ती को लाया जाए। सबके सामने एक कटघरे में खड़ा करके उससे कुछ पूछने या कबूलवाने की बात तो दूर थी। लेकिन राय साहब कच्चे खिलाड़ी नहीं थे। कितने ही साँप उन्होंने यूँ ही मार दिए थे उनकी लाठी को एक खरोंच भी नहीं लगी थी। उन्होंने जिद करके रघु को इस बात पर राजी कर लिया कि रत्ती अगर दबी जुबान भी अपनी चाहत की बात सबके सामने कबूल कर लेगी तो आगे के सारे मामले वह सम्भाल लेंगे। रत्ती के नाबालिग होने से कोई फर्क नहीं पड़ता रिश्ता तो बालिग में तय होना था।

बड़े झिझकते हुए रघु उस ड्रामे के लिए तैयार हुआ था। रत्ती के सामने उसने खुद को कितना अपराधी महसूस किया। बातचीत का सिलसिला उस दिन जहाँ शुरू हुआ और जिस तरह उसे खत्म किया गया। रघु को समझते देर नहीं लगी कि राय साहब का फैसला उसकी पूरी जिन्दगी में पहली बार उसके खिलाफ जा रहा था और यह कि वह भी उन तमाम लोगों में से एक है जिसे राय साहब जब जिस तरह चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं। रत्ती को खोने के खतरे और इस एहसास की यंत्रणा में उस दिन उसे कोई फर्क दिखाई नहीं पड़ा था।

विश्वासघात और अपमान से आहत वह एक हारे हुए जुआरी की तरह उस दिन वापस आ गया। राय साहब उसीके घर में डटे रहे

'अपने साथ ले चलने की बात अब नही कहोगे ?' रत्ती ने अपनी दोना बाह रघु के गले मे डाल दी।

'कहा चलोगी ?' रघु बात की गहराई से चौंक पडा।

'वही, जहा ले चलन की बात किया करते थे।'

रत्ती को अपनी बाहो मे समेटते हुए रघु ने सीने से लगा लिया। बोला कुछ भी नही।

'तुम्हारे बिना अच्छा नही लगता।' रत्ती ही फिर बोली।

रघु एक हाथ स उसका सिर थपकने लगा।

आने वाली मुलाकातो म रत्ती अपना सवाल दोहराती रही। सवाल की हर आवृत्ति के साथ उसके मन की बेचैनी बढती गई। उसकी हर बेचनी के साथ तूफान से पहले वाली उमस रघु के मन मे घर करती गई। रघु स्थिति की गम्भीरता से वाकिफ था लेकिन रत्ती के सवाल जब सामने आकर खडे हा जाते तो कुछ करते-करत वह रुक जाता। उसके अपने मन की बेपनाह स्थिरता पनाह ढूढने के लिए बौखलान लगती। रत्ती की कातर आखो की विह्वलता, उनमे डूब जान का आग्रह रघु के अपने वस की बात नही थी। उसका ऊपर से सपाट दीखनेवाला सयम जाने कब का खोखला हो चुका था।

दाना ने एक दिन तय किया, हम कही भाग चलेंगे। दुनिया, समाज सबकी नजरा स दूर।' दिन, समय, स्थान तय करने की बात उस दिन अगली मुलाकात के लिए छोड दी गई।

9

भागने का दिन, समय तय हो गया तो रत्ती ने सोच-समझकर एक योजना बनाई। पिछल दिनो उसके जेठ की एक चिटठी बाबूजी के नाम आई थी, साथ म नत्थी एक गुमनाम चिटठी और थी जिसमे रत्ती के चाल चलन पर टिप्पणी की गई थी और स्पष्ट शब्दा म लिखा था कि वह अपने बहनोई के बडे भाई से फसी है। उसे तीन महीने का पेट

बहनोई का बड़ा भाई है। आपके खानदान की गरिमा मुझ नाचीज से मैली हो ऐसा मैं हरगिज़ नहीं चाहती। समाज ने मुझे आपके लड़के से बाँध जरूर दिया लेकिन एक पल के लिए भी वह पुरुष मेरे मन से नहीं गया जिसे मैं अपना पति मानती हूँ। ज्यादती उसके साथ हुई है जिसके अस्तित्व पर आपका बेबुनियाद अस्तित्व थोपा गया है। मैं उसीकी हूँ और हमेशा रहूँगी। शादी में कोई ऐसी चीज आपकी ओर से मिली नहीं जिसे वापस करने का सवाल पैदा हो। मेरी माँग में भरा गया सिन्दूर भी मेरी नाइन के सिन्होरे का था। मुझे मालूम है ब्याह में दोनों ओर का खर्चा मेरे पिता ने उठाया था। इस विवाह में अगर आपको कुछ मिला नहीं तो आपने कुछ खोया भी नहीं। मेरी साफगोई आपको पसन्द आएगी ऐसा मेरा विश्वास है।'

पिता के पत्र में माँ के सिरहाने से उठाकर ससुराल वाला पत्र पढ़ लेने की गुस्ताखी के लिए रत्ती ने माफी माँगी, और साफ शब्दों में लिखा बचपन से ही आपके दिखाए हुए रास्ते पर चली हूँ। आपने कहा था जिन्दगी का फैसला अपने विवेक से खुद लेना चाहिए। मेरा फैसला आपको मान्य नहीं होता, इसलिए लिया नहीं, माँ ने दूध का वास्ता दे दिया। अपने ढंग से जीने का हक मुझे जिन्दगी नहीं देगी क्योंकि मैं नाबालिग हूँ। मौत के घर उम्र नहीं पूछी जाती, इसलिए दस्तक वहीं दूँगी। यह जिन्दगी मैं जी नहीं पाऊँगी। आप एक पल के लिए भी मत सोचिए कि आपकी बेटी कायर है। अब तक जितना सहना पड़ा है। उससे आगे की हिम्मत टूट गई है। जब यह पत्र आपके हाथ में पड़ेगा मैं गंगा की लहरों को समर्पित हो चुकी रहूँगी। साथ का पत्र आप उन लोगों को भेज सकते हैं जिनके हाथों सौंपकर आप मुझसे मुक्त हो चुके हैं। रत्ती अपनी पढ़ाई लिखाई का दुरुपयोग कर रही है, इसलिए बेटियों को पढ़ाने की बात भूल जाइए बाबूजी बेटियाँ माँ-बाप के सिर चढ़ा हुआ पाप है, जितनी जल्दी, जितने सस्ते में उनसे मुक्ति मिले ठीक है।'

रत्ती ने दोनों पत्र एक लिफाफे में बन्द कर अपने बिस्तर के नीचे छिपा दिया। उस दिन सारे घर की उसने जमकर सफाई की, सबके

कपडे बटोरकर धोए, छोटी बहनो की कघी चोटी की, दर तक बाबूजी की किताबा से गर्द झाडती रही शाम का पूरा खाना बनाया। सबका खिला पिलाकर दस बजे रात के करीब मुक्त हुई तो नाक कान, गले का जेबर एक रुमाल मे बाधकर बिस्तर के नीचे छिपे ब द लिफाफे के पास रखा। मा की एक सादी खद्दर की धोती और तौलिया लेकर वह गुसलखान मे घुस गई। हाथ की चूडिया तोडकर उसने नाली मे बहा दी। माग का सिंदूर रगड-रगडकर साफ कर दिया। साबुन लगा लगाकर बालो का तेल छुडाया फिर नलका खोलकर नीचे बठ गई।

कार्तिक का महीना शुरु हो गया था। न जाने कितने बरसा से इम्रा कार्तिक नहाती आ रही थी। रोज चुचुहिया की आवाज पर उठना, ताजे गोबर से तुलसी चौरा लीपना, बगल म धोती, हाथ मे कमडल लटकाए घर से गगाजी की दूरी नापना पितरो को पानी दना रोज़ रोज की याचना दोहराना और सूरज उगन से पहले घर आ जाना। कार्तिक नहान वाली औरतो की होड मे इम्रा हमेशा प्रथम आती फिर पूर्णाहुति का नहान, पूर्णिमा का मेला। इस मेले मे शामिल होने की कितनी ललक रहती रत्ती के मन मे। एक समय था जब इम्रा का अकेलापन बाटने बाबूजी हर साल पूर्णिमा के मले पर गाव जाते। अब तो बरस बीत जात है, इम्रा की याद भी बाबूजी को शायद ही आती हो। मा हर महीने पच्चीस रुपय का मनिआर्डर ज़रूर भिजवा दती है। इम्रा कार्तिक भर अ न नही खाती। मगली का दिया हुआ सेर डेढ सेर दूध भी औटा-औटाकर घी निकालने के लिए जमाती रहती है। बटे के लिए असली घी आने जाने वाले के हाथ भेज देती है। जाडा की रात म मटठा गरम करके पीती है। रत्ती ने इम्रा का कइ बार टोका है, 'कितनी कजूस है इम्रा आप!'

इम्रा रत्ती की बात अनसुनी कर देता, कई बार कहती, लका की इतनी बडी मना हम पार नही लगा सकत न जिसके कधो पर इतना भारी बाझ है वह घासलेट खाकर कितने दिन जिएगा ?'

रत्ती की आखो के सामने इम्रा की सफेद माग के बीच चकाचक सिंदूर सजीव हो उठा। चौडे ताम्बइ माथे पर गोल बडी, लाल बिन्दी •

खयालों की नरम मिट्टी पर वास्तविकता का एक वज़नी पत्थर गिर पड़ा। नलका बन्द कर वह उठ खड़ी हुई। बालों का पानी निचोड़ा, एक गाँठ बाँध गर्दन पर रख ली। बदन का पानी सुखाया। माँ की सादी खद्दर की धोती पहनकर बाहर आई तो उसे कँपकँपी छूट रही थी।

दूध बाबूजी के सुबह के नाश्ते के लिए रखा था। चाय बनाने में खटपट होती, रत्ती चुपचाप रजाई में घुस गई। बाल खोलकर उसने चारपाई के नीचे लटका दिए। उस रात रत्ती ने खाना नहीं खाया। विश्वविद्यालय की मीनार घड़ी रोज़ की तरह हर पन्द्रह मिनट बीत जाने का संकेत देती रही। सवा तीन बजे तो रत्ती धीरे से उठी। गुसलखाने में पड़ी टूटी कंघी से उसने बाल सुलझाए। बालों की जड़ें अभी गीली थीं। बिस्तर में घुस रहने के कारण मुड़ तुड़ गई साड़ी को हाथ मारकर सीधी की। बाहर आँगन में खड़ी हुई चारों ओर की आहट ली फिर बिस्तर पर आ गई। बिस्तर के नीचे छिपाया हुआ लिफाफा और रुमाल में बँधे गहने तकिया के नीचे रख दिए। मीनार घड़ी ने साढ़े तीन की सूचना दी। रत्ती उठी, कमरे से बाहर आँगन में आई, एक बार फिर आहट लिया, आँगन पार किया, सावधानी से कुंडी खोली, बाहर निकलकर आहिस्ता से दरवाज़ा भेड़ दिया, नज़र अपने आप बैठक की ओर उठी। अँधेरे में भी लटकते हुए ताले का अस्तित्व उसने महसूस किया, नंगे पैर बगल की गली पार करके प्रयाग स्टेशन के सामने वाली सड़क पर आ गई। मीनार घड़ी में पन्द्रह मिनट और बीत गए। रत्ती के कदम बढ़ते रहे। हवा महल की ओर से आनेवाली सड़क पर टहलती हुई एक आकृति उसने देख ली थी।

रघु ने सोचा था रत्ती को अपने झाँसी वाले दोस्त के यहाँ कुछ दिनों के लिए पहुँचा देगा। फिर इधर की प्रतिक्रिया देखकर आगे की योजना बनाई जाएगी। रत्ती इस बात के लिए तैयार भी हो गई थी। लेकिन ऐन मौके पर उसे जाने क्या सूझी किसी अनजान जगह जाकर रहने से उसने इन्कार कर दिया। बड़े स्टेशन के विश्रामगृह में दो घंटे विचार विमर्श के बाद रघु ने उसे एलगिन रोड पर अपने एक परिचित वकील के यहाँ टिका दिया। तय हुआ दो-तीन दिन ऐसे ही कटेंगे फिर

हवा का रुख देखकर आगे की बात तय की जाएगी।

रघु के परिचित वकील साहब के इतने बड़े बंगले में रत्ती ने अपने लिए जो कमरा चुना वह पीछे के सहन में खुलता था। वकील साहब के मुंशी मवक्किल आगे के कमरों में आते-ठहरते—उधर ही एक बड़ा कमरा कानून की किताबों से भरा उनका दफ्तर था। रघु से उनका खानदानी परिचय था। उनके खास क्लाइंट कभी कभी आकर रहते भी थे। रत्ती अगर दो महीने भी वहां रहना चाहती तो रह सकती थी। रघु उसे पहुंचाकर चला गया था। उसे अपने घर पर बना रहना था, सबकी नज़र के सामने।

सुबह ग्यारह बजे तक कुछ नहीं हुआ। कुछ होने के इन्तजार में करवटें बदल-बदलकर रघु जब थक गया तब उठकर उसने चाय बनाई। बाहर छत पर से अखबार उठा लिया। उलट पलटकर खबरें देखीं, तीन प्याला चाय पी फिर सोचने लगा रोजनामचे से फारिग हुआ जाए तभी दरवाज़े पर थाप पड़ी। रघु को इसीका इन्तजार था। पैरों में चप्पल फंसाते हुए लपककर सीढ़ियों की ओर बढ़ा।

दरवाज़ा खोलते ही बाबूजी अन्दर आ गए। दरवाज़ा बन्द करके रघु उनके पीछे-पीछे अन्दर तक आया। घुटनों तक धूल में सने हुए पैर, उड़ा हुआ चेहरा, सूजे हुए आंखों के पपोटे, थरथराता हुआ जिस्म रघु कुछ कहता इससे पहले ही बाबूजी ने उसके पैर पकड़ लिए, 'मेरी इज्जत तुम्हारे कदमों पर है रघु!'

रघु सिहर उठा। रत्ती के बारे में उससे पूछा जाएगा यह तो वह जानता था लेकिन इस दृश्य की कल्पना उसने नहीं की थी। बाबूजी को उठाने की उसकी कोशिश जब बेकार हो गई तो वह भी वहीं उनकी बगल में बैठ गया। बाबूजी रोने लगे थे, 'कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहूंगा रघु मुझपर दया करो'

अगर कोई अकड़कर बात करता, उल्टी सीधी कहता, झगड़ा मोल लेता तो रघु मुकाबला कर सकता था इस निरीहता का कोई जवाब उसके पास नहीं था। वह बुत बना उसी तरह बैठा रहा। उसकी रगों का सर्द होता खून भावुकता के ताप से पसीना बनकर ज़रूर उसके

चेहरे पर उभर आया होगा ! बाबूजी की अनुभवी आखें बरस रही थी, 'मुझे मेरी रत्ती लौटा दो रघु मैं कही का नही रहूगा छोटी छोटी लडकिया हैं मेरी मैं भी कितना बेवकूफ था, सुबह छ बजे स दस बजे तक फाफामऊ से लेकर दारागज तक गगा के किनारे किनार भटकता रहा सोच रहा था कही उसकी लाश नजर आ जाए कपडे का कोई टुकडा ही दिखाई पडे मान लिया सचमुच मर गई तुम्ह मालूम है रघु रत्ती कहा है मेरी इज्जत बचा लो ।

बाबूजी की तीन घटे की गिडगिडाहट का जवाब रघु सिफ चार शब्दा म द पाया, 'मुझे कुछ नही मालूम ।'

बाबूजी ने कुर्ते की आस्तीनो स अपनी आखें पाछ ली । हाठो के किनारा का फेन कुर्ते के निचले खूट स साफ कर लिया । पपोटो के सूजन मे कपनाही नही थी । उठे तो गिडगिडाहट दढता मे बदल चुकी थी, 'शाम को फिर आऊगा । नही जानते तो कोई बात नही, उसे ढूढने मे मेरी मदद तो कर सकत हो ।'

बाबूजी चले गए रघु के घर के पास नात अज्ञात जासूस घूमने लगे । स्टेशन स उसके ड्यूटी चाट का पता लगा लिया गया । पिछली शाम रघु को चार बजे शाम की गाडी लेकर जाना था लेकिन उसने छुटटी ले रखी थी । सुबह साढे चार बजे उसे स्टेशन पर देखा गया था नही, कोई लडकी साथ नहा थी । वह अकेला ही प्लटफाम पर टहल रहा था, किसीको फोन किया था फिर अकेले ही प्लेटफाम मे बाहर चला गया था । यहा सवाल यह था कि जब उसने छुटटी ले रखी थी तो दूसरी सुबह साढे चार बजे स्टेशन पर उसके होन का क्या मतलब था

इस बीच घर-परिवार के लोग तार देकर बुला लिए गए । इसी दिन के लिए तो नात रिश्तेदार होत हैं अपना सिक्का अगर खोटा है ता इनक सामन कबूल करने से बाद म ताने चाह जितने मिलें, वक्त पर सहयोग सबका मिलता है । दूसरे दिन मिर्जापुर स मौसा जी आ गए छिउकी के पी० डब्ल्यू० डी० विभाग के चार हटटे-कटटे अधिकारियो के साथ केसा भइया उसी शाम हाज़िर हो गए । साथ मे विभाग की जीप

भी आई। जौनपुर से इंदर भइया दूसरे दिन दोपहर को आए। मां के पैरों की पाजेब, कमर की करधनी गिरवी रख दी गई। पैसा पानी की तरह बहने लगा।

रत्ती के लिए एक सूटकेस में अपनी दो धुली धोतियां बाजार से खरीदे हुए दो पेटीकोट, एक शाल, साबुन, ब्रश, मंजन एक तौलिया रघु ने अपने परिचित वकील साहब के पास पहुंचवा दिया था, जो वकील साहब का नौकर रत्ती के कमरे के दरवाजे पर रख गया। कचहरी जाते समय उन्होंने खुद आकर रत्ती को परेशान न होने की सलाह दी और कहा कि रघु से उनकी बातचीत होती रहेगी। कचहरी का अपना नम्बर दिया कि किसी भी समय जरूरत पड़ने पर वह उन्हें टेलिफोन कर सकती है।

वकील साहब के व्यवहार में कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे रत्ती को किसी परायेपन का एहसास होता फिर भी उसके मन में आया कि जब रघु से इस तरह कटकर अनजान हाथों में ही रहना था तो वह भासी ही क्यों नहीं चली गई? नौकर कमरे में चाय दे गया। खाने के लिए पूछ गया। दोपहर का काम खत्म करके पीछे नौकरों के लिए बने अपने कमरे की ओर बढ़ा तो माली की नई नवेली बहू अपने नवजात शिशु को तेल लगा रही थी। उसका मन हुआ कि पल भर रुककर उससे बात करे। वकील साहब के घर में आए नये मेहमान का जिक्र करे लेकिन यह इतनी नई बात नहीं थी। ऐसे लोग तो आते ही रहते थे। नया सिर्फ इतना ही था कि अबकी वकील साहब का मेहमान आगे के कमरे में नहीं टिका था। बड़े घर की बातें बड़ी होती हैं, जल्दी किसी नतीजे पर पहुंचना नौकरों के लिए ठीक नहीं। वह अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

जब पूरे घर में सन्नाटा छा गया तब रत्ती उठी। सुबह की चाय उसने ले ली थी दोपहर के खाने के लिए मना कर दिया था। रघु की भेजी हुई अटैची खोलकर उसने एक धुली धोती निकाली, पेटीकोट तौलिया, मंजन ब्रश लेकर कमरे से लगे बाथरूम में घुस गई। नहा-धोकर उसने कपड़े पहने, मां की धोती धोकर आंगन वाले तार पर

फैला दी, फिर कमरे मे आकर ध्यानमग्न हो गई। दो घटे लगाए ध्यान-पूजन मे उसने सभी देवी देवताओ को याद किया जो सकट मे उसकी मदद के लिए आ सकते थे उसके मन मे किसी अनात भय का खामोश एहसास कही घर करन लगा था।

शाम का नौकर आया। घर का काम विधिवत चलने लगा। अपने मुशी मवक्किलो से घिरे वकील साहब आए, देर तक उनके आफिस से बातचीत की आवाज़ आती रही। रात का खाना रत्ती ने अपने कमरे मे ही मगा लिया। वकील साहब ने आकर उसका हाल चाल पूछा रात का अधेरा दिन-भर की हलचल अपने दामन मे समेटे बढने लगा। रत्ती पूरी तरह सुरक्षित थी। वकील साहब के घर मे उसके होने की खबर किसीको भी नही हो सकती थी, वकील साहब की ओर से पूरी सुरक्षा का आश्वासन उसे मिल चुका था। कमरा भी अदर से उसने बद कर लिया था। किसी भी तरह के भय की कोई गजाइश कही नही थी फिर भी रत्ती की खुली आखें न जाने किन किन खतरो को अजाम देती रही, उसका मन जाने कैसे-कैसे एहसासो पर पीपल के पत्तो की तरह कापता रहा। सारी रात आखो मे बस यूही कट गइ।

दोपहर ढलने लगी थी। अपलक आखो से खुली हुइ किताब देखते-देखत रत्ती ऊघने लगी थी। सहन के पिछले दरवाजे की कुडी खडकी। शायद माली, हो सहन के पौधो म पानी देन आया हो वकील साहब ने उसे समझा दिया था वह उनकी खास मेहमान की तरह रह सकती है नौकर-चाकर को हुक्म दे सकती है। दस्तक दोहराई गई तो रत्ती ने जाकर दरवाज़ा खाल दिया। बदहवास रघु को देखकर वह एकदम पीछे हट गई। रघु ने जल्दी स अन्दर आकर दरवाज़ा ब द कर लिया। एक पल रत्ती के धुले चेहरे को देखता रहा फिर उस अपनी बाहो म समट लिया, 'पता नही क्यो दिल कच्चा पड रहा है रत्ती तुम्हारे जौनपुर वाले भाई तुमस मिलना चाहते हैं तुम्हारे यहा हान की बात उन्हे मालूम हो गई है। मैं समझता हू अब छिपन स फायदा नही, जो होगा देख लेंग। रत्ती उसकी बाहो मे इस तरह सिमट आई थी जसे दुनिया की कोई नजर अब उसे देख नही सकती।

वक्त आखिर कितनी देर रुकता। दोनों बैठक में आए। रत्ती को एक कुर्सी पर बिठाकर रघु ने सामने का दरवाजा खोल दिया। इन्दर भइया को देखकर रत्ती खडी हो गई।

'यह तुमने क्या किया रत्ती ?' इन्दर भइया उसके पास आकर खडे हो गए।

रत्ती की पुतलियां नीचे झुकी थी। आस पास की कुर्सियां, सोफा, दीवान, सब उसकी आंखों मे तैरने लगे।

'समय रहते बात सम्भाली जा सकती थी,' इन्दर भइया कह रहे थे, 'अब इतना सब कुछ होने के बाद तुम्हारा यह कदम हम क्या मुंह दिखाएंगे ?'

रत्ती अपनी जगह लडखडाई। रघु ने आगे बढकर उसे सम्भाल न लिया होता तो वह वहीं गिरकर ढेर हो गई होती।

'इन्दर भाई, दो मिनट आप बैठ जाइए,' अनुरोध रघु का था।

इन्दर भइया पीछे हटकर पास वाली कुर्सी पर बैठ गए। रत्ती को आहिस्ता से बिठाकर रघु एक गिलास पानी लाया। दो घूंट पानी पीकर रत्ती ने अपना सिर कुर्सी की पीठ से टिका लिया। आंखों की झिल-मिलाहट गालों पर ढुलकने लगी थी।

'रघु भाई, अगर ऐसी बात थी तो आप मुझे लिख सकते थे। मुझसे मिलकर बात करते मैं यह तो नहीं कहता कि चाचाजी मेरी बात मान लेते, लेकिन मैं कोई रास्ता निकालता हमें तो इसकी शादी पर ही ताज्जुब हुआ था न बात, न चीत एकदम से चिट्ठी मिली शादी हो रही है और शादी की क्या हुई तहसीलदारी के दौरे पर कितनी ही बार आपके गांव मे टिका हूं। आपके चाचा के कहने पर कितने ही मामले रफादफा किए कभी उन्होंने भी जिक्र नहीं किया।'

'उन्होंने साथ दिया होता तो हालत यहां तक न पहुंची होती इन्दर भाई, मुझे भी लग रहा है अगर मैं उनकी बजाय आपके पास आया होता तो बेहतर था वहरहाल, रत्ती आपकी बहन है आपकी बहुत इज्जत करती है। वकील साहब ने मुझे सहायता का वचन दिया है। आपके स्नेह ने मुझे आपको यहां तक लाने के लिए विवश कर दिया। मैं मानता

हू बात गम्भीर है लेकिन किसीकी ज़िन्दगी का सवाल इससे भी गम्भीर है अगर आप कह तो मैं दूसरे कमरे मे चला जाता हू, आप इससे बात कर लीजिए ।'

रत्ती अपनी कुर्सी से उछलकर रघु के पैरा के पास आकर कालीन पर बैठ गई, नही मुझे छोडकर मत जाओ रघु मैं तुम्हारे सामने इन्दर भइया जो भी पूछेंगे सच सच बता दूगी। तुम जाओ मत।' फिर इन्दर भइया की ओर मुखातिब होकर, 'भइया, आपने हमेशा मुझे अपनी बेटी माना है। आपने कई बार मुझसे कुछ मागने को कहा था—भइया आज मैं आपसे माग रही हू। मा बाबूजी को किसी तरह समझा लीजिए, आपकी बात वे मानेंगे। मा आपकी बात जरूर मानेंगी फिर आप दोना बाबूजी को समझा लेंगे मैं कसम खाती हू, कभी आप लोगा की नजर के सामने नही पडूगी मुझे मेरे हाल पर छोड दीजिए भइया । रत्ती उन्मादिनी की तरह बोलती जा रही थी। अब उसकी आखो से आसू की जगह चिनगारिया छिटक रही थी, उसकी निगाहें इन्दर भइया के चेहरे पर पथरा गई थी।

काफी देर बाद इन्दर भइया बोले तो उनका गला भर्रा आया था, 'रत्ती मेरी बच्ची यह बात आज से पाच महीन पहले सम्भव थी जब जब तुम्हारी शादी नही हुई। अब अब क्या हो सकता है बेटे होश म आओ तुम एक समझदार लडकी हो ।'

रत्ती की पथराई आखें इन्दर भइया के चेहरे से हट गइ। वह रघु के घुटने पर उगली से खाली रेखाए खीचने लगी, 'अगर मैं आपकी अपनी बेटी होती, तब भी आप यही कहत भइया ?' वह सचमुच समझदार बन गई थी।

'तुम जानती हो, तब यह नौबत न आती।'

'क्या करत आप ?'

'तुम्हारी शादी रघु से कर देता और अगर यह बात मुझे मजूर न होती ता तुम्हारा नामोनिशान मिटा देता एक बात तय है कि तुम्हारी शादी इस तरह न करता जैसे चाचाजी ने कर दी है।'

'आप हमारी मदद कर सकते हैं भइया !' रत्ती की समझदारी मे

है रत्ती मेरी बेटी न सही लेकिन खानदान की इज्जत क्या मेरी नही है ? आखिर इस बच्ची का भी तो खयाल रखना जरूरी है—इतना यह सब नाटक के बगैर भी मैं रत्ती को समझा लेता वक्त बदल रहा है बच्चो की खुशी ही मा-बाप की खुशी होनी चाहिए '

इस मोड तक लाकर रत्ती को अकेले छोड देन की यन्त्रणा भोगत हुए रघु इन्दर भइया का प्रलाप सुन रहा था अचानक कई कदमा की आहट मुखर हो उठी। दरवाजा वही खटाक से बन्द हुआ। छोटी बहना को खीचती हुई रमा एक ओर हटने लगी, मामी का सहारा ले मा झटके से खडी हो गइ। पथराई हुई चेतना वापस आए या रत्ती कुछ समझे इससे पहले आगे पीछे कई बूट बाहर के दरवाजे पर दिखाई पडे।

रत्ती के मुह से एक चीख निकली, बिजली के तार पर जैस हाथ पड गया हो वह खडी हुई, शायद भागन लगी कि दो भीमकाय आकृतियो न उसे घेर लिया वह घूमी दो जलती हुई शलाखो का ताप उसन महसूस किया, घेरकर खडे दो हाथो की लोहे जसी टटोलती उगलिया आकर उसकी नरम गोल छातिया पर भिच गई एक डूबती हुई चीख उसके मुह स निकली उसकी आखा के आगे अधेरा छा गया।

दसरी ओर का दरवाजा खोलकर रघु और इन्दर बैठक मे आए तो देर हो चुकी थी। रघु बौखला गया। इन्दर भाई स्तब्ध इधर उधर देखने लगे, आखिर ये लाग कौन हैं ? दाना बाहर निकलकर पोर्टिको तक आए

पी० डब्ल्यू० डी० की बन्द जीप अभी खडी थी। न जाने किधर से लपककर बाबूजी सामने आए। रघु और इन्दर को उडती नजर देखा फिर एक मोटी, भद्दी सी गाली देकर थूक दिया, 'पढा लिखाकर अगर तहसीलदार न बनाया होता तो आज भीख मागता फिरता इन्दर और रघु अब उसके रास्ते मे आने की कोशिश मत करना।'

उछलकर बाबूजी ड्राइवर की बगल वाली सीट पर बठ गए। रघु नही जान पाया लेकिन झुकी हुई टोपी और मोटे लबादे के बावजूद इन्दर ने केसो को पहचान लिया था।

10

रत्ती को लेकर बाबूजी गाव पहुचे तो केसो भइया साथ थे। सारा गाव सोया पडा था। भिखारी महतो का कुत्ता घुर घुर करता हुआ आया फिर बाबूजी के पैर सूघने लगा।

दरवाज़े की कुडी खटकी तो इआ की कच्ची नीद टूट गई। लपककर बाहर आई, 'कौन है रे ' कहते हुए बेखटके दरवाजा खोला। इतनी उम्र गुजारने के बाद इस गाव मे इआ के लिए अब कोई डर नही था। उनके घर मे ऐसी कोई चीज भी नही थी जिसके लिए चोर आते। अधेरे मे बेटे की आकृति पहचानकर इआ का दिल एकबारगी धडक उठा 'बबुआ !'

बाबूजी बगैर कुछ बोले अन्दर आ गए। उनके पीछे प्रेत लाक मे चलती रत्ती की बाह थामे केसो भइया भी अन्दर आए। घर के अन्दर घुस आए भिखारी महतो के कुत्ते को बाहर निकालकर इआ ने आगन का दरवाजा बद कर लिया। बाबा वाले कमरे के दरवाजे पर बाबूजी और रत्ती की बाह थामे केसा भइया खडे थे। कमरे के अ दर स आती टिमटिमाती रोशनी मे रत्ती के तन पर पडी मैली मदानी धोती इआ ने देखी। उसके खुले बालो की बन गई लटें भी उनके सामने आईं अभी चार दिन पहले तो माग मे सुहाग की लाली भरी गई थी, हाथा मे सुहाग की चूडिया खनकी थी अनायास यह क्या हो गया ?

इआ रत्ती की ओर बढन को हुई तो बाबूजी ने उन्ह रोक दिया, 'गगाजल है घर म ?' उ होने पूछा।

कार्तिक मे पूजने वाले देवी देवताओ की सख्या इतनी बढ जाती है कि घर आते आते इआ का कमडल एकदम खाली हो जाता है। दो चार बूदें जो पेंद मे बची रहती हैं वह इआ तुलसी-चौरे पर लाकर उलट देती हैं। इतनी रात गए गगाजल कहा से आए ? केसो भइया लोटा-डोर लेकर कोइरिया के इनार से पानी ले आए कार्तिक की ढलती रात एक वस्त्रा रत्ती पर पूरे लोटे पानी का छिडकाव हुआ फिर उसे

बाबा वाले कमरे म बन्द कर दिया गया।

बाहर आग न धौरे पर बठे परिवार के तीन वरिष्ठ सदस्यो की पचायत ने क्या तय किया रत्ती नही जानती। उसके सामने एक खुरदरी चारपाई पडी थी। काम करत करत थक्कर इम्रा कभी-कभी इसपर कमर सीधी करने लेट जाती थी। इस कमरे की सफाई रख-रखाव म बहुत समय लगता। यह कमरा पितरा का है। चुने हुए देवी देवता आलो पर सजे हैं। विरासत म दी जाने वाली चीजें, बतन भाडे इसी कमर म रहते हैं। यहा एक दीया रात भर जलता है इसी जलत हुए दीय का मोह इम्रा को अकेल यहा बाधे रहता है। जब तक इम्रा की जान मे जान है यह दीया बुझ नही सकता बाद मे बटा-बहू क्या करें, इम्रा का इससे मतलब नही। इस कमरे म दीया जलने का मतलब है पितरा का चिराग बत्ती करन वाला जहा भी रहेगा सही सलामत रहेगा उसकी बाधाए दवता पितर पार करते जाएगे। उस दिन भी वह दीया टिमटिमा रहा था। पितरो का चिराग बत्ती करनेवाला सभी विघ्न बाधाओ को पार करके घर पहुच गया था।

लडखडाती हुइ रत्ती आगेबढी। चारपाई के पायतान की पटटी पकडकर बैठी या उस चक्कर आ गया

मा की ममता के सूखते सागर का रहस्य जब तक जाहिर होता उसकी दुनिया बदल चुकी थी। इन्दर भइया के साथ दूसरे कमरे म जात समय रघु ने उसे घूमकर देखा था उन कातर विवश आखा म रत्ती के लिए कितनी तडप थी भाभी की भाव भीनी आखें भी मा की नजर बचाकर उस दिन उससे कुछ कहती जान पडी थी सरे बाजार उसके पर कतर दिए गए थे। अब वह उडानें नहीं भर सकती। अपन ऊपर टूट पडन वाने यमदूतो स उस छुटकारा कब मिला, वह नही जानती आख खुली तो वह एक नगे टूटे तख्त पर पडी थी, अगल बगल नगी दीवारें, ऊपर टिन की छत। कुछ कहते सुनत लोगा की भिन्न भिन्न आवाज़ मे एक भिनाहट बाबूजी की भी थी। उसकी आखा का बोझ बढने लगा था बद पलको के नीचे असख्य चीटिया रेंगने लगी थी।

दरवाजा खुलने या कैसो भइया के आकर चारपाई पर बैठन की

कोई प्रतिक्रिया उसपर नही हुई। वक्त अपनी पहचान पहले ही खो चुका था। केसा भइया का छ फिटा कद, बयालिस इची सीना वाला पहलवानी शरीर वहा कितनी दर बैठा रहा रत्ती नही जानती उनकी लाल आखो का जहर कितनी दर उसके सिकुडते सिमटते ठडे जिस्म पर बरसा, उसे नही मालूम। खुले बालो को झटके से पीछे खीचकर चेहरे को ऊपर किया जाना भी उसे याद नही। कुनमुनाई वह तब जब केसो भइया का करारा थप्पड अडतालिस घटा से लगातार आसुओ से भीगे उसके गाल पर पडा और हाथ पर, पट पीठ जो भी सामने आया सब पर पडता गया। केसो भइया के मुह स गालियो की बरसात झर रही थी, 'फाहशा रडी खानदान के गगाजल म तूने मोरी का पानी उडेल दिया, आज आज तुझे जिन्दा नही छोडूगा एक एक बोटी काटकर इतनी जगह गाडूगा कि फरिश्ते भी ढूढते फिरेंगे हरामजादी तुझे जवान मजबूत जिस्म की हवस थी तो मुझस कहा होता उस हरामी के साथ तून मुह काला किया ठहर आज मैं तेरी भूख प्यास हमेशा के लिए मिटाता हू '

कितने पल, घडी, बरस, युग बीत गए रत्ती अधमरी होकर जमीन पर इधर से उधर लुढकती रही। उसका जिस्म अधनगा हो चुका था केसो भइया की पहलवानी मुद्रा उसपर झुकी ही थी कि दरवाजा फटाक स खुला। मच्छर के भिन भिन जैसी डूबती आवाज रत्ती के काना मे पडी, 'अरे मरकी लौना मार डालेगा क्या तरी बहन लगती है ?'

सिर के नीचे इम्रा की काठ जैसी छाती रत्ती न महसूस की। उसकी नगी छातिया पर उन्होने अपना आचल डाल दिया था।

पाच दिन रत्ती बुखार म भुनती रही। किस्तो मे पचायतें जमा होती रही। 'बाप रे बाप ब्याहता बेटी का घर से भागना आज तक नही सुना दोनो खानदाना का डुबो दिया इस मुहझौंसी ने लडके वाले भला इस ले जाएगे आज के जमान म भला गौन की बात सोची जाती है अरे ब्याह किया पाप कटा एक धोती म डोली पर बिठाओ और खत्म करो चले थे गौना करन यह जमाना गौना करन का है वह एक जमाना था जब ग्यारह-ग्यारह साल बाद गौना करवाकर

चहुए आती थी और बेटियां विदा होती थीं इसीकी मा सात साल बाद गौने आई थी। इस चाची, चमाइन बुलवाकर इसका पेट देखवा लो जाने क्या कर-धर के आई हो राम राम, ऐसी औलाद होते ही मर जाए। न मरे तो दबोचकर मार देना चाहिए ।' बुखार की बेहोशी मे भी दो आवाजें रत्ती ने पहचान ली थी—रेखा चाची का तराशता हुआ व्यग, 'फूलो की सेज स उठाकर लाई गई है बेचारी अब कितने काटें भादोगी ' और इस की बफ जैसी ठडी आवाज, हमने पचो से कुछ छिपाया नही, दुख मुसीबत मे उन्हीका सहारा लिया है। '

रेखा चाचा की वडा भौजाई को जब उन्हीका पेट रह गया तब तीन साल की अपनी इकलौती बेटी फूलदी को छोडकर वह तीरथ करन चली गई। चाचा न ही समझा-बुझाकर उन्हें राजी किया कि पाप का प्रायश्चित तो होना ही चाहिए उधर ही सब कुछ रफा दफा हो जाएगा। तीन-चार महीने की बात थी गाव मे किसीको कानोकान खबर भी नही होगी। रेखा चाचा अपनी भौजाई को हरद्वार म प्रायश्चित के लिए छोडकर पन्द्रह दिन मे ही वापस आ गए। रेखा चाची फूलदी को कलेजे से लगाकर हाय हाय करने लगी। घर म रोना-पीटना मच गया

गाव मे खबर फैली कि पाव फिसल जान स फूलदी की मा गगा मैया की गोद म समा गई। बडी चाची को इससे अच्छी गति और क्या मिलती। तरहवें दिन उनका किरिया करम भी कर दिया गया, पाप कटा, मुक्ति मिली। भडा फोड हुआ तीन साल बाद। कथटोली के कुछ लोग घूमने फिरने हरद्वार गए। बडी चाची ने लक्ष्मीलाल को रोकर फूलदी का हाल पूछा था। माग म चौडा सिंदूर, माथे पर लाल बिंदी। बडी चाची न किसी व्यापारी स शादी कर ली थी। बडी-सी पचायत जुडी गाव के मुखिया रेखा चाचा के खिलाफ। रेखा चाचा पर पचा को धोखा देन का इलजाम लगाया गया। मुखियागीरी से वह हटा दिए गए। पन्द्रह साल तक उनके घर से गाव का हुक्का-पानी बन्द रहा। फूलदी के ब्याह का मौका आया तो रेखा चाचा ने पगडी उतारकर पचो के पाव पर रख दी। बेटी का मामला था। हुक्का-पानी खुल गया।

धूम-धाम से फूलदी का ब्याह हुआ। रेखा चाचा की प्रतिष्ठा उन्हें वापस मिल गई। इया ने घर-घर घूमकर रेखा चाचा के गुनाहों की माफी के लिए पचों से सिफारिश की। एक उम्र ऐसी आती है जब किसीके भी पर ऊंच-नीच पड सकते हैं।

इया ने अपना सारा खोट पचों के आगे रख दिया। बेटी का मामला था, एक का पाव ऊपर-नीचे हुआ कि पूरे गाव की इज्जत पर बात आती है। इस तरह के मामले पच ही सभाल सकते हैं। बाबूजी ने रत्ती को गाव मे इसीलिए पटका कि उन्हें पचों का सहारा मिले। यह मामला अब अकेले उनके बूते की बात नही थी। बेटी गाव की होती है पच की होती है इज्जत गाव की है अब उसके लिए गाव लडेगा, पच लडेंगे। रेखा चाचा पन्द्रह साल पचों से अलग रहे। बाबूजी नही रह सकते उनकी छोटी छोटी बेटिया हैं

छठे दिन ढकना आजी ने आकर उसके सिर पर हाथ रखा। उठा कर उसे बाहर ले आई, 'गलती किससे नही होती कौन दूध का धोया है बाल बच्चा नादानी करे तो क्या उसे जहर देकर मार देते हैं मा बाप क्या नादानी नही करते ? ' फिर इया पर हमेशा की तरह चलने वाला उनका गालियों का रिकार्ड चालू हो गया 'तेरह बच्चों मे से ग्यारह तो चबा गई। एक बेटे बहू से तेरा निस्तार नही हुआ बेटी थी, भसा दिया उसे भिखमगो के यहा ननद भौजाई मे एक दिन नही पटी अरे निखुर्री देख तो, क्या हाल कर दिया है इस बेचारी का कलूटी तूने तो इसके जनम पर ही मातम मनाया था सौरी से निकलते ही बहू से बतन मजवाने लगी यह तो तभी सूखकर मर गई होती इसी दिन के लिए इसके प्राण अटके रहे

दिन चढ आया था। पाच दिन कमरे के अधेरे मे बन्द रत्ती की आखें दिन की रोशनी मे चौंधियाईं। ढकना आजी के भारी भरकम जिस्म का सहारा ले वह बाहर आई। तुलसी चौरे के पास ढकना आजी ने उसे बिठा दिया और खुद भी वहीं बैठकर आचल के खूंटे से बधी सुरती मलने लगी। रत्ती की पथराई आखों की कोर कहीं से पिघलने लगी थी। उसकी निगाह तुलसी की जड मे केंचुए की फोडी हुई मिटटी

फँस जाएगी 'तभी कातर आशा से अपनी ओर देखती रत्ती पर उनकी नजर पडी, 'अरे, यह तो रत्ती की मा है। जाओ बहना, मेरी बहू है यह तो हमारे ही गाव की पारी है, शाम को आ जाना '

मा शायद पहली बार ढक्ना आजी की कृतज्ञ होकर आइ। चादर कइ जगह से फट गई थी लेकिन पर्दा बना रहा घर आते ही चादर उतारकर मा ने अरगनी पर टाग दी, तहा कर नही रखा। उस शाम कोइरिया के इनार पर विदेशी कपडो की होली जली। दहन सस्कार का आरम्भ ढक्ना आजी न अपने विदेशी सलूके से किया। रत्ती को वह सलूका बडा पस द था। ब्याह शादी के मौका पर ढक्ना आजी उसे पहनती थी। रत्ती सोचती किसी तरह अगर वह सलूका हाथ लग जाए तो अपनी गुडिया के दसिया कपडे वह बना लेगी। लेकिन उस दिन उसके जेहन म मा की गुलाबी चादर थी विदशी लेसवाली।

सबके घर स विदेशी कपडा का गटठर जमा हुआ था कोइरिया के इनार पर। अगुआ थी ढकना आजी। पट से माचिस जलाकर उन्होंने सलूके से छुला दिया। भक से आग जल उठी, फिर ता सभी लोग एक एक कपडे की आहुति देने लगे। रत्ती भीड मे किसी तरह जगह बनाती लोगो के पावो के बीच से निकलती आगे पहुच गई थी। उसके तकशील बाल मस्तिष्क मे एक बात नही बैठ पा रही थी कि इतने सुन्दर रेशमी मुलायम कपडे अगर ये लोग इस्तमाल करना नही चाहत तो बच्चो को क्यो नही बाट देत ? मा की चादर लेकर इआ जब आग बढी तो वह तडप उठी थी। अकेले इआ होती तो वह निपट लेती लेकिन उतने सार लाग उस रात रत्ती स खाया नही गया। अपनी खरहरी चारपाइ पर देर तक रोती रोती यूही पडी रही। *ढक्ना आजी को चुन-चुनकर गालिया दी, उनके मर जान* की मनौतिया मनाई। दूसरी सुबह जब इआ उसे उठान आइ तो उसन इआ का हाथ झटक दिया। करवट बदलकर मुह फेर लिया। एक ही करवट रात-भर पडे रहन स गाल पर मूज की रस्सी उभर आई थी। इआ की ममता जागने को हुई तो रत्ती एकदम स चीख पडी, ज्यादा छेड़छाड न कर।' इआ न अपनी धोती दबाई और एक हाथ मे कमडल लटकाए नहान चली गईं। काफी दिन चढे रत्ती उठी तो उसके सिर-

हाने एक मैली कुचैली पोटली पडी मिली। उसने हाथ मारकर पोटली नीचे गिरा दी फिर पैर के अगूठे से कुरेदकर देखा नरम मुलायम चमकीले रग उसकी आखो मे उतरने लगे। उसका दिल एकदम से धडकने लगा। उसने झपटकर पोटली उठाई, भूसे वाले कमरे म छिपा कर रखी हुई अपनी गुडिया की गठरी मे सबसे नीचे उस दवा आई।

कई दिना बाद ढकना आजी ने उससे पूछा था, 'अपनी गुडिया का ब्याह कब करेगी रत्ती ?' रत्ती को साप सूघ गया। कई दिना मे चढा रहस्य का बोझ धीरे धीरे उतरने लगा। पहले यह शका यह भी थी कि शायद इग्रा को उसपर दया आ गई हो लेकिन उस दिन बात पक्की हो गई जरा देर के लिए डर भी लगा। जरूर ढकना आजी न मन्त्र पढकर ये कपडे रखे होंगे लेकिन बेजान गुडिया पर मन्त्र फूककर ढकना आजी क्या करेंगी। रत्ती मुस्करा पडी थी, जब करूगी तब आपको जरूर न्योता दूगी।'

'मेरे पास दने को तो कुछ नही,' ढकना आजी ने भी मुस्कराने की कोशिश की। उनकी लाल लाल आखो मे लहू उतर आया। बडी हिम्मत बाधने के बाद भी रत्ती के रोगटे खडे हो गए थे। ग दे कपडो की उस पोटली का भेद खुला दो महीने बाद। मा इलाहाबाद आ गई थी। अपनी सारी बेटियो के साथ। शायद पहली बार इग्रा को अकेले गाव मे छोड दिया गया था। रत्ती ने अपनी गुडिया का ब्याह किया। पास पडोस की सहेलियो को न्योता दे आई। छोटी बहनो के सुपुर्द अलग अलग काम कर दिए। सब लोग इकट्ठे हुए। गुडडा गुडिया चमकीले रेशमी मुलायम कपडो मे सजधज कर बाहर निकले। मा देखते ही आग बबूला हो गई। झपटकर रत्ती की चोटी पकड ली, 'बता य कपडे तुझे कहा मिले ?'

रत्ती चुप रही। इस तरह कोई बात कबुलवाना वैसे भी मुश्किल होता है और फिर रत्ती से ? चोटी पीछे खिचती गई। आखो मे पानी उतरने लगा। होठ फिर भी सिले रहे। दीदी आकर पास खडी हो गई, न जाने बहन को बचाने या मा को प्रोत्साहन देने। मा का पारा चढता गया। रत्ती के होठ चिपकते गए मा का करारा हाथ पडने लगा

तड़ातड़ गाल, सिर, पीठ, न जाने कहा कहा। याद नही, याद सिर्फ इतना है कि मार खाते खाते वह गिर पड़ी थी और मा उसके सीने पर पर रखकर दबा रही थी, 'बोल बोलती है कि नहीं ये कपड़े तुझे कहा मिले उसी डायन ने दिए थे न बोल दिए थे न उसीने बोल नहीं तो जान ले लूगी।'

'छोड दो मा मर जाएगी मैं पूछकर बता दूगा' रत्ती की पथराई हुई आखो पर दीदी को दया आ गई थी। मा को परे हटाकर उन्होंने रत्ती को छाप लिया था। गुडिया समेत उसे लेकर कमरे मे आइ उसके बदन की मिट्टी झाडी। मुह धुलाया, पुचकारती प्यार करती रही, 'बोल बहन, बता दे, ढकना आजी ने ही दिए थे कपडे मा को शक है' उन्होंने मा की कोख जलाई है इसीलिए हर बार लडकी होती है बता उन्होंने दिए थे न।'

रत्ती ने ढकना आजी को पोटली वहा रखते हुए देखा होता तो जरूर बता देती। उसने देखा नही था। ढकना आजी के साथ एक मूक समझौता था कि कपडे उन्होंने दिए थे और यह बात एकदम उसकी अपनी थी, इसके बारे मे वह किसीको क्यो बताए! रत्ती ने उतना ही बताया जितने की वह साक्षी थी उसके गुड्डे गुडिया नगे कर दिए गए, उनके सुदर कपडे जिन्हे रच रचकर रत्ती ने तैयार किए थे आग मे जला दिए गए ताकि ढकना आजी का मन जल जाए

गुडियो से खेलने वाली रत्ती उस दिन मर गई थी। पास पडोस की सहेलियो से खुलकर खेलते उसे फिर किसीने नही देखा। छोटी बहना को खिलाते खिलाते उसका किशोर कब यौवन की दहलीज पर आया उसे खुद नही मालूम। रघु से मिलने के बाद एक दिन चुपके से निकालकर उसने अपने गुड्डा गुडिया जमादारनी के बच्चो को दे दिए थे।

वही ढकना आजी उसकी बगल मे बैठकर सुरती मल रही थी। एक बार उसपर दया करके थोडे से कपडे दे दिए तो उसका बचपन अभिशप्त हो गया अब जब, जवानी की दहलीज मे प्रवेश कर रही है तब फिर वही ढकना आजी अपनी अछूती सहानुभूति लेकर उसके पास

बैठी है

लेकिन अब क्या होगा ? जितना कुछ हो चुका उससे ज्यादा कुछ और भी हो सकता है क्या ?

दक्ना भाजी जब तक उसके पास बैठी रही, इम्रा की परछाई भी वही नजर नही आई । उनके उठते जाते ही इम्रा सामन आ गइ, 'उठ रत्ती बुखार का टूटा हुआ शरीर है मालिश करवा ले आराम मिलेगा दस अजोरिया तल भी गरम कर चुकी है उठ ।

दो कोटरो से भाकती रत्ती की दाना आखें इम्रा के चेहरे पर टिक गई थी । इम्रा कुछ कह जरूर रही थी, लकिन रत्ती के काना म पचायती स्वर गूज रहा था—'इम्रा चाची चमाइन बुलवाकर इसका पेट दिखवा ला । न जान क्या कर घर के आई हो राम-राम एमी औलाद ।

रत्ती चुपचाप उठकर लडखडाती हुई उस कमरे की ओर बढ गई जहा परम्परा स इम्रा ने तरह और मा न सात बच्चे पैदा किए थे कोन मे पडी बारसी की आग पर से तेल की गरम कटोरी अजोरिया आचल मे खूटे से उतार रही थी । रत्ती सामन बिछे वारे पर जाकर चपचाप लेट गई । कुछ और देखने मे असमथ उसकी पथराई आखो पर पलको का परदा धीरे-धीरे गिरन लगा था ।

11

लोग कहते है कि मन सुखी रहे ता दिन पख लगाकर उडने लगन हैं—रत्ती के दिन पख लगाकर उडे जा रहे हैं, कितना सुख उसका मन पा रहा है ? फासी की सजा पाने वाले कैदी की आखिरी मुराद के तौर पर मिले इम्रा के साथ रहने के ये दो महीन बीत जाएग उसकी फासी का दिन तय हो जाएगा । हफ्ते भर पहले से गाव की भाजी, चाची, भौजी बुआ, सुबह शाम आन लगेंगी । सबके गले मिल मिलकर रत्ती को रोना पडेगा । उसके फरयादी आसूआ के जवाब मे गिरे हुए आसू उस जिबह हो जाने का आदेश देंगे फिर एक सादी सफेद आहार की डोली म बिठा-

कर उसे विदा कर दिया जाएगा। काइरिया के इनार पर डोली रखी जाएगी। उसे विदा करने लडकियों का हुजूम नहीं कुछ बडी बूढ़ियां आएगी वहां से पानी पिलाया जाएगा। पानी भरे लोटे मे हाथ डाले विलाप करती इस्रा आगन मे बैठी रहेंगी ताकि बेटी की आत्मा जुडाई रहे। कायदे मे इस्रा की जगह मा को बैठना चाहिए लेकिन रत्ती जानती है उसे विदा करने मा नही आएगी। मा ने उसे अपनी ओर से विदा कर दिया है।

बाबूजी के साथ जब वह इस्रा के पास रहने के लिए आने लगी थी तब उसने मा के पैर छुए थे। मा ने अपना अंतिम आशीर्वाद उसे दे दिया था, 'भगवान तुम्हारे मन को शांति दे दो खानदानो की इज्जत तुम्हारे आंचल से बंधी है बेटी' इसके बाद गला भर आने का प्रभाव छोड मा चुप हो गई थी। आगे की बात रत्ती समझ गई थी। उसकी नजर मा के पैरो से उठकर उनके चेहरे तक नही गई। वह चुपचाप गली मे खडे रिक्शे पर बाबूजी की बगल मे आकर बैठ गई थी। लपककर आगे बढती रमा की ओर भी उसने नही देखा था। घूंघट मे छिपी भाभी की झरती आंखो का एहसास उसे हुआ था, देखा उसने वह भी नही था। सहानुभूति उसके साथ सबकी है लेकिन राह कहीं कोई नही। दूर दूर तक एक नाम भी जेहन मे नही उभरता जिसे रत्ती दोहरा सके।

भूतो के उसी टरे पर उसे उतरना होगा जहा दो बार वह हो आई है—एक बार अजोरिया और उसकी भौजाई से पेट मलवाकर जब यह साबित हो गया कि वह कुछ कर धर के नही आई है तो तीन महीने के अंदर उसका गौना कर दिया गया था। दूसरी बार जब ननद की नानी पडी थी। कमर का नाम पान वाले उसी दरगाह मे उसे लुटते रहना होगा जहा खुदा को हाजिर नाजिर जानकर, गीता के पहले चार श्लोक पढवाकर एक दिन उसके पति ने उसे कबूल किया था उसी दरगाह के कोने मे पडी उसकी कब्र खोदी नही गई, बस पडी हुई है। खुदा के दरबार मे जब उसकी पेशी होगी तब रत्ती सब कबूल कर लेगी गढकर बनवाए गए पाए मजबूत शीशम की पाटी वाला वह पलग, उसपर बुना हुआ नेवाड, पलग के नीचे का उगालदान, उसपर बिछी दरी, चादर

सारा माल चोरी का है पेड़ो पर चढ़ने में माहिर रत्ती को सीढ़ी लगाकर इन्दर भइया के घर की चाहारदीवारी फांदने में कोई दिक्कत नही हुई थी। मकान बनवाने के लिए मिर्जापुर से मंगवाए गए पत्थरो के सहारे वह आसानी से नीचे उतर गई थी। मा के दिए हुए गुच्छे की तीसरी चाबी ही इन्दर भइया के बन्द कमरे में लग गई थी उसमें बड़े बड़े बर्तन भांडे थे। रत्ती ने एक बार वापस आकर पूछा था। मा का आदेश लेकर वह वापस चली गई थी बगल के कमरे में कुम्भकर्णी नींद सोई बूढ़ी काकी को पता भी नही चला, एक एक कर उसने सात पीतल की परातें, चार हण्डे, फूल की तेरह थालिया पार कर दी थी। उस कमरे का ताला खुला छोड़ वह दूसरे कमरे की ओर बढ गई थी गुच्छे की एक चाबी वहा भी लग गई थी। वहा से भारी-भरकम पाए पाटिया रत्ती तीन बार में उठाकर रख पाई थी। गली में इधर उधर देखने के लिए मा खड़ी थी। रत्ती की मदद के लिए दरवाजे के बाहर दीदी खड़ी थी उसके हाथ से एक-एक सामान लेकर घर तक पहुचाने की जिम्मेदारी उनकी थी इया तब भतीजे के ब्याह में मायके गई थी। कमरा में आखें गड़ा गड़ाकर, पैरो से टटोले टटोलकर रत्ती ने देखा था। भुरभुरी मिट्टी या खोदा गया गड्ढा उसे कही नही मिला था। लकड़ी वाला कमरा खुला था, इसलिए मा ने मना कर दिया रत्ती वहा नही गई।

दूसरे दिन बूढ़ी काकी ने शोर मचा दिया। इन्दर भइया के कमरो के ताले खुले पड़े थे। बात मुखिया चाचा तक पहुची। इन्दर भइया को चोरी की खबर तार से दी गई। भुनिया भौजी रोती पीटती घर में घुसी तीसरे दिन। सबसे पहले लकड़ी वाले कमरे में गई भुरभुरी मिट्टी के नीचे दबे सात सौ चादी के नकद रुपया तक चोर नही पहुच पाया था। उसने रोना पीटना बन्द कर दिया। दोपहर का मन सबर कर मा के पाव छूने आई 'आपके आशीर्वाद से बच गए चाची अब ये रुपये ले जाकर बैंक में डलवा दूगी बेटे का मत बताइएगा। मा ने लाख लाख असीस दिया।

और जब भुनिया भौजी चली गई तो रत्ती पर टूट पड़ी, 'अभागी, जब गई ही थी तो वहा भी देख लेती चादी के सात सौ रुपये गले के लिए सोने की जजीर, चार चूड़िया, कानो के झुमके तो बन ही

जाते ।'

धनुजग के मेले मे बतन बेच दिए गए पलग, नवाड सहित रत्ती को दे दिया गया था रत्ती को हसी आती है मा के उतारे हुए भारी जेवरा से सजी रत्ती मण्डप मे पल भर को चमक उठी थी। बाबूजी का बस चलता तो उसमे से एक आध रत्ती को मिल जाता लेकिन वह मा के मायके का धन था जेवर उतार लिए गए। दीदी के कान की बालिया और उनके उतारे कपडे रह गए। दीदी को जरूरत हाती तो ये कपडे भी उतर जात, लेकिन दहज मे मिली बाकी चीजें उसके बचपन की कमाई थी बतन उस भूत डेरे की रसोई मे सजे, जो एक-एक कर बेच दिए गए।

धनुजग के मेले से खरीदा गया बक्सा, कुछ साडिया उसकी ननद को द दी गइ। बक्स उसकी बनी रही, जिसपर वह अपन पति का समर्पित हुई। पति के प्रति अपन हर समपण पर उसन रघु का अस्तित्व खुरच-खुरचकर फेंक दिया। देना दते रहना उसकी नियति बन गई। पाने का उस एहसास ही कितना था ?

महीने भर बाद रस्म पूरी करने के लिए विजय जब उसे लेन आया तब उसन सास जेठानी के पर हुए, ननदो स गले मिली। अपनी चीजा मे स जो जिस पसन्द आया बाटकर खाली हाथ भाई के साथ वापस आ गई। हाथ की चूडिया मली हो गई थी, दूसरे ही दिन चूटी वाली का बुलवाकर मा ने नई चूडिया पहना दी। खाली सूटकेस देखकर साडियो के बारे मे सिफ एक बार पूछा, साडिया कहा गई ?' रत्ती मा का अपलक दखती रही हाथो का सख्त पड गया चमडा, गद नाखून, एक ही महीने मे एडिया की दरारें, उनमे धसा मल मा ने दखा सब पर कहा कुछ नही अपनी ओर से कुछ कहने के लिए रत्ती के पास क्या था ?

ननद की शादी मे जब रत्ती दुबारा ससुराल जाने लगी ता मा ने कुछ पैसे खर्चे। कुछ मामूली साडिया खरीदी गइ। मामा की दी हुई सुनहरे किनारे की अपनी आसमानी भागलपुरी रशमी साडी उ हाने रत्ती का पहना दी। मा की छलक आई आखें दखकर रत्ती बेसहारा उनके गले से लिपट गई थी न जाने कित कित दु खा के बादल सिमट आए थे एक साथ उसकी आखा म।

बहू के घर स आई चीजा पर वसे भी बेटी का हक होता है। टप्पर वाला की यह निगोडी छोटी बहू लाई भी क्या थी साडियो के साथ अब की कान की बालिया भी उतर गइ । उतारी हुई चीज दुबारा उतर जान का कोई गम रत्ती को नही हुआ ननद विदा हो गई। जामुन का मौसम था। प्रकृति हर जगह आदमी की मदद करती है जाडा म सरसा के उबले हुए चन मटर के कच्चे सागो पर परिवार पलते हैं कुटे धान की बारीक भूसी से बनी मोटी रोटी का भी एक मौसम हाता है। गमियो म इधन के लिए बटोरकर पत्ते रख लिए जात हैं कच्चे पके आम भी बडी मदद करत हैं कौन जानता है कहा किस बगीचे से उन्हे तोडा गया ! अगर किसीके पास सिलाई कढाई का अतिरिक्त ज्ञान हो तो गाव मे उसकी बडी पूछ होती है रत्ती ने सब कबूल कर लिया। पति महीने दो महीने मे एक चक्कर लगाता तो रत्ती की दिनचर्या बदल जाती। रत्ती को इस बार आए छ महीने बीत चुके थे।

उस दिन कोई त्योहार था। आगन मे सडता हुआ मोरी का पानी काछ कर रत्ती सारा घर गोबर स लीप चुकी थी। उस कारागार का आखिरी कमरा यानि सास जी का खाली भण्डार घर रह गया था। बरौठे से पानी की बाल्टी उठाकर वह कमरे मे दाखिल ही हुई थी कि पीछे से आकर किसीने उस भीच लिया। पराये जिस्म की हडिडया पोर-पोर मे सुई की तरह चुभने लगी कानो मे फुसफुसी आवाज आई, 'इतना काम करन को किसने कहा ' बीडो की तेज गध रत्ती के नथुना को चीरकर अन्दर घुसी

सास जी किस्मत का रोना रोने कहीं गई थी। देवर पत्ता बीनन गया था, जेठानी कमरे मे सो रही थी। पिछली रात मिया-बीवी मे कुछ हो गया था। बिफरते हुए जेठ जी कमरे से निकल गए थे, 'ससुरी, बास लीलना चाहती है जा, जहा तेरी हवस पूरी हो ।'

रत्ती की आखो से छिटकती चिगारिया एकदम से बुझ गईं गोबर सने हाथो मे चेहरा भिच गया मुह से निकली चीख सुनने वाला वहा कोई नही था

हाफती हुई रत्ती अपनी दरगाह पर वापस आ गई थी। पलग की

पाटी पर सिर पटक पटककर उसने दफन हो जान की बेपनाह् कोशिश की। चीख चीखकर उसका गला रुध गया।

सारे गाव मे खबर फल गई, टप्पर वालो को छोटी बहू को पोखर-वाली चुडल लगी है । सात दिन उसे मिच को धूनी मे रखा गया। श्रोभा सोखा उसपर कयामत ढाते रह । उसका रहमदिल पति कालेज से छुटटी लेकर बुलाया गया। यह उसीकी रहमदिली थी कि बाबूजी को खबर भेजी गई। लौटती गाडी से बाबूजी का पितत्व पहुचा। लढिया पर लादकर रत्ती को स्टेशन तक लाया गया। दामाद की मदद से जनाने डिब्बे की एक पटरी पर उसे रख दिया गया। पास पडास की सवारियो से देखते रहन की सिफारिश की गई और रत्ती एक बार फिर इलाहाबाद आ गई।

बाबूजी के आयसमाजी मित्र डा० लाल की देख रेख मे ढाई महीन बाद रत्ती का शरीर चलन फिरने लायक हो गया, लेकिन पोखरवाली चुडैल उसके सिर स नही उतरी। सोते सोते चीख पडना, बिस्तर से उतर कर जमीन पर लेट जाना मोरी पर घटा बठे रहना, झरबेरी के नीचे के सूखे पत्ते बटोरकर आग लगा दना, शरीफे की नसरी से चिडिया के घासले उजाड देना, बाबूजी की लगाई हुई सब्जियो की जडें काट देना किसी भी दिन, किसी भी समय घटित हाने वाली दिनचया बन गई।

इलाज चलत रहने के बावजूद रत्ती के पास चौबीसो घटे किसी का बना रहना जरूरी हो गया तो गाव से इश्रा बुलाई गई। तीन महीने की कडी मेहनत लगातार इलाज के बाद इश्रा की पतली कमजोर बाहो मे सिमटकर, उनकी सूखी छातियो की पनाह म रत्ती का मन सिमटने लगा।

रत्ती कभी कभी आगन मे आकर बठने लगी। सबसे पहले उसके आकपण का केन्द्र बनी भाभी की पहलौठी बेटी—मजरी। भाभी अक्सर उसे रत्ती की गोद मे डाल जाती। रत्ती उसे सजाती सवारती देर तक पुचकारती फिर भाभी को ढूढने कमरे से बाहर निकलन लगी। मा से उसकी हल्की फुल्की बात होने लगी। इश्रा से सुने अपने बचपन के कारनामो पर उसके हाठ मुस्कराने लगे।

मा बाबूजी ने सन्तोष की सास ली। इम्रा गाव वापस जाने की बात सोचने लगी। कुछ दिन और इलाज चलने की बात न होती तो रत्ती इम्रा के साथ गाव चली जाती। इम्रा अकेले वापस गईं। बाबूजी के साथ रत्ती उन्हे रामबाग स्टेशन पर भाव की गाडी मे बिठा आई। दिन अपनी सामान्य गति पर आ गए।

उन्ही दिनो किसी एक दोपहर भाभी उसके पास आकर बठी थी। मजरी रत्ती की गोद म आराम से सो रही थी। रत्ती के भाग्य पर आसू बहाते हुए भाभी ने बताया, वकील साहब के यहा हुए हादसे के बाद रघु एकदम विक्षिप्त हो गया था। फिर झासी से उसका कोई दोस्त आकर उसे ले गया। वहा बहुत दिनो तक वह बीमार रहा—शायद टायफायड हो गया था। फिर उसकी बदली हो गई। अब वह कानपुर मे है। काम पर वापस आने के कुछ ही दिना बाद राय साहब उसके बीबी बच्चा पहुचा गए थे। अब तो शायद एक बच्चा और हुआ है। समय सारे घाव भर देता है।

उस दिन रघु की चर्चा रत्ती को ऐसी लगी जसे कोई बडी पुरानी कब्र खोदकर एक ककाल उसके सामन रख दिया गया हो खाली मन लिए देर तक अनमनी बठी रत्ती कोशिश करके भी उस ककाल को पहचान नही दे पाई थी।

रत्ती का पति तन मन से पढाई म जुटा हुआ था। बाबूजी के पास उसकी चिटिठया आती रहती। जवाब मे बाबूजी रत्ती की सुधरती तबीयत का हाल भी लिखते। गर्मी की छुटिटया आई तो मा न दामाद को एक बार बुलाने का जिक्र किया। बाबूजी न चिटठी लिखी। उसका जवाब आया, गर्मी की छुट्टिया वह टयूशन करके आग की पढाई का खर्चा जुटान म बिताएगा। उसकी दढता पर बाबूजी खुश हुए थे। रत्ती को और चाहे कुछ न मिला तो, एक योग्य समझदार पति तो मिला था।

आधा जून बीत चुका था। एक सुबह तारवाले की घटी बजी। तार बाबूजी के नाम था, रत्ती के जेठ का। रत्ती का पति बीमार था। रत्ती के साथ बाबूजी को भी लगा शायद रत्ती का बुलान के लिए कोई जाल रचा गया था। तार के जवाब म बाबूजी अकेले गए। बाबूजी

के रवाना हाने के तीसरे दिन एक तार और आया मा के नाम, बाबूजी का भेजा हुआ रत्ती का पति चल बसा था।

घर मे रोना पीटना मच गया। पडोस की सभी औरतें मातम मे शामिल हुइ। मगल कार्यों मे फिरकी की तरह नाचन वाली वकीलिन चाची की छोटी बहू हाथ भर का घूघट निकाले रत्ती के ठीक पीछे बैठी थी, जैसे छाती पीटती रत्ती को फौरन अपने सीने पर सभाल लेगी। छाती पीट पीटकर बेहाश होती मा को भाभी सभाले हुए थी न जाने किसने रत्ती के हाथो की चूडिया तोड दी न जाने किसने उसकी माग का सिंदूर पोछ दिया। रत्ती की पथराई आखो मे कोई पहचान नही थी। उसका सफेद पड गया चेहरा वहा जमा हुई औरतो म से किसीका भी हो सकता था

सप्ताह भर बाद बाबूजी वापस आए। इन्ना खबर पाकर पहले ही आ गई थी। बाबूजी के आने पर पता चला रत्ती के पति को लू लग गई थी। दो दिन तेज बुखार मे पडा रहा रत्ती से मिलना चाहता था तभी तार दिया गया। बाबूजी जिस दिन पहुचे उसकी पिछली रात ही सब कुछ खत्म हो गया था।

तरही पूरी करके रत्ती का जेठ आया। रत्ती पर कोई दौरा पडता इससे पहले ही बाबूजी न अपनी बेटी भेजन से इनकार कर दिया। उन्होने साफ-साफ कह दिया, अपनी बेटी का वह ट्रेनिंग दिलवाएगे ताकि वह अपने परा पर खडी हा सके। गाव मे पहले एक स्कूल खुलवाएगे, तब भेजने की बात साची जाएगी। जेठ चुपचाप वापस चला गया।

बाबूजी न अपना वचन पूरा कर दिया। रत्ती नौ महीने की बेसिक ट्रेनिंग पास कर चुकी है। देश जाग्रत हो रही है। लडकियो की शिक्षा पर जोर दिया जान लगा है। रत्ती जिस दिन जाने की बात कबूल कर लेगी उसके महीने भर के अन्दर ही बाबूजी लडकिया का एक स्कूल खुलवा देंग। मा बाप ज म के साथी होते हैं कम का भाग तो खुद ही भोगना पडता है।

रत्ती अपने कर्मो का लेखा जोखा करती है। वह जानती है बाप के

घर बेटी का निर्वाह नही हो सकता। बाबूजी ने उसके लिए जो कुछ किया है उस कर्ज से मुक्ति का एक ही रास्ता है कि वह अपनी ससुराल चली जाए, उनके खुलवाए हुए स्कूल मे नौकरी करे। कुछ दिनो बाद हेड मास्टरनी भी बन सकती है। एक रोटी-कपडे की तगी उसे नही होगी। रत्ती की जरूरत अब इससे ज्यादा है भी क्या ?

लेकिन रत्ती एक दूसरा ही अहद लिए बैठी रही। मा न कभी बाबूजी की बात मानी, कभी ममता की चोट खाकर रत्ती के पक्ष मे आइ। नतीजा निकला दोनो के बीच होने वाले दिन रात के झगडे। कई महीने मा बाबूजी के बीच गेंद की तरह उछाली जाने के बाद रत्ती एक नतीजे पर पहुची। एक दिन मा से मुह खोलकर कहा, 'कुछ दिनो के लिए मुझे इग्रा के पास भेज दो मा, फिर तुम लोग जो कहोगे मान लूगी।' बाबूजी ने दो महीने की अवधि तय कर दी और रत्ती एक बार फिर इग्रा के आचल म डाल दी गई।

दो महीने की तलवार सिर पर लटकते रहने के बावजूद उससे इग्रा के सुझाए सभी कमकाड अपना लिए। लोग कहते हैं समय की रफ्तार हमेशा एक जैसी होती है रत्ती के दिन हवा के पख पर उडे जा रहे हैं।

अगले पखवाडे श्यामा बुआ का ब्याह है रोज शाम ब्याह के गीता की झनकार वह सुनती है। प्रभाती सभौती गाने इग्रा रोज बुलाई जाती हैं। रत्ती अपनी अशुभ परछाईं लिए अधेरे घर म पडी रहती है। कभी-कभी बाबा वाले कमरे की चौखट पर आकर बैठ जाती है। इग्रा कहती हैं, बाबा के जमाने मे कभी एक नागदेवता यहा आते थे। हर नागपचमी को बाबा उनके लिए कटोरा भर दूध रखवाते थ। सुबह कटोरा खाली मिलता था रत्ती ने कितनी गोहारे की हैं कि नाग देवता सिर्फ एक बार वहा और आ जाए रत्ती अपनी लुटी हुई दुनिया उन्हे सौंपकर मुक्त हो जाएगी। लेकिन इस तरह की गोहारें आज तक किसी देवी देवता ने सुनी हैं ?

उस दिन श्यामा बुआ के घर से सभौती गाकर इग्रा आ रही थी। रास्ते मे बिच्छू डक मार गया। बिच्छू का जहर इग्रा को बहुत चढता

है, वही रास्ते मे हाय हाय करके छटपटाने लगी। चौबेजी के यहा से पगार लेकर अजोरिया घर जा रही थी। गठरी वही पटककर उसन इम्रा को समेट लिया। भारी बोझ उठाने वाली अजोरिया की सशक्त बाहो मे फूल सी सिमट इम्रा घर आइ। हाय हाय करती इम्रा को उसने बिस्तर पर डाल दिया। आलू पीसकर इम्रा के पर पर छापने की हिदायत देकर अजोरिया मत्र फूकने वाले को बुलाने चली गई। पहले उसने पगार की गठरी घर पहुचाई फिर बिच्छू का जहर झाडने वाले को लेकर वापस आ गई। मत्र पढकर जहर उतारने वाला झाड फूककर चला गया। अजोरिया रात भर रत्ती के साथ इम्रा की सेवा म लगी रही। दद की नीम बेहोशी म इम्रा जात पात का भेद भाव भूल बैठी थी। अजोरिया की सलाह पर रत्ती ने इम्रा का सदूक खोल भाग की पोटली निकाली। थोडी सी भाग पीसकर दूध के शबत म इम्रा का पिला दी गई। भोर की सुनगुन होते होते इम्रा की आखे तडप तडपकर झप गइ।

अजोरिया जब जाने लगी तो रत्ती उसके पीछे पीछे दरवाजे तक गई। चौखट पार करती अजोरिया का हाथ उसन थाम लिया। अजोरिया ने पलटकर रत्ती की आखो मे देखा

अब की गाव आने के बाद रत्ती की आखे अजोरिया से पहले भी कई बार मिली थी। कोइरिया के इनार की सीढियो पर गुमसुम बठी रत्ती के पास अपनी हसिया दराती फेंककर अजोरिया कई बार बैठी थी। कई बार रत्ती ने कोइरिया के इनार का ठडा मीठा पानी अजोरिया की अजुरी मे उडेला था इधर उधर की बातो के बीच कई बार अजोरिया की अथपूण निगाह रत्ती की आखो पर टिकी थी। उस निगाह का आश्वासन रत्ती न पहचाना भी था रत्ती की हालत कौन नही जानता था और अजोरिया ? गाव के किस हाडी म क्या पक रहा है, इसकी खबर भी उसके पास रहती थी। एक मान सम्मान की जिन्दगी उस न मिली हो, उसके सीन मे एक औरत का दिल तो था।

दोनो की आखें एक दूसरे पर टिकी, एक दूसरे का समझनी तोलती रही। कानो मे मा के जबदस्ती पहनाए गए बुन्दे उतारकर रत्ती न अजोरिया की मुटठी म दबा दिए, 'ना मत करना बुआ,' गाव के नात

अजोरिया था रत्ती इसी सम्बोधन से बुलाती थी, 'वरना महतिन की तरह मैं भी एक दिन ।' आवाज इसके बाद रुध गई। रत्ती के कापते ठडे हाथ में पसीने की नमी अजोरिया ने महसूस कर ली। सुबह के झुट-पुटे म भी अजोरिया की झिलमिल आखें रत्ती के सामने मुखर हो उठी ' श्याम बुआ की बारात जिस शाम आए' किसी तरह रत्ती न अपनी बात पूरी की, 'उस शाम मुझे स्टेशन तक छोड देना।'

अजोरिया चौखट के अन्दर आ गई। दोना आमने सामने खडी रही। दोनों की आखा म उफनता हुआ समन्दर था जो कभी अपनी मर्यादा नही तोडता।

अजोरिया चली गई तो रत्ती इआ के पास वापस आ गई। इआ बम्बर सा रही थी। बरसा बाद बडे हल्के मन स उसन झाडू उठाई और रोज की तरह घर के काम काज म लग गई।

12

श्यामा बुआ की बारात वाले दिन हमेशा की तरह गाव म बडी चहल पहल थी। छोटे बच्चे लाल पीले कपडे पहन सुबह से ही इधर उधर मचलत फिर रहे थे, जवान लडकिया अपने साज शृगार म लगी थी। बडे लोगा ने अपनी अपनी जिम्मेदारिया सभाल ली थी। इआ के जिम्म भण्डार था दोपहर स ही इआ वहा बध गई थी। विधि विधान में सारी रात बीतनी थी। भावरा के बाद बारातिया के पत्तल पडत फिर नात-रिश्तदारी के दूसर लोग खाते। करत धरते हर हालत में सुबह होनी थी।

रत्ती सिर-दद का बहाना लकर सुबह से ही लेट गई। न भी लेटती ता इआ जानती थी एसे मौका पर कही आना जाना उसे अच्छा नही लगता। कौन सारी जिन्दगी की बात थी कि जिद की जाए। बेचारी जितने दिन उनके कहन म है वही ठीक है कही, किसी मोड पर तो भगवान उसकी भी सुनेंगे। अन्दर से आगन की कुडी चढा बाड लगा लेने

की सलाह देकर इस्रा चली गई थी। पिछली शाम जब इस्रा सभौती गान गइ थी, अजोरिया न रत्ती से मिलकर सारी बात पक्की कर ली थी।

पल भर को रत्ती के दिमाग मे वह दिन आया जब वह किसीका सुहाग सिर पर ओढ दूसर के साथ भागने की तैयारी मे लगी थी। लेकिन इस बार वसा कुछ नही करना था। घर आगन की सफाई सुबह ही हो गई थी। भाइ बहन यहा थ नही जिनको कघी चोटी की जाए या जिनके मले कपडे घोए जाए। जेवर और कपडो का भी कोई सवाल नही था, न किसीको कुछ लिखना था। काना के बुदे वह पहले ही अजोरिया को दे चुकी थी। न हाथ मे चूडिया थी तोडकर नाली म बहाने के लिए न माग म सिंदूर था रगड रगडकर घोने के लिए। महीने म थी इसलिए *शाम का तुलसी चौरे पर दीया जलाने की जिम्मेदारी से भी बच गई।*

न भी होती तो पूजापाठ आखिर उसके किस काम आए थे। यह सोचना भी बेमानी था कि कहा जाएगी, क्या करेगी दिमाग मे सिफ एक बात प्रमुख थी कि आज रात वह हमेशा के लिए यह घर, यह गाव छोड देगी। इसमे सम्बधित सारे बन्धन तोडकर वह चली जाएगी।

फूलदी की मा को रेखा चाचा जब हरद्वार छोडकर चले आए तब क्या उन्हे मालूम रहा होगा कि कहा जाना है या क्या करना है भगवान ने उसे इस दुनिया मे भेजा है तो उसके लिए भी कुछ तय किया ही होगा

उसके पास ऐसा था ही क्या जिसके लिए कुछ होता और कुछ होता भी तो ऐसा क्या होता जो पहल नही हुआ था? अतिम परिणति यही होती कि उसे किसी कोठे पर बिठा दिया जाता या वह खुद जाकर बैठ जाती। रत्ती इसके लिए भी तयार थी। एक बार बस एक बार वह स्टेशन पहुचकर किसी भी गाडी म बैठ जाए इन ऊहापोहो के बावजूद रत्ती उस रात बहुत दिना बाद आराम से सोई।

दूसरे दिन की शुरुआत वडी ताजी हुई। किसी अनजान शहर म जाकर खुद को आयसमाज के सुपुर्द कर देन की बात दिमाग म आई। साथ ही आए आयसमाजी मुखौटा लगाए बाबूजी उनके आयसमाजी दोस्त जिनके यहा बाबूजी के साथ रत्ती बचपन मे सिफ इसलिए जाती थी क्योकि वहा किशमिश और काजू की पुडियाए मिला करती थीं

बड़े बड़े नामशुदा लोग रत्ती न यह विचार एकदम झटक दिया अब वह बालिग थी। कानून अगर फायदा नही तो नुकसान भी नही पहुंचा सकता था। देश की नई जागृति म अपने ढग से जीने का हक उसे हासिल था।

काम कोई भी बुरा नही होता। बडे शहरो म बच्चा की दख रेख के लिए नौकरानिया रखी जाती हैं उन्ह पढान लिखाने के लिए गवर्नेस की नौकरी भी मिल सकती है किसी स्कूल म पढान का काम नही मिला तो दाईगीरी तो मिल सकती है। शहर की नौकरीपशा औरतो को हमेशा एक वफादार नौकरानी की तलाश रहती है अजोरिया जसी औरतें भी तो इसी दुनिया मे हैं। हर हालत म रत्ती कोई न कोई रास्ता निकाल लेगी। इन्तज़ार था सिफ उस क्षण का जब वह बाल्टी डोर लेकर कोइरिया के इनार पर पहुचे। वहा से आग का इन्तजाम अजोरिया के हाथ मे था।

बाजा की नजदीक आती आवाज़ पच्छिम टोले से सुनाई पडने लगी तो रत्ती उठी। एक पल तुलसी चौरा के पास खडी रही फिर आगन के कोने से बाल्टी डोर उठाकर बाहर आ गई। आगन के दरवाज़े की कुडी बाहर से चढा दी और हमेशा की तरह धीरे धीरे कोइरिया के इनार पर पहुची। शाम का झुटपुटा अधर म बदल चुका था। नीचे की सीढ़ियो के पास एक पोटली रखी थी बकाइन के पीछे स खच, खच मिट्टी खोदन की आवाज़ आ रही थी। रत्ती ने एक बाल्टी पानी भरा। हाथ मुह धोकर नीच की पोटली उठाकर खोली। पाच गजी मोटी धोती और एक मुसी हुई कुर्ती निकालकर उसने पानी का छिडकाव किया फिर चुपचाप कपडे बदल लिए। रत्ती के इकहरे जिस्म को ढापने के लिए कुर्ती ढीली थी और जिन्दगी मे पहली बार उसने साडी बिना पटीकोट के बाधी।

अजोरिया झपटकर आई। रत्ती के उतारे हुए कपडे ले जाकर उसने बकाइन के झाड के पीछे खोदे गए गडढे मे गाड दिए जहा ढकना आजी मन्त्र से मार मारकर बच्चे गाडती थी। ऊपर की मिट्टी पैरा स दबाकर उसने खुरपी वही छिपा दी। बाल्टी धीरे धीरे कुए मे डालकर रस्सी छोड दी। दोनो को तत्काल वहा से चल पडना था। रत्ती पल-भर को

पास खड़े कुली से माचिस मागकर उसने एक बीड़ी सुलगाई और लम्बे-लम्बे कश लेते हुए प्लेटफाम से बाहर हो गई। सुबह का उजाला अधेरे को पीने लगा था।

रत्ती अब रामपुर गाव के सभ्रा त ब्राह्मण परिवार की पढ़ी लिखी बेटी नही थी। पहचाने जाने का कोई डर उस नही था और उस समय उस डिब्बे मे जान पहचान का हो भी कौन सकता था! बलिया स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो रत्ती डिब्बे से नीचे उतरी। प्लेटफाम का चक्कर काटकर उसने जनाना डिब्बा ढूढ लिया। सूरज निकल आया था लेकिन सवारिया अभी भी पैर फलाए तनी थी। किसीके पैर मोड लेने के कारण किनारे की बची हुई जगह म रत्ती अपनी पोटली सभाले बैठ गई। उसका मन अजोरिया के गिद चक्कर काटने लगा।

अजोरिया ने आज जो उसके लिए किया उसकी सगी बहन भी कर सकती थी क्या !

चमरटोली मे पैदा हुई बाल विधवा अजोरिया किस देवी देवता से कम थी? कहानिया अपने अपने ढग से सभी कहत-सुनत हैं। रत्ती ने भी सुना था। अजोरिया के मा-बाप बचपन म ही मर गए थे। भाई-भौजाई ने पाला पोसा, ब्याह किया। बचपन मे कई बार ससुराल भी हो आई। उस साल चारो ओर महामारी फैली थी। जब अजोरिया का बालक पति भी बुखार मे तपने लगा तब वह अपनी जान लेकर भाई के पास भाग आई। प्लेग मे सारा गाव उजड गया। किशोरी बनने से पहले ही अजोरिया बेवा हो गई। घर म रोना पीटना मचा तब वह भाई की गोद मे बठी सबको फटी फटी आखो स देखती रही। समय बीता किशोरी बनकर अजोरिया जवान होने लगी। उसके रूप में निखार आया। भाई ने दूसरी शादी की बात की तो अजोरिया ने भाई के पाव पकड लिए, 'भइया, काटकर फेंक दो, कहो तो नदी पोखर में डूब जाऊ मगर ब्याह की बात मत करो' अजोरिया की गुहार म जरूर कुछ रहा होगा, भाई ने दुबारा ब्याह का जिक्र नहीं किया। मर्द के बराबर काम करने वाली अजोरिया भाई का दाहिना हाथ बन गई।

इन्तज़ार करना पड़ा। गाड़ी जब आई तो एक अनुभवी मुसाफिर की तरह जनाना डिब्बा ढूंढकर वह चढ़ गई। बचे हुए पैसों के साथ दिल्ली का टिकट उसने आंचल के खूंट से बंधा था जिसे उसने कमर में खोंस लिया था। इत्तफाक ही था, एक ऊपर की सामान रखने वाली सीट खाली मिल गई। रत्ती ने खुद को उस सीट पर निढाल छोड़ दिया।

गाड़ी कितनी देर रुकी कब चली कब उसने अपनी रफ्तार पकड़ी कितने स्टेशन रास्ते में आए कहां कितनी देर गाड़ी रुकी कितने स्टेशन उसने यूं ही पार कर लिए रत्ती नहीं जानती थकान और मुक्ति के सम्मिलित भाव उसपर हावी हो चुके थे। नींद ने उसे अपने आगोश में समेट लिया था।

चलते डिब्बों में अमूमन टिकट नहीं देखे जाते। तब लेडी टिकट-चेकर होती भी कहां थी इक्के दुक्के बड़े स्टेशनों पर होती भी थी तो जब गाड़ी रुकती चेकिंग हो जाती कितनों ही जनानी सवारियों के टिकट तो उनके मर्दों के पास होते इसी आड़ में कितनी जनानी सवारियां बग़ैर टिकट सफर करतीं कभी पकड़ी जातीं तो ले देकर उनके लिए नये टिकट बन जाते। पैसे न होते तो दांत निपोर देतीं, जहां उतार दिया जाता उतर जातीं फिर दूसरी गाड़ी पकड़तीं औरतों के साथ इतनी सख्ती कहां बरती जाती है!

कन्धों पर हुए ठुक ठुक से रत्ती नींद की सरसब्ज़ दुनिया से गाड़ी की ऊपरी लकड़ी की सख्त सीट पर आ गई। हड़बड़ाकर उठने की कोशिश में सिर ऊपर की छत से टकराया गाड़ी रुकी हुई थी। पान बीड़ी सिगरेट वालों की आवाज़ मुखर हो रही थी। सामने की नीचे वाली सीट पर बैठी एक बेगम साहिबा खिड़की उठाकर पीक बाहर फेंक रही थी। कोयलों की हल्की कालिमा सफेद वर्दी पर समेटे, काली-सफेद टोपी की निकली हुई नोक माथे पर झुकाए पंचिंग मशीन हाथ में लिए टिकट चेकर दोनों सीटों के बीच रखे हुए सामानों के बीच खड़ा था उनींदी रत्ती ने आंचल की गांठ खोली, टिकट के साथ गिरते हुए रुपयों को सम्भालते हुए *उसने टिकट आगे कर दिया। टिकट को उलट-पलट-*कर देखते हुए चेकर ने टिकट पंच किया। रत्ती के बढ़े हुए हाथ पर

टिकट रखते हुए उसकी निगाह ऊपर उठी।

'कौन-सा स्टेशन है चकर साहब ?' सवाल बगम साहिबा ने किया था।

'टडला।'

रत्ती को बिजली का तार छू गया। उनीदी आखे फट पडने को हुइ, दिल हजार गुना तेजी से शरीर का पजर तोडकर बाहर आ गया।

चेकर चला गया। अन्तिम सीटी देकर गाडी ने स्टेशन छोड दिया। चेकर का वापस किया हुआ टिकट आचल की खुली हुई गाठ पर थामे रत्ती बुत बन गई। तूफान की गति स भागते मन म विचारो की शृखला उसी गति स टूटने-जुडन लगी। दिल्ली जाना रत्ती के लिए खतरनाक था कटी हुई जिन्दगी का कोइ सिलसिला जोडने के लिए उसका मन तैयार नही था।

मन मे एक बात आकर रुकी रत्ती अब रत्ती नही एक नीची जाति की औरत है, उसका नाम सोमा है, रोजगार की तलाश मे वह दिल्ली जा रही है। कभी कभी चेहरे भी धोखा दे जाते हैं। यह नकाब उस उतारनी नही, इसीके सहारे वह आग की जिन्दगी अपन ढग से जिएगी

इस बात से उसे राहत मिली। वह अपना मन पक्का करन लगी। दिल्ली स्टशन पर जल्दी से उतरकर वह प्लेटफाम पार कर जाएगी। बडे शहरो की भीड भाड मे कौन किसको पहचानता है!

लकडी की नगी पटरी पर गदन झुकाए बैठे-बैठे जब उसका सिर दुखन लगा तब उसने रुपयो पर रखे हुए टिकट की गाठ बाध ली और लेटकर लकडी की दीवार से चेहरा सटा दिया। किन्ही आखो की मूक सवेदना आकार ग्रहण कर उसकी आखो की कोरो से टपकने लगी गाडी अपनी रफ्तार पर आ चुकी थी।

फासला तय होता रहा, लोग चढते उतरते रहे रत्ती निढाल पडी अपने एक एक पोर की ताकत बटोरती रही। जमुना का पुल पार हो गया तो इधर उधर देखकर वह नीच उतरी। रोजाना की सवारियो स डिब्बा भर गया था हाथ मे खान का डिब्बा दो चार किताबें फाइलें लेकर लडकिया खडी होन लगी रत्ती ने अजोरिया की दी हुई पोटली

इंतज़ार करना पडा। गाडी जब आई तो एक अनुभवी मुसाफिर की तरह जनाना डिब्बा ढूंढकर वह चढ गई। बचे हुए पैसो क साथ दिल्ली का टिकट उसके आचल मे खूटे स बधा था जिस उसने कमर म गोस लिया था। इत्तफाक ही था, एक ऊपर की सामान रखने वाली सीट खाली मिल गई। रत्ती न खुद को उस सीट पर निढाल छोड दिया।

गाडी कितनी दर रुकी कब चली कब उसन अपनी रफ्तार पकडी कितने स्टेशन रास्त म आए वहा कितनी देर गाडी रुकी कितने स्टेशन उसन यू ही पार कर लिए रत्ती नही जानती थकान और मुक्ति के सम्मिलित भाव उसपर हावी हो चुके थे। नीद न उस अपने आगोश म समेट लिया था।

चलत डिब्बो म अमूमन टिकट नही देख जात। तब लडी टिकट चेकर होती भी कहा थी इक्के दुक्के बडे स्टेशना पर होती भी थी ता जब गाडी रुकती चेकिंग हो जाती कितनी ही जनानी सवारिया के टिकट तो उनके मर्दों के पास हात इसी आड म कितनी जनानी सवारिया बगैर टिकट सफर करती कभी पकडी जाती तो ले दकर उनके लिए नये टिकट बन जाते। पैसे न होते ता दात निपोर देतीं जहा उतार दिया जाता उतर जाती फिर दूसरी गाडी पकडती औरतो के साथ इतनी सख्ती कहा बरती जाती है!

कधो पर हुए ठुक-ठुक से रत्ती नीद की सरसब्ज दुनिया स गाडी की ऊपरी लकडी की सख्त सीट पर आ गई। हडबडाकर उठने की कोशिश म सिर ऊपर की छत स टकराया गाडी रुकी हुई थी। पान बीडी सिगरेट वालो की आवाज मुखर हो रही थी। सामन की नीचे वाली सीट पर बैठी एक बेगम साहिबा खिडकी उठाकर पीक बाहर फेंक रही थी। कोयलो की हल्की कालिमा सफद वर्दी पर समटे, काली सफेद टोपी की निकली हुई नोक माथे पर झुकाए पचिंग मशीन हाथ मे लिए टिकट चेकर दोनो सीटा के बीच रखे हुए सामाना के बीच खडा था उनीदी रत्ती ने आचल की गाठ खोली, टिकट के साथ गिरत हुए रुपयो को सभालते हुए उसने टिकट आगे कर दिया। टिकट को उलट-पलट कर देखते हुए चेकर ने टिकट पच किया। रत्ती के बढे हुए हाथ पर